अद्भुत योगी गोरखनाथ कथा काव्य

सनातन पौराणिक कथाओं पर आधारित

(भावार्थ सहित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

अद्भुत योगी गोरखनाथ कथा काव्य

सनातन पौराणिक कथाओं पर आधारित

(भावार्थ सहित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

३५मायना रिट्रीट, हिलरीज़, वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

वेबसाइट: https://shriramkatha.org

ईमेल: srkperth@outlook.com

ADBHUT YOGI GORAKHNATH KATHA KAVYA
(HINDI)

ISBN: 978-1-7648041-0-3

Author / All rights Reserved

© Author: Dr. Yatendra Sharma

1st Edition: June 2026

E-Book

Published by: Shri Ram Katha Sansthan

35 Mayena Retreat, Hillarys
W.A. 6025, AUSTRALIA
Telephone: +61 8 94011543
Email: srkperth@outlook.com

क्रमांक

समर्पण.. 6
अस्वीकरण..7
प्रार्थना 8
योगी गोरखनाथ वंदना...10
मत्स्येन्द्रनाथ - गुरु...12
गुरु मत्स्येन्द्रनाथ कथा..13
गोरखनाथ जन्म..19
शिष्य गोरखनाथ परीक्षा... 25
नरसिंह भगवान् का वरदान 32
नवनारायण करभञ्जननाथ (गहिनीनाथ) का जन्म.................................. 37
बद्रिकाश्रम में साधना 44
कानिफनाथ का चमत्कार 46
गोरखनाथ का तिरिया राज्य प्रस्थान..51
श्री राम और हनुमान जी से मिलन.. 57
जागो मछिन्द्रनाथ 68
मछिन्द्रनाथ से पुनर्मिलन... 72
मीननाथ का मरण और पुनर्जीवन 77
तिरिया राज्य से गुरु शिष्य गमन...81
द्रव्य वितरण... 83
सम्राट भर्तृहरि मिलन 89
चौरंगीनाथ का गहन तप 100
चौरंगीनाथ का चमत्कार.. 107
अड़भंगनाथ...110
सम्राट धर्मनाथ 117
दूरङ्गनाथ का प्रायश्चित...124
अजपानाथ से मिलन.. 130
असहाय का सौभाग्य 132
ज्वालादेवी की कृपा...136
कुछ अन्य महत्वपूर्ण घटनाएं 140
श्री राम कथा संस्थान उद्देश्य... 148
कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा 149

समर्पण

परम आदरणीय संत शिरोमणि महंत योगी श्री आदित्यनाथ जी महाराज मुख्यमंत्री (उ.प्र.), गोरक्षपीठाधीश्वर, गोरक्षपीठ, सदस्य (विधान सभा, उ.प्र.), पूर्व सांसद (लोक सभा) गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

करें नमन हम अति पूज्य महंत श्री योगी जी महन ।
हैं संत अनुगामी योगी गोरखनाथ स्वरुप भगवन ।।
हैं आप निःसंदेह आर्यपुरुष सद्गुरु विचक्षन ।
करो स्वीकार हमारा संत महत आप शत शत नमन ।।
प्राज्ञ तत्व आत्म स्वामी महंत महाराज अति पावन ।
धनी अतुलनीय वाक् पटुता और भाषा नियोजन ।।
धन्य धन्य हो जाते सुभग हम जब हों आपके दर्शन ।
करो स्वीकार आभार भक्तमय हमारा संतजन ।।
हम अभग लौकिक भूजन पड़े हुए भव सागर बंधन ।
आए शरण आपकी सम अर्जुन श्री कृष्ण भगवन ।।
हैं हम लिप्त त्रिगुण करो हमारा मार्ग दर्शन ।
हो सकें रहित अघ पा सकें हम मुक्ति जन्म-मरन ।।
करें हम चरण स्पर्श सहित यह भक्ति अभिनन्दन ।
हो मंगल सदा पड़ें जहां आपके चरण अति पावन ।।

अस्वीकरण

इस काव्य पुस्तक की सामग्री जनहित एवं सामान्य ज्ञान के लिए प्रदान की गई है। हमारा तद्भाव पाठक को कोई परामर्श देने का नहीं है। इस काव्य पुस्तक की सामग्री किसी भी तरह से विशिष्ट परामर्श का विकल्प नहीं है। आपको इस ज्ञान के आधार पर कोई भी निर्णय लेने से पहले प्रासंगिक निपुण या विशेषज्ञ का परामर्श प्राप्त कर लेना चाहिए।

इस काव्य पुस्तक के रचयिता, प्रकाशक और उनका कोई प्रतिनिधि किसी भी विषय में इस काव्य पुस्तक से सम्बंधित कोई प्रत्याभूति नहीं लेते। इस काव्य पुस्तक का पठन-पाठन-गायन-श्रवण पाठक स्वयं के संज्ञान से दायित्व ले कर ही करें।

यद्यपि हमने इस काव्य पुस्तक में सटीक ज्ञान देने का पूर्ण प्रयास किया है लेकिन किसी भी प्रकार कोई त्रुटि अथवा अकृता रह गई हो तो उसके लिए रचयिता एवं प्रकाशक क्षमा प्रार्थी हैं और इसके परिणाम स्वरूप किसी विधि, सामाजिक, धार्मिक, इत्यादि का दायित्व नहीं लेते।

प्रार्थना

नाथ पंथ में योगी गोरखनाथ एक अत्यंत प्रसिद्ध संत हैं। उन्होंने योग साधना के सिद्धांतों पर आधारित एक सुसंगठित धार्मिक नाथ पंथ का प्रचार किया। वह जीवन मरण के बंधन से परे दुःखी, दुर्बल एवं अज्ञानी प्राणियों के उद्धार के लिए अवतरित हुए। प्रोफेसर ब्रिग्स अपनी पुस्तक, 'गोरखनाथ और कनफटा योगी' में लिखते हैं कि मध्य युग में गोरखनाथ एक महान योगी और आश्चर्यजनक कृत्यों के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। असंख्य भावों की जन-श्रुतियों और गीतों में उनका और उनके अनुयायियों का गान हुआ है। नेपाल से राजपूताना, पंजाब से बंगाल तथा सिंध से दक्षिण तक जन-श्रुतियाँ और लोक-वार्ताएं गोरखनाथ के अद्भुत कृत्यों की ओर संकेत करती हैं। वह प्रसिद्ध और चमत्कारी व्यक्ति थे। वह हठ योग की साधना करने वाले शैव योगियों के जिनको सामान्यतः कनफटा योगी भी कहा जाता है, शिक्षक और प्रवर्त्तक थे। वह नेपाल देश के गोरखा शासकों के आश्रयदाता और संरक्षक संत थे। उनके अनुयायी उन्हें शिव का प्रतिनिधि मानकर उनका पूजन करते हैं।

गोरखनाथ के बारे में कहा जाता है कि आदिगुरु शंकराचार्य के पश्चात शैव्य पंथ में वही एक अत्यंत प्रभावशाली धार्मिक शिक्षक अवतरित हुए हैं जिन्होंने भारतवर्ष के सभी प्रांतों एवं समीपवर्ती देशों के सभी वर्गों के प्राणियों की विचारधारा और उनकी कल्पना शक्ति को साधना एवं चिंतन से प्रभावित किया। उन्होंने स्वयं एवं अपने शिष्यों के माध्यम से नाथ पंथ योगियों का एक ऐसा सम्प्रदाय संगठित किया जिसकी शाखाएं, प्रशाखाएं भारत जैसे विशाल देश एवं समीपवर्ती देशों के कोने कोने में फैलीं। उन्होंने तीर्थाटन करते हुए विश्व में गुरु के शब्दों का आध्यात्मिक और चमत्कारिक रूप दिखाया। उस भक्ति काल युग में जहां चैतन्य महाप्रभु, गुरु नानक, स्वामी रामानंदाचार्य, संत तुकाराम, समर्थ स्वामी रामदास आदि संत महात्मा भक्ति का प्रभाव जन मानस को दिखा रहे थे वहां योगी गोरखनाथ ने आध्यात्मिक अनुशासन की सहज क्रियाओं को जन मानस तक पहुंचाया।

श्रुति कहती है कि काव्य के माध्यम से संतों का महामण्डन करने से जो तरंगे वातावरण में उत्पन्न होती हैं, वह भक्त के हृदय को प्रभु के हृदय से जोड़ देतीं हैं। इस काव्य में कवि ने महात्मा संत योगी गोरखनाथ का चरित्र चित्रण करने का प्रयास किया है। इस काव्य के पठन और श्रवण से महात्मा गोरखनाथ एवं महादेव का

आशीर्वाद अवश्य प्राप्त होगा। स्वयं प्रभु ने कहा है कि जो भी मेरे भक्तों की कथा का पठन, श्रवण, मनन करेगा, मैं उस पर विशेष कृपा करूंगा। उसे इहलोक में सुख, शांति, ऐश्वर्य, धन-धान्य एवं मरण उपरान्त साकेत धाम में निवास मिलेगा।

योगी मत्स्येन्द्रनाथ, योगी गोरखनाथ एवं महादेव से आप सब के स्वास्थ्य, ऐश्वर्य, धन-धान्य, यश, ईश-प्रेम एवं प्रभु कृपा की कामना करते हुए, प्रभु के चरणों में आपका अपना,

डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान

कार्यालय: ३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
वेबसाइट (Website): https://shriramkatha.org
ई-मेल (Email): srkperth@outlook.com
WhatsApp: +61 410 641543

योगी गोरखनाथ वंदना

हे अवतार शिव शंकर महन । करो स्वीकार मेरा नमन ।।
योग शैव तंत्र प्रचारक । हेतु हठयोग करें अलेपक ।।
किए मनन आपका जो भूजन । पाए परमांनद वह सुभगजन ।।
करें जब जन आपका पूजन । हों दूर कष्ट पाएं सुख अमन ।।
हे योगी सिद्ध सगुण ब्रह्म । हैं आप सर्वज्ञ परमात्म ।।
एक बार रावल राजनंदन । हेतु मृगया घूम रहे वन ।।
देखा आपको लीन तप मनन । किए वह आपके चरण वंदन ।।
दिए आप खड्ग उन्हें उपहार । था यह वर चित्तोड़ आधार ।।
हेतु प्रसाद फल आपके कर । हुईं गर्भवती गोगा मातर ।।
हुए अवतरित तब जाहर वीर । ईश सर्प पूजित महापीर ।।
मिले आपसे स्वयं हनुमंत । हैं आप स्वयं अत्यंत बलवंत ।।
करें जाप हम मंत्र क्रमः । ॐ गोरखनाथाय नमो नमः ।।
दो वर हे शिव स्वरुप भगवन । हो सफल प्रयास यह लेखन ।।

भावार्थ: हे शिव शंकर के अवतार महात्मा, हमारा नमन स्वीकार करें। आप योग और शैव तंत्र के प्रचारक हैं। हठयोग से (प्राणियों को) पवित्र करते हैं। जो भी प्राणी आपका ध्यान करता है, उस सौभाग्यशाली को परमानंद की प्राप्ति होती हैं। जो प्राणी आपका पूजन करता है, उसके कष्ट दूर होते हैं और वह सुख शान्ति प्राप्त करता है। हे सिद्ध योगी सगुण ब्रह्म, आप सर्वव्यापी परमात्मा हैं। एक बार राजकुमार रावल आखेट हेतु वन में घूम रहे थे। आपको वहां तपस्या में लीन देख उन्होंने आपकी चरण वन्दना की। आपने उन्हें तलवार भेंट में दी, जो उपहार चित्तोड़ का आधार बना। आपके हाथों से फल का प्रसाद पाकर गोगा (जी) की माता गर्भवती हुईं। तब वह जाहर वीर के रूप में अवतरित हुए। वह सर्पों के देवता अत्यंत पूजित पीर (मुसलमानों के भी संत) हैं। आपसे मिलने स्वयं हनुमान जी आए। आप स्वयं अत्यंत बलशाली हैं। हम आपके मूल महामन्त्र का जप करते हैं, 'ॐ गोरखनाथाय नमो नमः'। हे भगवान् शिव के स्वरुप, हमें वरदान दीजिए कि इस लेखन कार्य में हम सफल हों।

मत्स्येन्द्रनाथ - गुरु

हे आदिगुरु पंथ नाथ महत । करें हम आपको नमन शत ।।
पुरस्कर्ता हठ योग महान । रुप स्वयं महादेव भगवान् ।।
गुरुदेव योगी गोरखनाथ । त्रिकालदर्शी मत्स्येन्द्रनाथ ।।
सृजक वज्रयान पारम्परिक । करे जाग्रत ज्ञान आत्मिक ।।
हैं समान पद्मान्तक भैरव । रुप अचल गुरु पूजें सर्व ।।
जय जय जय मत्स्येन्द्रनाथ । करो मंगल जन अग्र नाथ ।।

भावार्थ: हे नाथ पंथ के आदिगुरु महात्मा, हम आपको शत नमन करते हैं। महान हठ योग के प्रयोजक, महादेव भगवान् के स्वरुप, योगी गोरखनाथ के गुरुदेव, त्रिकालदर्शी मत्स्येन्द्रनाथ, आप पारम्परिक वज्रयान के सृजक हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान को जाग्रत करता है। आप पद्मान्तक भैरव के समान अचल गुरु के रूप में सब से पूजित हैं। मत्स्येन्द्रनाथ आपकी जय हो, जय हो, जय हो। हे आदिनाथ, सभी प्राणियों का कल्याण करें।

गुरु मत्स्येन्द्रनाथ कथा

है यह श्रीमदभागवत कथन । सुत हरि वृषभ नौ नारायन ।।
कवि हरि अंतरिक्ष प्रबुद्ध । पिप्लायन आविर्होत्रबुद्ध ।। (१)
द्रुमिल चमस और करभाजन । हैं योगेश्वर रूप भगवन ।।
लें समय समय पर पुनर्जनन । करने उद्धार दुःखित भूजन ।। (२)
मत्स्येन्द्रनाथ जी संत महन । हैं अवतार श्री कवि भगवन ।।
मत्स्य रूप में लिए अवतार । मत्स्येन्द्रनाथ जी इस संसार ।। (३)

भावार्थः श्रीमद्भागवत में ऐसा वर्णन है कि भगवान् वृषभ के पुत्र नौ नारायण - कवि, हरि, अंतरिक्ष, प्रबुद्ध, पिप्लायन, आविर्होत्रबुद्ध, द्रुमिल, चमस और करभाजन हैं। यह योगेश्वर रूप भगवान हैं। समय समय पर यह दुःखित प्राणियों का उद्धार करने के लिए पुनर्जन्म लेते हैं। महान संत मत्स्येन्द्रनाथ जी भगवान् श्री कवि के अवतार हैं। मत्स्येन्द्रनाथ जी ने इस संसार में मत्स्य रूप में अवतार लिया।

सातवीं शताब्दी था काल । था नरेन्द्रदेव शासनकाल ।।
था देश नेपाल स्थित स्थान । लिए जन्म मतस्येंद्र भगवान् ।। (४)
करते पुराण ऐसा वर्णन । थे बैठे कैलाश उमा जतिन ।।
पूछीं पार्वती हे भगवन । करें जप आप मन्त्र एक सनन ।। (५)
दें मुझे भी आप अवबोधन । हो सके जीवन मेरा पावन ।।
हो प्रसन्न बोले त्रिपरारी । पूछा प्रश्न उत्कृष्ट गौरी ।। (६)
दूँ ज्ञान तुम्हें यह पावन । पर है नितांत स्थान विजन ।।
ढूंढते स्थान एकांत दिव्य । पहुंचे तट यमुना वह अव्यय ।। (७)

भावार्थः सातवीं शताब्दी के समय जब नेपाल देश में सम्राट नरेन्द्रदेव का शासन था, तब मत्स्येन्द्र भगवान् ने जन्म किया। पुराण ऐसा वर्णन करते हैं कि उमा और शिव कैलाश (पर्वत) पर बैठे हुए थे। तब पार्वती ने एक प्रश्न पूछा , 'हे भगवन, आप निरंतर एक मन्त्र का जाप करते रहते हैं, मुझे भी उसका ज्ञान दीजिए ताकि मेरा जीवन भी पवित्र हो।' प्रसन्न होकर तब शिव शंकर बोले, 'हे गौरी, तुमने उत्तम प्रश्न पूछा है। मैं तुम्हें यह पवित्र ज्ञान दूंगा पर इसके लिए एकांत स्थान आवश्यक है।' तब दिव्य

एकांत स्थान ढूंढते हुए वह अव्यय (भगवान् शिव शंकर और माँ पार्वती अव्यय अर्थात अविकारी हैं) यमुना तट पर पहुंचे।

पा एकांत स्थान अति पावन । बैठे दोनों दिव्य एक आसन ।।
देने लगे ज्ञान शिव भगवन । करने लगीं जप उमा पावन ।। (८)
कर रही वहां एक मीन तरन । गर्भिन हेतु वीर्य पद्मतन ।।
सुन गर्भवत यह दिव्य वचन । हुआ वह शुद्ध ब्रह्म वर्पन् ।। (९)
समझ गया है चेतना भुवन । जो हैं स्वयं देव चतुरानन ।।
जब पूछे शंकर हे पार्वती । क्या समझीं आप तथ्य यह उक्ति ।। (१०)

भावार्थ: एक अत्यंत पवित्र स्थान पाकर दिनों दिव्य (उमा एवं शिव) एक आसन पर बैठ गए। भगवान् शिव शंकर ज्ञान देने लगे और उमा पवित्र जाप करने लगीं। वहां एक मछली तैर रही थी जो ब्रह्मदेव के वीर्य से गर्भवती थी। उस गर्भ में पुत्र दिव्य वचन सुन शुद्ध और ब्रह्म स्वरुप हो गया। वह समझ गया कि यह संसार एक चेतना है जो स्वयं ब्रह्मा हैं। जब शंकर भगवान् ने पार्वती से पूछा कि क्या वह इस तथ्य का महत्व समझ सकीं?

बोला सुत गर्भवत हे भगवन । है सब कुछ ब्रह्म त्रिभुवन ।।
सुन स्वर देखे उस ओर जतिन । समझे सुना शिशु वचन पावन ।। (११)
हुए तुम धन्य हे मछिन्द्रनाथ । सुन शुभ वचन तुम हुए सनाथ ।।
है तुम्हें मेरा आशीर्वचन । जाओ तुम दत्तात्रेय शरन ।। (१२)
बद्रिकाश्रम पश्चात जन्म । देंगे वह तुम्हें ज्ञान ब्रह्म ।।
दे इस प्रकार आशीर्वचन । लौटे कैलाश उमा जतिन ।। (१३)

भावार्थ: तब गर्भ से बालक बोला , 'हे भगवन, सब कुछ त्रिभुवन ब्रह्म है।' यह स्वर सुन शिव ने उस ओर देखा (जहां से यह स्वर आ रहा था) और समझ गए कि इस बालक ने पवित्र वचन सुन लिए हैं। (भगवान् शंकर बोले) 'हे मछिन्द्रनाथ, तुम धन्य हो। इन वचनों को सुन तुम शुद्ध और सनाथ हुए। मेरा आशीर्वाद है कि जन्म के पश्चात तुम बद्रिकाश्रम दत्तात्रेय (भगवान्) की शरण में जाओ। वह तुम्हें ब्रह्म ज्ञान देंगे। इस प्रकार आशीर्वाद देकर उमा और शिव कैलाश लौट गए।

स्थित मध्य गर्भ मीन-नंदन । करें वह निरंतर मन्त्र जपन ।।
उचित काल लिए जन्म महंत । छोड़ा तट नद मत्स्य महासंत ।। (१४)
करने लगे शिशु रूप रुदन । देखा कामिक धीवर नंदन ।।
हुई आकाशवाणी उस काल । कामिक करो पालन इस बाल ।। (१५)
था निःसंतान सुभग धीवर । धन्य दिए सुत मुझे परात्पर ।।
गया संग बाल स्व-निकेतन । रमणा हुई देख अति प्रसन्न ।। (१६)

भावार्थ: मत्स्य-पुत्र गर्भ के अंदर निरंतर मन्त्र का जाप करने लगा। उचित समय पर महंत (मत्स्येन्द्रनाथ) ने जन्म लिया। मत्स्य ने तब उन्हें नदी के तट पर छोड़ दिया। शिशु रूप (संत मत्स्येन्द्रनाथ) रुदन करने लगे। तब एक मछुहारे कामिक ने उन्हें देखा। उसी समय आकाशवाणी हुई, 'हे कामिक इस बालक का पालन करो।' सौभाग्यशाली धीवर निःसंतान था। उसने पुत्र देने हेतु प्रभु को धन्यवाद दिया। बालक के साथ तब वह अपने गृह आया। पत्नी (बालक को) देखकर अत्यंत प्रसन्न हुई।

करने लगे युगल बाल पालन । हुए जब वह पञ्च वर्ष के महन ।।
कर स्मरण शिव आशीर्वचन । कहे जनयित्र मृदुल वचन ।। (१७)
दो आज्ञा जाऊं बद्रिकावन । हेतु मिलन दत्तात्रेय भगवन ।।
करूँ मैं आदेश हरि पालन । पाऊँ ब्रह्मज्ञान हूँ पावन ।। (१८)
सुन वचन पुत्र हुए रुदित । न सह सकें विरह मात पित ।।
समझाए भली भांति जनयित्र । पा आज्ञा गए वन पवित्र ।। (१९)
बारह वर्ष किए घोर तपन । आए दत्तात्रेय संग जतिन ।।
धन्य धन्य तुम सुनो मछिन्दर । किया न ऐसा तप कोई नर ।। (२०)

भावार्थ: युगल (कामिक और उसकी पत्नी) बच्चे का पालन करने लगे। जब महात्मा (मत्स्येन्द्रनाथ) पांच वर्ष के हुए तब उन्हें भगवान् शिव के आशीर्वचनों की स्मृति हुई। अपने माता पिता से वह मृदुल वचन बोले, 'आप आज्ञा दें ताकि मैं बद्रिकावन दत्तात्रेय भगवान् से मिलने जाऊं। प्रभु के आदेश का पालन करूँ और ब्रह्मज्ञान पा पवित्र हूँ।' पुत्र के वचन सुन माता पिता रोने लगे। वह उनका विरह नहीं सह सकते थे। तब उन्होंने (मत्स्येन्द्रनाथ ने) माता पिता को भली भांति समझाया। उनकी आज्ञा पा तब वह पवित्र वन को गए। बारह वर्ष तक घोर तपस्या की। तब शिव के साथ दत्तात्रेय

वहां आए (और बोले), 'हे मछिन्दर (मछिन्द्रनाथ)तुम धन्य हो, धन्य हो। ऐसी तपस्या किसी प्राणी ने नहीं की।'

हूँ मैं ही पुत्र अनुसुइया।थी दत्तात्रेय हृदय दया।।
हूँ मैं अति प्रसन्न तुम पर।मांगो तुम कोई उचित वर।।(२१)
सुन हरि के अति मधुर वचन।पकड़े मत्स्येन्द्रनाथ चरन।।
लो प्रभु मुझे अपनी शरन।दो ब्रह्मज्ञान जो अति पावन।।(२२)
तथास्तु कहे तब भगवन।दिए ब्रह्मज्ञान जो कठिन।।
हुए प्रकट समक्ष तब जतिन।दिए वह अनेक आशीर्वचन।।(२३)

भावार्थ: हृदय में दया भाव से दत्तात्रेय बोले, 'मैं ही अनुसुइया का पुत्र (दत्तात्रेय) हूँ। मैं तुम पर अति प्रसन्न हूँ। कोई उचित वर मांगो।' भगवान् के यह मधुर वचन सुन (मत्स्येन्द्रनाथ ने) उनके चरण पकड़ लिए और कहा मुझे अपनी शरण में लीजिए और पवित्र ब्रह्मज्ञान दीजिए। भगवान् ने तथास्तु (ऐसा ही हो) कहा और दुर्लभ ब्रह्मज्ञान दिया। तभी शिव शंकर भी उनके समक्ष प्रकट हुए और अनेक आशीर्वाद दिए।

किए आवाहन शिव सभी सुर।आए सुन सब आदेश शंकर।।
दिए आदेश तब शिव शंकर।दो मत्स्येन्द्रनाथ उचित वर।।(२४)
हो प्रसन्न कह तथास्तु देव।कीं प्रदान सिद्धियां अतेव।।
दिए आदेश तब त्रिलोचन।करो स्थापना नाथ संगठन।।(२५)
दो शिक्षा उचित सब भूजन।हो जो साधन उनके मोचन।।
की हरि आज्ञा शिरोधार्य।किया गठन नाथ सम्प्रदाय।।(२६)

भावार्थ: तब भगवान् शिव ने सभी देवताओं का आवाहन किया। शिव जी का आदेश सुन सब आए। तब शिव जी ने आदेश दिया कि मत्स्येन्द्रनाथ को उचित वर दो। प्रसन्न हो सभी देवताओं ने तथास्तु (ऐसा ही हो) कहा और अनेक सिद्धियां प्रदान कीं। तब शिव जी ने उन्हें नाथ संगठन स्थापित करने का आदेश दिया जो प्राणियों को उचित शिक्षा दे, उनके मोक्ष का साधन बने। प्रभु की आज्ञा को शिरोधार्य कर तब उन्होंने नाथ सम्प्रदाय का गठन किया।

नाथ सम्प्रदाय है एक प्रत्न।हेतु गुरु शिष्य मध्य बंधन।।
देती शिक्षा यह स्व-शिष्यगन।गुरु महान अपि श्री भगवन।।(२७)
है आदिगुरु शिव शासन। न कोई उत्तम यथा गुरुजन।।
गुरु ही उपम गुरु महन।नहीं कोई अधिक अनुपपन्न।।(२८)
समझो यह शिव का प्रचोदन।करो निरंतर इसका पालन।।
है प्रभावित यह शैव्य मत।किए विस्तार वह योग हठ मत।।(२९)
हेतु रख सकें जन स्वस्थ्य तन।है यह क्रिया अति गरिमन्।।
किए रचना वह अनेक ग्रन्थन।किए पथ प्रदर्शन हेतु मोचन।।(३०)

भावार्थ: नाथ सम्प्रदाय एक परम्परा है जो गुरु और शिष्य के मध्य बंधन का हेतु है। आदिगुरु शिव का अनुसरण करते हुए यह अपने शिष्यों की शिक्षा देती है कि गुरु भगवान् से भी महान हैं। गुरु ही सबसे ऊंचे हैं, बड़े हैं, यह शिव का आदेश है, इसका पालन करो। यह (नाथ सम्प्रदाय) शैव्य मत से प्रभावित है। इन्होंने हठ योग का विकास किया जिससे प्राणी अपने शरीर को स्वस्थ्य रख सकें। यह क्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है। मोक्ष प्राप्ति के लिए मार्ग दर्शन हेतु उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की।

कौलज्ञाननिर्णय पावन।दे संचार तांत्रिक साधन।।
हेतु शाक्त साधना तंत्र।है कौल धारा मूल मन्त्र।।(३१)
हेतु सिद्धि अकुलवीरतंत्र।है उत्कृष्ट शिव शक्ति मन्त्र।।
कुलानन्द और ज्ञानकारिका।हैं अत्यंत उत्तम पुस्तिका।।(३२)

भावार्थ: पवित्र (पुस्तक) कौलज्ञाननिर्णय तांत्रिक साधना का संचार है।शाक्त साधना तंत्र के लिए कौल धारा मूल मन्त्र है। सिद्धि के लिए अकुलवीरतंत्र उत्कृष्ट शिव शक्ति मन्त्र है। कुलानन्द और ज्ञानकारिका अत्यंत उत्तम पुस्तकें हैं।

है एक बार का वृत्तान्त । कर रहे थे भ्रमण आर्यांत ।।
थे इच्छुक करें हिंगला पूजन । पर थीं रक्षित अष्ट भैरवन ।। (३३)
थे अनुभूत जाएं मंदिर अंदर । पर किए घात रक्षक उन पर ।।
हेतु मन्त्र तब एक पावन । किए सुदृढ़ समान लौह तन ।। (३४)
दी चुनौती भैरव रक्षक । हुए विफल सब उनके शस्त्रक ।।
हुईं प्रकट हिंगला माता । बोलीं करो नमन इन संता ।। (३५)
हो जाओ अभय हैं यह महन । करो सफल नयन हेतु दर्शन ।।
दीं माँ स्वस्ति और शस्त्र । स्पर्श-अस्त्र और भिन्न-अस्त्र ।। (३६)

भावार्थ: एक बार की घटना है जब वह भारतवर्ष का भ्रमण कर रहे थे। उनकी इच्छा हुई कि वह हिंगला माँ का पूजन करें, लेकिन वह अष्ट भैरव से रक्षित थीं। उन्होंने मंदिर में जाने का प्रयास किया परन्तु रक्षकों ने उन पर आक्रमण किया। तब एक पवित्र मन्त्र के माध्यम से उन्होंने अपने शरीर को लोहे के समान कठोर बना लिया। तब उन्होंने भैरवों को चुनौती दी। (भैरवों के) सब शस्त्र विफल हो गए। तब माता हिंगला प्रकट हुईं और बोलीं, 'इन संत को नमन करो। निडर हो जाओ। यह महात्मा हैं। इनके दर्शन से अपने नेत्र सफल करो।' तब माँ ने उन्हें वरदान और (दो) शस्त्र दिए, स्पर्श-अस्त्र और भिन्न-अस्त्र।

दी आज्ञा स्वप्न नेपाल नरेश । करो खोज एक वृक्ष विशेष ।।
करो निर्माण वहां एक मंदिर । पशुपतिनाथ का अति सुन्दर ।। (३७)
पड़ी नींव हेतु संस्थापन । विश्व प्रसिद्ध मंदिर जतिन ।।
है यह मंदिर अत्यंत पावन । होते पूर्ण भक्तों के मन्मन् ।। (३८)

भावार्थ: स्वप्न के माध्यम से (मत्स्येन्द्रनाथ ने) नेपाल नरेश को आज्ञा दी कि एक विशेष वृक्ष की खोज करो और वहां एक अति सुन्दर पशुपतिनाथ के मंदिर का निर्माण करो। इस प्रकार विश्व प्रसिद्ध शिव मंदिर के निर्माण की नींव रखी गई। यह मंदिर अत्यंत पवित्र है जो भक्तों की इच्छाओं को पूर्ण करता है।

गोरखनाथ जन्म

जपत मन्त्र नवनाथ शाबर । मत्स्येन्द्रनाथ स्वरुप शंकर ।।
करते हुए भ्रमण देश बंगाल । आए चंद्रगिरि एक काल ।। (३९)
था वहां एक ब्राह्मण परिवार । धार्मिक भगवद्भक्त उदार ।।
नाम ब्राह्मण सर्वोपदयाल । पत्नी सरस्वती अति कृपाल ।। (४०)
अभाग्य से थे वह निःसंतान । पकड़े चरण कृपानिधान ।।
दो प्रभु हमें आशीर्वचन । हों जनयित्र हम पुत्र महन ।। (४१)

भावार्थ: एक बार बंगाल देश में भ्रमण करते हुए, नवनाथ शाबर मन्त्र का उच्चारण करते हुए शिव स्वरुप मत्स्येन्द्रनाथ चंन्द्रगिरि (नामक स्थान) आए। वहां एक अति उदार भगवद्भक्त धार्मिक ब्राह्मण सर्वोपदयाल और उसकी दयालु पत्नी सरस्वती रहते थे। दुर्भाग्य से वह निःसंतान थे। उन्होंने कृपनिधान (मत्स्येन्द्रनाथ जी) के चरण पकड़ लिए और कहा कि प्रभु हमें एक महात्मा पुत्र के माता पिता बनने का आशीर्वाद दीजिए।

बोले कर दया कृपानिधान । निःसंदेह पाओ तुम संतान ।।
लो यह भस्म मन्त्रित पावन । करो मिश्र खीर हेतु ललन ।। (४२)
प्रदोष काल पश्चात मज्जन । करो इस मिश्रण का भक्षन ।।
होंगे पूर्ण तुम्हारे मन्मन् । पाओ संतान समान भगवन ।। (४३)
होगा वह सर्वगुण संपन्न । स्वामी अधिदैविक बलिमन् ।।
लौटूंगा बाद द्वादस वर्ष । करूँ तब उसका मार्ग दर्श ।। (४४)

भावार्थ: दया कर कृपानिधान बोले, 'निःसंदेह तुम्हें पुत्र की प्राप्ति होगी। हे देवी, यह मन्त्रित पवित्र भस्म लो और इसे खाने के लिए खीर में मिलाओ। प्रदोष समय में स्नान के पश्चात इस मिश्रण को खाओ। तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। तुम्हें प्रभु के समान पुत्र की प्राप्ति होगी। वह सर्वगुण सम्पन्न और अलौकिक शक्तियों का स्वामी होगा। मैं बारह वर्ष बाद लौटूंगा और उसका मार्ग दर्शन करूंगा।'

चले गए योगी कह सुवचन । रखी भस्म सरस्वती निरामयन ।।
किया अपराह्न हरि पूजन । आईं एक सखी हेतु मिलन ।। (४५)

कहीं सरस्वती मध्य जल्पन। दिए एक योगी भस्म पावन।।
पा सकूं एक पुत्र सम भगवन। करूं यदि मैं यह भस्म भक्षन।।(४६)

भावार्थ: योगी यह सुवचन कह चले गए। सरस्वती ने भस्म को सुरक्षित स्थान पर रख दिया। दोपहर को पूजन किया। तब उनसे मिलने एक सखी आईं। वार्तालाप के मध्य सरस्वती ने कहा कि एक योगी ने उनको पवित्र भस्म दी है जिसके खाने से उन्हें भगवान् समान पुत्र की प्राप्ति होगी।

बोली सखी सुन हे ललना। हुई पागल तू देखे सपना।।
न कर विश्वास ऐसे योगी। होगा अवश्य कोई ढोंगी।।(४७)
भस्म हो संभव हेतु सम्मोहन। हो उसकी तू छोड़ स्व-कुलन।।
या संभव हो युक्त विष भस्म। हो मरण हेतु इच्छा अमित्रम।।(४८)
कर विचार यह विषय गहन। न हो विनाश तेरा कुल पावन।।
जानूं बने अनगिनत यथागत। खोए धन-धान्य और यशमत।।(४९)
क्या अनुताप बाद अनहोनी। सम खाए खग खेत प्रवृद्धिनी।।
है मेरा यह सत्य अटल मत। छोड़ो संकल्प भक्षण अनधिगत।।(५०)

भावार्थ: सखी बोली, 'हे प्रिय, क्या तू पागल हो गई है? स्वप्न देख रही है? ऐसे योगी का विश्वास नहीं कर। कोई अवश्य ही ढोंगी होगा। भस्म देकर तुझे सम्मोहित करेगा ताकि तू अपना परिवार छोड़ उसकी हो जाए। या संभव है कि किसी शत्रु के कहने पर तुझे मारने के लिए उसमें विष मिला हो। इन विषयों पर गहन विचार कर। तेरे पवित्र परिवार का विनाश न हो। मैं जानती हूँ कि (इस प्रकार) अनगिनत लोग मूर्ख बने हैं। उन्होंने धन-धान्य और मान खोया है। अनहोनी होने के पश्चात क्या पछतावा? जैसे विकसित खेत को पक्षी खा जाएं (उसके पश्चात क्या पश्चाताप)? यह मेरा सत्य अटल विचार है कि इस अनजान (भस्म) को भक्षण करने का संकल्प छोड़ो।

करने लगी सरस्वती विचार। लगता संदिग्ध योगी आचार।।
संभव नहीं सहचरी अनृतिन्। थी पर योगी आभा आनन।।(५१)
नहीं वह दम्भक कहे मेरा मन। पर हो न असत्य सखी वचन।।
है यदि संशय अपि अल्प मन। उत्तम करूँ भस्म नहीं भक्षन।।(५२)

कर विचार वह फेंकी भस्म । खादकुंड बाह्य गांव पर्य्यन्तम् ।।
थी अभग वह नारी अत्यंत । नहीं दिए सुख पुत्र नियंत ।।(५३)
यदि नहीं था सुत सुख घनत्व । करती कैसे भक्षण भस्म दिव्य ।।
बीते शनैः शनैः वर्ष द्वादस । रहती दुःखी वह प्रति दिवस ।।(५४)

भावार्थ: सरस्वती विचार करने लगी। योगी का आचरण संदिग्ध लगता है। सखी का धूर्त होना संभव नहीं। परन्तु योगी के मुख पर प्रकाश था। मेरा मन कहता है कि वह दम्भी नहीं हो सकता। पर सखी के वचन भी असत्य नहीं हो सकते। यदि मन में थोड़ा भी संशय है तो उत्तम यही है कि मैं इस भस्म का भक्षण न करूँ। यह विचार कर उसने उस भस्म को ग्राम की सीमा के बाहर एक खादकुंड में फेंक दिया। वह स्त्री अत्यन्त अभागन थी। उसके भाग्य में पुत्र सुख नहीं था। यदि उसके भाग्य में पुत्र सुख नहीं था तब वह उस दिव्य भस्म का भक्षण कैसे करती? धीरे धीरे बारह वर्ष बीत गए। वह प्रति दिन दुःखी रहती (पुत्र न होने के कारण)।

किए स्मरण स्व-आश्रम वचन । श्री मत्स्येन्द्रनाथ महन ।।
करना मैंने मार्ग दर्शन । सुत सरस्वती जो रुप भगवन ।।(५५)
होगी अब द्वादस वर्ष वयस् । लूँ मैं उसे अब अपने संवस् ।।
किए तब प्रस्थान वह महान । अभिमुख चंद्रगिरि स्थान ।।(५६)

भावार्थ: महात्मा श्री मत्स्येन्द्रनाथ को अपने आश्रम में वचन की स्मृति आई। मैंने प्रभु स्वरुप सरस्वती के पुत्र का मार्ग दर्शन करना है, उसकी आयु अब बारह वर्ष की हो गई होगी। अब मैं उसे अपने संग लूँ। तब वह महात्मा चंद्रगिरि ग्राम की ओर प्रस्थान किए।

पहुँच गांव गृह सरस्वती । बोले अलख अलख स्वर उच्चति ।।
ले भिक्षा आईं नारि द्वार । देखा एक योगी खड़ा वार ।।(५७)
थे यह वही जो दिए विभूति । हेतु संतान समान सुरपति ।।
घबराई सरस्वती देख महन । देती अन्न कर ओर अन्य आनन ।।(५८)
कहे योगी नहीं चाह अन्न । दिए भस्म हम करो माँ स्मरन ।।
हेतु जन्म सुत दिए स्वस्त्ययन । होगा वर्ष द्वादस वह बालन ।।(५९)

क्या नहीं कराओगी दर्शन।करूँ उसका मार्ग प्रदर्शन।।
नहीं बोलीं कुछ सरस्वती।पूछे तब योगी हे महती।।(६०)

भावार्थ: ग्राम में सरस्वती के घर पहुँच उच्च स्वर में 'अलख अलख' बोले। भिक्षा लेकर नारी द्वार पर आईं। उन्होंने देखा कि एक योगी द्वार पर खड़ा है जिसने उन्हें हरि समान संतान प्राप्ति के लिए भस्म दी थी। उन महात्मा को देखकर सरस्वती घबरा गईं। मुख मोड़ कर अन्न (दान) देने लगीं। तब योगी ने कहा कि उन्हें अन्न नहीं चाहिए। माता स्मरण करो कि हमने आशीर्वाद के साथ पुत्र जन्म हेतु भस्म दी थी। वह बालक अब बारह वर्ष का हो गया होगा। क्या उसके दर्शन नहीं कराओगी जिससे मैं उसका पथ प्रदर्शन करूँ?सरस्वती कुछ नहीं बोलीं, तब महात्मा ने पूछा कि हे' भाग्यवान,-

क्या नहीं पाईं तुम संतति।हेतु आशीर्वचन विभूति।।
है असंभव हो निरर्थक वचन।थी भस्म मन्त्रित दिव्य पावन।।(६१)
करने लगीं सरस्वती रुदन।कही कथा सत्य जो समुत्पन्न।।
फेंकी भस्म बाह्य खादकुंड।सुने वचन धार धैर्य सुमुण्ड।।(६२)

भावार्थ: "क्या तुम्हें मेरे आशीर्वाद और भस्म से पुत्र प्राप्ति नहीं हुई? यह असंभव है कि मेरे वचन मिथ्या हों। वह भस्म मन्त्रित दिव्य और पवित्र थी। तब सरस्वती रोने लगीं। उन्होंने सब सत्य घटना सुनाई कि भस्म को उन्होंने बाहर खादकुंड में फेंक दिया था। सुमुख (योगी) ने धैर्य से यह सुना।

बोले तब योगी मधुर वचन।हो अभयी हे सुमुखी बहन।।
ले चलो मुझे तुम उस स्थापन।फेंकी जिस खादकुंड भस्मन।।(६३)
ले चलीं नारि तब वहां महन।पहुँच कुंड बोले वह योगिन।।
हे सूर्य पुत्र रूप नारायन।निकलो बाहर छोड़ो आसन।।(६४)

भावार्थ: तब योगी मधुर वचन बोले, ' हे सुमुखी बहन, डरो नहीं। मुझे उस खादकुंड स्थान पर ले चलो जहां तुमने भस्म फेंकी थी।' तब वह नारी महात्मा को वहां ले गईं। कुंड पहुँच कर योगी बोले, 'हे सूर्य पुत्र नारायण रूप, आसन छोड़ बाहर निकलो।'

नहीं सुना कोई स्वर योगिन।किए वह तीन बार आवाहन।।
आया एक स्वर तब तस् अंदर।खादकुंड से बोले मान्यवर।।(६५)
हुआ अवतरित हेतु स्वस्त्ययन।प र है ऊपर गोमय आवरन।।
हुए विस्मित सभी उपस्थित जन।करने लगीं सरस्वती रुदन।।(६६)
दिए आदेश तब योगी महन।खोदो तुरंत यह दुर्नामन।।
संसेवन कुठारादि साधन।निकाले गए तब बालक महन।।(६७)

भावार्थ: योगी (मत्स्येंद्रनाथ) ने कोई स्वर नहीं सुना। उन्होंने तीन बार पुकारा तब उसके (खादकुंड के) अंदर से एक स्वर आया। खादकुंड से मान्यवर बोले, 'आपके आशीर्वाद से मैंने जन्म लिया है परन्तु गोमय (गौ के गोबर) से ढका हूँ।' सभी उपस्थित प्राणी अचंभित हुए। सरस्वती रोने लगीं। तभी महात्मा योगी ने आदेश दिया कि तुरंत इस खादकुंड को खोदो। फावड़ा आदि साधनों के प्रयोग से तब महात्मा बालक को निकाला।

था प्रकाशमय उनका आनन्।द्वादस वर्ष आयु थी बालन।।
पकड़े तुरंत वह योगी चरन।कहे तब मत्स्येन्द्रनाथ वचन।।(६८)
हो फल तुम मम मन्त्रित भस्म।पाओ तुम शीघ्र तत्व-ब्रह्म।।
हो पालित बाल तुम गोमय।अतः नाम गोरखनाथ दैव्य।।(६९)
लिपटे तब गोरखनाथ चरन।दिए योगी अनंत स्वस्त्ययन।।
दिए आदेश तब योगी बालक।चलो संग मम हूँ मैं पालक।।(७०)

भावार्थ: उनका मुख प्रकाशमान था। बालक की बारह वर्ष की आयु थी। उन्होंने (बालक ने) तुरंत योगी के चरण पकड़ लिए। तब (योगी) मत्स्येन्द्रनाथ ने कहा, 'तुम मेरी मन्त्रित भस्म का फल हो। शीघ्र ही ब्रह्म-तत्व को पाओ। तुम्हारा पालन गोमय ने किया है, अतः मैं तुम्हें गोरखनाथ दिव्य नाम देता हूँ।' तब गोरखनाथ (योगी के) चरण से लिपट गए। योगी ने उन्हें अनेक आशीर्वाद दिए और आदेश दिया, 'मैं तुम्हारा पालक हूँ, मेरे साथ चलो।'

था अति दुःख सरस्वती मन।नहीं रुक रहे थे अश्रु नयन।।
पकड़ पग योगी बोलीं वचन।कर दया दो मुझे यह बालन।।(७१)

बोले तब योगी मधुर वचन। चाहा देना तुम्हें सुत महन।।
पर नहीं विधि आशीर्वचन। मातृत्व माता आपके दैवन।। (७२)
नहीं लो कोई दोष स्वयम। समझो इसे आदेश ब्रह्म।।
दूँ मैं तुम्हें आशीर्वचन। करें रमण हिय सदा भगवन।। (७३)
यद्यपि रहें बाल गोरखनाथ। संग मेरे पाने कृपा नाथ।।
पर मानो उन्हें तुम सुत हिय। पाओ सदैव तुम फल दैव्य।। (७४)

भावार्थ: सरस्वती का मन बहुत दुःखी था। उनके नैनों से अश्रु रुक ही नहीं रहे थे। योगी के चरण पकड़ कर बोलीं कि दया कर इस बालक को वह उन्हें दे दें। तब योगी मधुर वचन बोले ,'मैंने तो तुम्हें पुत्र देना चाहा था, लेकिन विधि का विधान यह नहीं था। माता, आपके भाग्य में मातृत्व नहीं है। स्वयं को दोष नहीं दो। इसे प्रभु का आदेश समझो। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारे हृदय में प्रभु सदैव वास करें। यद्यपि गोरखनाथ प्रभु की कृपा पाने के लिए मेरे साथ रहेंगे, पर हृदय में तुम इन्हें अपना पुत्र मानो और सदैव दिव्य फल की प्राप्ति करती रहो।

थे प्रभावशाली योगी वचन। हुआ संतुष्ट सरस्वती मन।।
बोले तब हो आमुख बालन। चलो सुत तुरंत हेतु साधन।। (७५)
पा आशीर्वाद तब गुरुवर। हुए तत्पर चलने मान्यवर।।
करो कृपा हे मत्स्येन्द्रनाथ। बोले सब जन जय गोरखनाथ।। (७६)

भावार्थ: योगी के वाक्य प्रभावशाली थे। सरस्वती का मन संतुष्ट हुआ। तब बालक की ओर मुख कर (योगी) बोले, 'हे पुत्र, साधना हेतु तुरंत चलो।' गुरुदेव का आशीर्वाद पा तब आदरणीय (गोरखनाथ) चलने को तत्पर हुए। सभी प्राणी बोले, 'हे मत्स्येन्द्रनाथ, कृपा करो। गोरखनाथ की जय हो।'

शिष्य गोरखनाथ परीक्षा

गुरु मत्स्येन्द्रनाथ संग शिष्य । चले हेतु तीर्थाटन दिव्य ।।
नहीं रुकें द्वि रात्रि एक स्थल । था यह नियम कठोर युगल ।।(७७)
ठहरें मंदिर या बाह्य ग्राम । सायंकाल हेतु विश्राम ।।
हेतु भिक्षा करते निर्वाह । रहते तुष्ट मिले जो आहार ।।(७८)
था लक्ष्य जगन्नाथ दर्शन । पहुंचे वह उत्काल भुवन ।।
ठहरे सायं गांव इस राज्य । विदीर्ण मंदिर सीमा बाह्य ।।(७९)

भावार्थ: गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के साथ शिष्य (गोरखनाथ) दिव्य तीर्थ यात्रा को चले। एक स्थल पर दो रात नहीं रुकने का इन युगल (दोनों गुरु-शिष्य) का कठोर नियम था। सायंकाल विश्राम हेतु किसी मंदिर अथवा ग्राम के बाहर ठहर जाते। भिक्षा में जो भी आहार मिलता उससे संतुष्ट हो (जीवन) निर्वाह करते। उनका लक्ष्य जगन्नाथ के दर्शन का था। वह उत्काल भूमि (राज्य) पहुंचे। सायं को इस राज्य के एक ग्राम के बाहर विदीर्ण मंदिर में ठहरे।

नाम उस स्थल था कनकिरी । बसा आँचल गिरी कनकाद्रि ।।
हुई इच्छा मत्स्येन्द्रनाथ । लें परीक्षा शिष्य गोरखनाथ ।।(८०)
श्रद्धा धर्म कर्म भक्तवत । उनकी प्रति गुरु समर्पित ।।
बोले गुरु मत्स्येन्द्रनाथ । सुनो हे शिष्य गोरखनाथ ।।(८१)
सता रही है क्षुदा गहन तन । जाओ ग्राम करो प्रबंधन ।।
जैसी गुरुदेव की इच्छा । चले शिष्य तुरंत हेतु भिक्षा ।।(८२)

भावार्थ: उस स्थल का नाम कनकिरी था जो कनकाद्रि पर्वत के आँचल में स्थित था। मत्स्येन्द्रनाथ (गुरुदेव) की इच्छा हुई कि वह शिष्य गोरखनाथ की गुरु के प्रति समर्पण, श्रद्धा, धर्म और कर्मपरायणता की परीक्षा लें। मत्स्येन्द्रनाथ बोले, 'हे शिष्य गोरखनाथ, सुनो। मुझे गहन भूख सता रही है। गांव जाकर इसका प्रबंध करो।' 'जैसी गुरुदेव की इच्छा', शिष्य तुरंत भिक्षा हेतु (गांव की ओर) चले।

गए गोरखनाथ जी कई द्वार । नहीं मिल सका कहीं आहार ।।
देखे तब गृह एक ब्राह्मण । लगी हुई भीड़ किसी कारण ।।(८३)

गए समीप पूछे एक भूजन । किस हेतु हुए एकत्रित यह जन ।।
था इस गृह श्राद्ध अनुष्ठान । दिए ब्राह्मण भोज यजमान ।। (८४)
किए प्रार्थना गोरखनाथ । दो मुझे भोज भिक्षा गृहनाथ ।।
दीं गृह स्वामिनी तब भोजन । अनेक भांति रुचिर व्यंजन ।। (८५)

भावार्थ: गोरखनाथ जी कई द्वार (गृह) गए, परन्तु उन्हें भोजन नहीं मिला। तब उन्होंने देखा कि एक ब्राह्मण के गृह में किसी कारण भीड़ लगी हुई है। एक व्यक्ति के पास पहुँच कर उन्होंने भीड़ का कारण पूछा। (उस व्यक्ति ने कहा) ब्राह्मण के गृह श्राद्ध अनुष्ठान था जिसमें उन्होंने यजमानों को भोज दिया है। तब गोरखनाथ ने निवेदन किया कि हे गृह स्वामी, मुझे भी भिक्षा में भोज दीजिए। तब गृह स्वामिनी ने उन्हें विविध भांति के स्वादिष्ट पकवान दिए।

आए गोरखनाथ लेकर व्यंजन । किया भोजन उनको अर्पन ।।
देख बहु भांति रुचिर व्यंजन । हुए गुरुवर अत्यंत प्रसन्न ।। (८६)
तुरंत किए भोज सब आहार । नहीं हुई तृप्ति उदर उदार ।।
कहने लगे सुनो शिष्यवर । है भोजन अत्यंत रुचिकर ।। (८७)
जाओ पुनः इस स्वामी सदन । लाओ और रुचिर भोजन ।।
कर आज्ञा गुरु शिरोधार्य । चले गोरखनाथ गृह आर्य ।। (८८)

भावार्थ: गोरखनाथ व्यंजन लेकर आए और गुरु को भोजन अर्पण किए। अनेक प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन देख गुरुदेव अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरंत भोजन किया। उन कृपालु के पेट को संतुष्टि नहीं हुई। वह कहने लगे, 'हे शिष्य, भोजन अत्यंत स्वादिष्ट है। तुम इस गृह स्वामी के पास दोबारा जाओ और अधिक स्वादिष्ट भोजन ले कर आओ।' गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर गोरखनाथ उन आर्य के घर चल दिए।

करने लगे गोरखनाथ विचार । जानूं मैं स्वभाव गृह नारि ।।
संभव नहीं दे वह पुनः भिक्षा । करूँ पालन पर गुरु इच्छा ।। (८९)
कहें अलख जाकर गृह द्वार । सुन स्वर आई बाहर नारि ।।
देख योगी दिया जिसे भोजन । हुई क्रुद्ध बोली हे छलिन ।। (९०)
आए तुम पुनः हेतु भिक्षा । क्या नहीं मिटी अपि बुभुक्षा ।।
बोले गोरखनाथ करबद्ध । सुन मेरे वचन मात समृद्ध ।। (९१)

भावार्थ: गोरखनाथ विचार करने लगे कि मैं स्त्री (गृह स्वामिनी) का स्वभाव जानता हूँ। यह संभव है कि वह दोबारा भिक्षा नहीं दे। लेकिन मैं गुरु की आज्ञा का पालन करूंगा। घर के द्वार पर पहुँच 'अलख' कहने लगे। स्वर सुन स्त्री बाहर आई। उस योगी जिस को भोजन दिया था, देख क्रोधित होकर बोलीं, 'हे छलिए, तुम दोबारा भिक्षा को आ गए। क्या तुम्हारी भूख अभी भी नहीं मिटी?' करबद्ध गोरखनाथ बोले, 'हे आदरणीय माता, मेरे वचन सुनो।'

हैं संग माता मेरे गुरुजन । ठहरे गांव बाह्य स्थल अजन ।।
किया उन्हें भोजन अर्पन । दिया था जो आपने भिक्षन ।। (९२)
पाकर अति रुचिकर भोजन । हुए वह संतुष्ट अत्यंत महन ।।
पर नहीं भरा उनका जठरन । है इच्छा लाऊँ और भोजन ।। (९३)
करो कृपा दो कुछ अतिरिक्त । कर सकूं भेंट गुरु उत्कृष्ट ।।
क्रोधित बोलीं गृह वनिता । लगता ग्रस्त तुम लोलुपता ।। (९४)

भावार्थ: "हे माता, मेरे साथ गुरुदेव हैं जो ग्राम के बाहर एक निर्जन स्थान पर ठहरे हैं। जो भोजन आपने मुझे भिक्षा में दिया था, वह मैंने उन्हें अर्पण कर दिया। अत्यंत स्वादिष्ट भोजन पाकर वह महात्मा अत्यंत संतुष्ट हुए, लेकिन उनका पेट नहीं भरा। उनकी इच्छा हुई कि मैं और भोजन लाऊँ। कृपा कर मुझे अतिरिक्त (भोजन) दें ताकि मैं श्रेष्ठ गुरु को भेंट कर सकूं। (यह सुनकर) क्रोधित गृह स्वामिनी बोलीं, 'लगता है तुम लोभ से ग्रस्त हो।'

हो तुम ही पेटुल बुभुक्षित । पर करते नाम गुरु कलंकित ।।
तब कहे बालक गोरखनाथ । कहूँ सत्य शपथ अवधनाथ ।। (९५)
नहीं किया स्पर्श वह भोजन । नहीं जानूं स्वाद मैं व्यंजन ।।
मानो तुम मेरा सत्य कथन । आया हेतु गुरुच्छा पालन ।। (९६)

भावार्थ: 'तुम ही पेटुल भुक्कड़ हो और गुरु का नाम कलंकित कर रह हो।' तब बालक गोरखनाथ बोले, 'मैं भगवान् की शपथ खा कर कहता हूँ कि मैंने भोजन का स्पर्श भी नहीं किया। उस व्यंजन के स्वाद को मैं नहीं जानता। मेरे वचन को सत्य मानो कि मैं गुरु की इच्छा पालन हेतु आया हूँ।'

बोलीं तब नारि दुर्विकन । नहीं लगते तुम सत्य योगिन ।।
होते नहीं संत घस्मर वञ्चक । होते वह परमार्थकारक ।। (९७)
नहीं दिए ध्यान वह दुर्वचन । बोले योगी मृदुल वचन ।।
माँ यदि आपकी कोई व्यथा । कहो मुझे रख ईश आस्था ।। (९८)
पर हेतु गुरु इच्छा पालन । कृपा दो मुझे कुछ व्यंजन ।।
बोली तब नारि कुछ नम्रक । क्या दे सकते तुम भिक्षुक ।। (९९)

भावार्थ: तब नारी अशिष्टता से बोली, 'तुम वास्तविक योगी नहीं लगते। संत लालची पेटू (खाने के अति इच्छुक) नहीं होते। वह तो परमार्थ करने वाले होते हैं।' उन्होंने (गोरखनाथ जी ने) दुर्वचन पर ध्यान नहीं दिया। वह योगी मधुर वचन बोले, 'माता, यदि आपकी कोई समस्या है तो ईश्वर पर श्रद्धा रख मुझे (अपनी समस्या) कहो। लेकिन गुरु की इच्छा पालन हेतु मुझे कुछ व्यंजन दो।' तब स्त्री कुछ विनम्र होकर बोलीं, 'हे भिक्षुक तुम क्या दे सकते हो?'

बोले तब विनम्र गोरखनाथ । हूँ मैं सेवक मछिन्द्रनाथ ।।
है न कुछ अतिरिक्त यह नाम । कहो फिर भी आऊं कुछ काम ।। (१००)
कहीं नारि तब व्यंग वचन । दो मुझे भिक्षुक एक नयन ।।
क्या है यह तुम्हें स्वीकार । बोले तब हाँ संत अविकार ।। (१०१)
गईं ब्राह्मणी तब अन्तः घर । निकाला चक्षु योगी स्व-कर ।।
बह रहा था रक्त कोष नयन । लौटी ले शीघ्र नारि व्यंजन ।। (१०२)
देख दशा दीन दुःखात्मक । दौड़ीं अंदर गृह विभीषक ।।
पुकारे संत तब हे माता । लो नेत्र गोलक हे दाता ।। (१०३)

भावार्थ: तब विनम्र गोरखनाथ बोले, 'मैं मछिन्द्रनाथ का सेवक हूँ। इस नाम के अतिरिक्त मेरे पास कुछ नहीं है। फिर भी आप कहें, कुछ काम आ सकूं।' तब स्त्री व्यंग वचन बोलीं, 'हे भिक्षुक, मुझे अपना एक नेत्र दे दो। क्या यह तुम्हें स्वीकार है?' तब निष्कलंक संत बोले, 'हाँ'। ब्राह्मणी तब घर के अंदर गईं। तब योगी ने अपने हाथों से नेत्र निकाल लिया। नेत्रbकोष से रक्त बह रहा था। स्त्री शीघ्र ही व्यंजन लेकर लौटी। जब उन्होंने यह दुःखित दृश्य देखा, तब भयभीत होकर घर के अंदर दौड़ गईं। तब संत ने पुकार कर कहा, 'हे (अन्न) दाता, नेत्र गोलक लो।'

करतीं पश्चाताप स्व-कथन । बोलीं नारि तब स्वर रुदन ।।
जाओ तुम तुरंत स्व-स्थापन । नहीं चाहिए मुझे यह नयन ।। (१०४)
हुआ मुझे यह बोध हे महन । हूँ मूर्ख न समझ सकी संत ।।
करो क्षमा हूँ मैं लज्जाकर । दें क्षमादान मुझे गुरुवर ।। (१०५)

भावार्थ: अपने वचनों पर पश्चाताप करती हुई वह स्त्री रोती हुई बोलीं, 'तूम तुरंत अपने स्थान पर जाओ। मुझे नेत्र नहीं चाहिए। हे महात्मा, मुझे अब ज्ञान हो गया कि मैं मूर्ख हूँ। संत को नहीं समझ सकी। मैं लज्जाकर हूँ, मुझे क्षमा करो। गुरुवर भी मुझे क्षमादान दें।

सुन शब्द विनम्र नारि संत । चले समीप गुरुदेव महंत ।।
किए विचार देख रक्त नयन । होंगे दुःखी गुरु सुजन ।। (१०६)
बाँध पट्टी ढका कोष नयन । पहुंचे निवास ले संग व्यंजन ।।
देखे गुरु आए शिष्य सुजन । संग भोज पर पट्टी नयन ।। (१०७)
पूछे गुरु क्या इसका कारन । बोले शिष्य नहीं विषय चिंतन ।।
हो रही थी पीड़ा कुछ नयन । बाँधी पट्टी हेतु विमोचन ।। (१०८)

भावार्थ: स्त्री के विनम्र वचन सुन संत (गोरखनाथ जी) महात्मा गुरुदेव के समीप चले। नेत्र में रक्त देखकर गुरु दुःखी होंगे, इस विचार से उन्होंने नेत्र-कोष को ढककर पट्टी बाँध ली। तब व्यंजन ले कर निवास स्थान पर पहुंचे। गुरु ने देखा कि दयालु शिष्य भोजन लेकर आ रहे हैं, परन्तु नेत्र पर पट्टी बंधी है। इसका कारण पूछा। शिष्य बोले कि यह कोई चिंता का विषय नहीं हैं। नेत्र में कुछ पीड़ा हो रही थी अतः आराम के लिए पट्टी बांध ली।

नहीं हुए संतोष गुरुवर । कहो सब घटना स्पष्ट शिष्यवर ।।
कहे तब सब वृतांत शिष्य । गया पुनः हेतु भिक्षा दिव्य ।। (१०९)
थीं गृह नारि कुछ क्रोधन । माँगा नेत्र विनिमय व्यंजन ।।
पर नहीं गुरु नारि दोषवत । समझा मुझे पुरुष लम्पट ।। (११०)
बोले दयालु गुरुवर वचन । किए तुम क्षमा एव हे सुजन ।।
नहीं दूँ उसे कोई श्राप । रहो निश्चिंत तुम हे निष्पाप ।। (१११)

भावार्थ: गुरुदेव (इस उत्तर से) संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने कहा कि हे शिष्य, सब घटना स्पष्ट बताओ। तब शिष्य ने पूरी घटना बताई। हे दिव्य (गुरु), भिक्षा हेतु मैं दोबारा गया। गृह स्वामिनी कुछ क्रोधित थीं। उन्होंने व्यंजन के बदले नेत्र माँगा। लेकिन गुरुदेव इसमें उन नारी का कोई दोष नहीं है। उन्होंने मुझे लालची समझा। तब दयालु गुरुदेव बोले, 'हे कृपालु, तुमने पहले ही उसे क्षमा कर दिया। मैं कोई श्राप नहीं दूंगा। हे निष्पाप, तुम निश्चिंत रहो।'

हूँ मैं तुम पर अत्यंत प्रसन्न । है तुम्हारी दया विलक्षन ।।
हो यशस्वी तुम त्रिभुवन । है मेरा यह आशीर्वचन ।। (११२)
बोले तब विनम्र गोरखनाथ । है यह प्रभाव आपका नाथ ।।
जो सीखा भाव दया दमन । हेतु सब आपकी शिक्षा महन ।। (११३)

भावार्थ: 'मैं तुम पर अत्यंत प्रसन्न हूँ। तुम्हारी दया की कोई तुलना नहीं है। तुम तीनों लोकों में यशस्वी बनो, यह मेरा आशीर्वचन है।' तब विनम्र गोरखनाथ बोले, 'हे नाथ, यह सब आपका प्रभाव है। हे महात्मा, जो दया और दमन (इन्द्रियाँ दमन) का भाव मैंने सीखा है, वह आपकी शिक्षा के कारण है।

हो प्रसन्न बोले गुरु महत । नहीं तुम समान गुरु भक्त ।।
है मुझे यह पूर्ण विश्वास । होगा विस्तृत जग प्रभास ।। (११४)
दूंगा तुम्हें मैं ब्रह्मज्ञान । होगे पूजित जग सम भगवान् ।।
सुन सोम समान गुरु वचन । किए गोरखनाथ स्पर्श चरन ।। (११५)

भावार्थ: महात्मा गुरु प्रसन्न होकर बोले, 'तुम्हारे समान गुरु भक्त कोई नहीं है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हारा तेज विश्व में फैलेगा। मैं तुम्हें ब्रह्मज्ञान दूंगा जिससे तुम विश्व में भगवान् के समान पूजित होगे।' गुरु के अमृत समान वचन सुनकर गोरखनाथ ने (उनके) चरण स्पर्श किए।

कहे फिर गुरु मछिन्द्रनाथ । सुनो वचन मेरे गोरखनाथ ।।
दो शीघ्र मुझे गोलक नयन । सौंपा तब गुरु स्व-लोचन ।। (११६)
कर स्वच्छ जल गोलक लोचन । कर दैवीय शक्ति जागरन ।।
शल्य तन्त्र से लगाया तब नयन । देख सकें पुनः स्पष्ट बालन ।। (११७)

किए पूर्ण गुरुदेव स्व-वचन ।दिए सब भांति उन्हें बोधन ।।
बने गोरखनाथ तब प्रज्ञ ।योगी ज्ञानी और सर्वज्ञ ।।(११८)

भावार्थ: फिर मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे गोरखनाथ, मेरे वचन सुनो। मुझे शीघ्र नेत्र गोलक दो। तब गुरु को (गोरखनाथ ने) नेत्र गोलक सौंपा। (गुरुदेव ने) नेत्र गोलक को जल में स्वच्छ कर दैवीय शक्ति को जागृत कर, शल्य चिकित्सा से नेत्र लगाया। अब बालक (गोरखनाथ) फिर से देख सकते थे। गुरुदेव ने अपना वचन पूर्ण किया। उन्हें प्रत्येक भांति की शिक्षा दी। गोरखनाथ तब विवेकशील, योगी, ज्ञानी और त्रिकालदर्शी बन गए।

नरसिंह भगवान् का वरदान

किए द्वि गुरु शिष्य पुनः गमन। दें मछिन्द्रनाथ सतत बोधन।।
पहुंचे मंदिर नरसिंह भगवन। किए तब मछिन्द्रनाथ मनन।।(११९)
गोरखनाथ करें सहायता। करें प्रबंध वस्तु याचिता।।
जाएं हेतु भिक्षा वह सर्वदा। करें साधना सह आत्मदा।।(१२०)

भावार्थ: दोनों शिष्य और गुरु ने दोबारा प्रस्थान किया। मत्स्येन्द्रनाथ निरंतर (गोरखनाथ को) शिक्षा देते रहे। वह नरसिंह भगवान् के मंदिर में पहुंचे। (वहां) मत्स्येन्द्रनाथ साधना करने लगे। गोरखनाथ उनकी सहायता करते। आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध करते। नित्य भिक्षा लेने हेतु जाते। अपने गुरु के साथ वह भी साधना करते।

बीता काल कुछ करते मनन। मछिन्द्रनाथ करें निवेदन।।
हो प्रकट समक्ष हे भगवन। सुन पुकार आए नरसिंहन।।(१२१)
चाहो क्या हे मछिन्द्रनाथ। बोले मधुर वचन विश्वनाथ।।
पड़े मछिन्द्रनाथ हरि चरण। रहूँ सदैव आपकी शरण।।(१२२)
कर कृपा बोले श्री भगवत। रहो सदैव तुम मंगलवत।।
जो हो तुम्हारे हिय मन्मन्। कहो निःसंकोच तुम वह वचन।।(१२३)

भावार्थ: साधना करते कुछ समय बीता। मत्स्येन्द्रनाथ ने प्रार्थना की, 'हे प्रभु, (मेरे) समक्ष प्रकट हों।' पुकार सुन नरसिंह (भगवान्) प्रकट हुए। विश्वनाथ मधुर वचन बोले, 'हे मछिन्द्रनाथ, क्या चाहते हो?' तब मत्स्येन्द्रनाथ प्रभु के चरणों पर गिर पड़े और बोले, 'मैं सदैव आपकी शरण रहूँ।' श्री भगवान् तब कृपा कर बोले, 'तुम सदैव कृपा पात्र रहो। जो भी तुम्हारे हृदय में इच्छा है, वह निःसंकोच वचन मुझ से कहो।'

करबद्ध बोले मछिन्द्रनाथ। यदि प्रसन्न त्रिलोकीनाथ।।
है मम शिष्य यह गोरखनाथ। लो स्व-शरण इसे विश्वनाथ।।(१२४)
करे प्राप्त ब्रह्म ज्ञान भगवन। हो सके सिद्ध साधना अविघ्न।।
तथास्तु कहे नरसिंह भगवन। हुए अदृश्य वह मध्य तनु पवन।।(१२५)

भावार्थ: करबद्ध तब मछिन्द्रनाथ बोले, 'यदि त्रिलोकीनाथ प्रसन्न हैं तो हे हरि, मेरे शिष्य गोरखनाथ को अपनी शरण में लें। यह ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करे। इसकी साधना बिना किसी विघ्न के सफल हो।' तब भगवान् 'तथास्तु' (ऐसा ही हो) कहकर सूक्ष्म वायु में विलीन हो गए।

हुए प्रकट स्वप्न रात्रि भूनाथ । समक्ष साधक श्री गोरखनाथ ।।
बोले प्रभु अति मधुर वचन । कहो वत्स जो हो हिय मन्मन् ।। (१२६)
पड़ चरण बोले गोरखनाथ । रहूँ भक्त सदा हे विश्वनाथ ।।
करूँ सदा गुरु पग अनुसरन । रहे श्रद्धा अटूट मेरे मन ।। (१२७)

भावार्थ: उस रात स्वप्न में भगवान् साधक श्री गोरखनाथ के समक्ष प्रकट हुए और अति मधुर वचन बोले, 'हे वत्स, कहो जो तुम्हारे हृदय की इच्छा हो।' तब प्रभु के चरणों में पड़ गोरखनाथ बोले, 'हे विश्वनाथ, मैं सदैव आपका भक्त रहूँ। गुरुदेव के पग का सदैव अनुसरण करूँ। मेरे मन में (उनके प्रति) अटूट श्रद्धा रहे।

हो प्रसन्न बोले श्रीनाथ । है यही इच्छा मछिन्द्रनाथ ।।
दूँ वर न हो विघ्न कभी पथ । रहो सदैव तन्मात्र समर्थ ।। (१२८)
नहीं हो तुम कभी मनोहत । करो अनुसरण सदा पथ भगवत ।।
पड़े प्रभु चरण गोरखनाथ । हुए अंतर्धान तब विश्वनाथ ।। (१२९)

भावार्थ: तब प्रसन्न होकर भगवान् बोले, 'मछिन्द्रनाथ की इच्छा के अनुसार मैं तुम्हें वर देता हूँ कि तुम्हारे मार्ग में कभी कोई विघ्न न आए। तुम में (प्रत्येक कार्य हेतु) पूर्ण सामर्थ्य हो।कभी हतोत्साहित न हो और ईश्वरीय मार्ग का अनुसरण करो।' गोरखनाथ प्रभु के चरणों पर पड़े। तब प्रभु अंतर्ध्यान हो गए।

बताए यह हरि आशीर्वचन । गोरखनाथ तब गुरु महन ।।
हो अति प्रसन्न तब गुरुवर । लगाए वक्ष वह स्व-शिष्यवर ।। (१३०)
हो तुम अत्यंत सुभग स्नेहन । करूँ अब महिषमर्दिनी मनन ।।
हेतु वर पाओ शक्ति दिव्य । किए तब गुरु तप माँ पूज्य ।। (१३१)

भावार्थ: गोरखनाथ ने तब प्रभु का यह वरदान महात्मा गुरु को बताया। गुरुदेव यह सुनकर अति प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने शिष्य को वक्ष से लगा लिया। (वह बोले) हे प्रिय, तुम अत्यंत भाग्यशाली हो। अब मैं महिषमर्दिनी (माँ) की साधना करूंगा जो तुम्हें दिव्य शक्ति दें। तब गुरु ने पूज्य माँ की साधना की।

हो प्रसन्न हुईं प्रकट माँ। बोलीं मधुर वचन जगदमाँ ।।
है क्या इच्छा मछिन्द्रनाथ। मांगो वर करूँ मैं सनाथ ।। (१३२)
बोले गुरु हे महर्षिमर्दिनी। हो तुम माँ आनंददायिनी ।।
है मेरा शिष्य गोरखनाथ। प्रिय नरसिंह विश्वनाथ ।। (१३३)
दो माँ उसे तुम रिद्धि सिद्धि। शक्ति अलौकिक महत बुद्धि ।।
बोलीं तब तथास्तु दिव्य माँ। हुए गोरखनाथ सिद्धात्मा ।। (१३४)
हुईं अन्तर्ध्यान माँ दे वर। तब हेतु प्रसन्न करें धनुर्धर ।।
किए तप संत मछिन्द्रनाथ। हुए प्रकट तब अयोध्यानाथ ।। (१३५)

भावार्थ: प्रसन्न हो माँ प्रकट हुईं। जगदम्बा मधुर वचन बोलीं, 'हे मछिन्द्रनाथ, तुम क्या चाहते हो? वर मांगो, मैं कृतकृत्य कर दूंगी (अर्थात तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूंगी)।' तब गुरु बोले, 'हे महर्षिमर्दिनी, आप आनंददायिनी माँ हो। मेरा शिष्य गोरखनाथ है जो नरसिंह भगवान् का प्रिय है। उसे माँ आप रिद्धि, सिद्धि, अलौकिक शक्ति और महत बुद्धि दो। दिव्य माँ तब 'तथास्तु' (ऐसा ही हो) बोलीं। गोरखनाथ (तब) सिद्ध पुरुष बन गए। वरदान देकर माँ अंतर्ध्यान हो गईं। तब धनुर्धर (भगवान् श्री राम) को प्रसन्न करने हेतु मत्स्येन्द्रनाथ ने तप किया। तब अयोध्यानाथ प्रकट हुए।

थे साथ राम भक्त हनुमान। बोले अन्तर्यामी भगवान् ।।
हेतु हित शिष्य गोरखनाथ। किए तप तुम मछिन्द्रनाथ ।। (१३६)
है हमारा यह आशीर्वचन। हों गोरखनाथ गुण संपन्न ।।
हो प्रसन्न कह मधुर वचन। हुए संग हनु वह अदृश्य गगन ।। (१३७)
कहे मछिन्द्रनाथ तब शिष्य। यद्यपि हुए तुम सर्वश दिव्य ।।
पर है नितांत करें हम तप। हेतु आशीर्वचन गणपति ।। (१३८)

भावार्थ: श्री राम के भक्त पवनपुत्र भी साथ थे। अन्तर्यामी भगवान् (राम) बोले, 'हे मछिन्द्रनाथ, शिष्य गोरखनाथ के कल्याण के लिए तुमने तप किया है। हमारा यह

आशीर्वाद है कि गोरखनाथ सर्वगुण संपन्न हों। प्रसन्न हो मधुर वचन कह तब भगवान् हनुमान के साथ आकाश में अंतर्ध्यान हो गए। तब मछिन्द्रनाथ शिष्य से बोले, 'यद्यपि तुम सब प्रकार से दिव्य हो, परन्तु गणपति के आशीर्वाद हेतु हमारा तप करना आवश्यक है।'

सुन आदेश तब गुरु महन । संग गुरु किए गणपति मनन ।।
हुए प्रकट तब प्रथम पूज्य । किए गुरु शिष्य आरती दिव्य ।। (१३९)
बोले विनायक कहो मन्मन् । मछिन्द्रनाथ तात स्नेहन ।।
करबद्ध बोले तब गुरुवर । हो कल्याण मम शिष्य दो वर ।। (१४०)
बोले गणपति तब हो प्रसन्न । गोरखनाथ है प्रिय मम जनन ।।
न हो अनर्थ कभी इस महन । करूँ मैं स्वयं रक्षा नित्यन ।। (१४१)
मुड़े ओर तब वह गोरखनाथ । कहो यदि इच्छा बुद्धिनाथ ।।
पड़ चरण बोले तब शिष्य । रहूँ सेवक गुरु और दिव्य ।। (१४२)
हो प्रसन्न रख मस्तक स्व-कर । हो तुम सफल सदैव दिए वर ।।
दे वर हुए प्रभु अंतर्ध्यान । पाए गोरखनाथ ब्रह्मज्ञान ।। (१४३)

भावार्थ: महात्मा गुरुदेव का आदेश सुन गुरु के साथ (गोरखनाथ) गणपति की साधना करने लगे। तब प्रथम पूज्य (गणपति) प्रकट हुए। गुरु और शिष्य ने उनकी आरती की। गणपति बोले, ' हे मेरे पिता के प्रिय मछिन्द्रनाथ, अपनी इच्छा बताओ। तब गुरुदेव (मछिन्द्रनाथ) करबद्ध बोले, 'मेरे शिष्य का कल्याण हो, यह वर दीजिए।' तब गणपति प्रसन्न होकर बोले, 'गोरखनाथ मेरे माता पिता का प्रिय है। इस महात्मा का अनर्थ असंभव है। मैं स्वयं इसकी नित्य रक्षा करूंगा।' तब वह गोरखनाथ की ओर मुड़े (और बोले), 'हे बुद्धिमत, यदि कोई इच्छा हो तो कहो।' तब शिष्य (गोरखनाथ) चरणों पर पड़ गए और बोले, 'मैं आपका और गुरु का सेवक रहूँ।' तब प्रसन्न होकर अपना हाथ उनके मस्तक पर रख कर सदैव सफल होने का वर दिया। वर देकर प्रभु अंतर्ध्यान हो गए। गोरखनाथ ब्रह्मज्ञानी हो गए।

किए गुरु शिष्य आवाहन । तब भास्कर हेतु वर अमृत्यन ।।
हुए प्रकट समक्ष तब भास्कर । दिए वर इच्छित वह मान्यवर ।। (१४४)
पाए गोरखनाथ जी अमरत्व । फिर किए तप अपि अन्य दैव्य ।।
भैरव प्रेत भूत बेताल यक्ष । योगिनी बीरभद्र शिवगण रक्ष ।। (१४५)

पाए वर इच्छित शिष्य महन । हुए वह सिद्ध युक्त सद्गुन ।।
था योगी स्वभाव सुषामन । नहीं किए सिद्धि जग प्रदर्शन ।। (१४६)

भावार्थ: तब गुरु और शिष्य (मत्स्येन्द्रनाथ एवं गोरखनाथ) ने अमरत्व वर प्राप्त करने हेतु भास्कर देव का आवाहन किया। भास्कर उनके समक्ष प्रकट हुए और आदरणीय (भास्कर) ने इच्छित वर दिया। गोरखनाथ को अमरत्व की प्राप्ति हुई। फिर अन्य दिव्यों का भी तप किया। भैरव, प्रेत, भूत, बेताल,यक्ष, योगिनी, बीरभद्र और शिवगण रक्ष। सबसे गोरखनाथ ने इच्छित वर पाए। वह सद्गुण युक्त सिद्ध पुरुष हो गए। लेकिन योगी (गोरखनाथ) शांत स्वभाव के थे। सिद्धियों का उन्होंने विश्व में प्रदर्शन नहीं किया।

नवनारायण करभञ्जननाथ (गहिनीनाथ) का जन्म

थी तपस्थली यद्यपि पावन । पर था समय वह करें अपगमन ।।
किए प्रस्थान द्वि संत महन । लिए बाह्य स्थल एक गांव शरन ।। (१४७)

भावार्थ: यद्यपि तपस्थली पवित्र थी पर उनके प्रस्थान का समय आ गया था। दोनों संतों ने वहां से प्रस्थान किया और एक ग्राम के बाह्य स्थल में शरण ली।

दिए आदेश तब मछिन्द्रनाथ । सुनो   ध्यान   से   गोरखनाथ ।।
है अभ्यास   सिद्धि   दुर्धरन । करो   मन्त्र   संजीवनी   मनन ।। (१४८)
किए शिष्य तब गुरु अनुसरण । अतः नहीं जा सके हेतु भिक्षण ।।
गए मत्स्येन्द्रनाथ   हेतु भिक्षा । करें शिष्य तब अभ्यास शिक्षा ।। (१४९)

भावार्थ: (गुरु) मत्स्येन्द्रनाथ ने आदेश दिया, 'हे गोरखनाथ, मुझे ध्यान से सुनो। सिद्धि का अभ्यास करना अत्यंत आवश्यक है। तुम संजीवनी मन्त्र की साधना करो। तब शिष्य ने गुरु (के आदेश) का अनुसरण किया। वह भिक्षा हेतु नहीं जा सके। तब (स्वयं) मत्स्येन्द्रनाथ भिक्षा के लिए गए। शिष्य (गोरखनाथ) अपनी शिक्षा (संजीवनी मंत्र) का अभ्यास करने लगे।

पा एक स्थली एकांत पावन । बैठे   गोरखनाथ   हेतु   मनन ।।
आए अनायास अनेक बालक । करें शोर हों विह्वल साधक ।। (१५०)
चाहा गोरखनाथ कहें वचन । करो क्रीड़ा किसी स्थल भिन्न ।।
पर रहे   शांत   करते साधन । करते यत्न   हो केंद्रित   मन ।। (१५१)

भावार्थ: एक पवित्र एकांत स्थली पाकर गोरखनाथ साधना के लिए बैठ गए। तभी अनायास वहां अनेक बालक आ गए। वह शोर करने लगे जिससे साधक विक्षिप्त हो गए। गोरखनाथ ने चाहा कि वह उनसे कहीं दूर जाकर अन्य स्थान पर खेलने को कहें, पर शांत रह वह साधना करते रहे। वह प्रयत्न करते रहे कि मन (साधना पर) केंद्रित रहे।

बनाने लगे मृत्तिका वाहन। वह बालक युक्त महत यत्न ।।
पर न बन सके वह क्रीडन। गए तब बालक समीप महन ।। (१५२)
हे बाबा हो तुम बुद्धिवन। हो सहायक बनाओ वाहन ।।
बोले गोरखनाथ मधुर वचन। नहीं जानूं कृति क्रीडन ।। (१५३)

भावार्थ: वह बालक अत्यंत परिश्रम से मिट्टी का रथ बनाने लगे। लेकिन वह खिलौना उनसे नहीं बना। तब वह बालक महात्मा (गोरखनाथ) के समीप गए। (और बोले) 'हे बाबा, आप अति बुद्धिमान हैं। रथ बनाने में हमारी सहायता करो।' तब गोरखनाथ मधुर वचन बोले, 'मैं खिलौना बनाना नहीं जानता।'

जाओ दूर तुम सब इस स्थली। करने दो मुझे स्व-प्रणाली ।।
परन्तु थे अति प्रतीप बालक। बोले हो तुम बाबा नायक ।। (१५४)
कृपया सुनो हमारी विनय। करो निर्मित क्रीडाद्रव्य ।।
सोचे तब गोरखनाथ महन। है यह उक्ति पाऊँ निःसरन ।। (१५५)
करूँ मदद बनाऊँ खिलौना। जाएं बाल तब ले क्रीडना ।।
कर सकूं तब मैं साधना। अतः बोले सिद्ध महामना ।। (१५६)
करो निर्देश मेरा पालन। होगे सफल बने रथ क्रीडन ।।
दिए तब वह उचित निर्देशन। बनाए बालक तब रथ मृत्स्न ।। (१५७)

भावार्थ: (गोरखनाथ बोले) 'तुम इस स्थल से दूर जाओ। मुझे अपना कार्य करने दो।' लेकिन बालक अति हठी थे, बोले, 'तुम बाबा गुरु हो। हमारी विनती सुनो। कृपया खिलौना बनाओ।' तब महात्मा गोरखनाथ ने सोचा कि यह उक्ति इनसे छुटकारा पाने के लिए उचित है। इन्हें खिलौना बनाने में मदद करूँ ताकि यह बालक खिलौना लेकर चले जाएं। फिर मैं साधना कर सकूंगा। अतः सिद्ध महात्मा बोले, 'मेरे निर्देशों का पालन करो। तुम रथ खिलौना बनाने में सफल होगे।' तब बालकों ने मिट्टी का रथ बना लिया।

'बना लिए बना लिए' खिलौना। चीखे तब एक संग यौवना ।।
अब करो बाबा तुम निर्मित। एक अधिरथ हेतु रथ क्षिति ।। (१५८)
किए तब गोरखनाथ संरचना। अधिरथ मृत्तिका शोभना ।।
था उनके मुख उस काल मन्त्र। संजीवनी विद्या सिद्ध मंत्र ।। (१५९)

हेतु संजीवनी मंत्र शक्ति। पड़े प्राण मृत्तिका मूर्ति ।।
हुए तब सब बालक भयग्रस्त। भागे कह भूत ओर वस्तव्यत ।।(१६०)
कहे वह जनयित्र हुआ घटन। सविस्मय वह गए निकट महन ।।
लौटे मछिन्द्रनाथ गुरुवर। ले भिक्षा तब निकट शिष्यवर ।।(१६१)
समझे कारण हेतु यह कौतुक। पड़े प्राण मृत्तिका चालक ।।
है संजीवनी मन्त्र प्रभाव। कर रहे जपन जो शिष्य सभाव ।। (१६२)

भावार्थ: 'बना लिए, बना लिखे खिलौना', एक साथ सभी युवा बालक चीखे। (गोरखनाथ से बोले) 'बाबा, अब मिट्टी से एक रथ चालक बनाओ।' तब गोरखनाथ ने मिट्टी से सुन्दर रथ चालक बनाया। उस समय उनके मुख पर संजीवनी विद्या सिद्ध मंत्र का जाप चल रहा था। संजीवनी तंत्र की शक्ति के कारण मिट्टी की मूर्ति में प्राण पड़ गए। तब सब बालक (यह देखकर) भयभीत होकर अपने घर की ओर भूत कहकर भागे। उन्होंने अपने माता पिता को घटना बताई। अचंभित तब सब महात्मा (गोरखनाथ) के निकट आए। तभी गुरु मत्स्येन्द्रनाथ भिक्षा लेकर अपने शिष्य के पास लौटे। इस कौतुक का वह कारण समझ गए। संजीवनी मन्त्र के प्रभाव से, जिसका शिष्य (गोरखनाथ) भाव सहित जपन कर रहे थे, मिट्टी के चालक में प्राण पड़ गए।

लिए जन्म यह करभञ्जननाथ। बोले तब गुरु मछिन्द्रनाथ ।।
गए निकट शिशु प्रियकार। है स्वागत हरि भू आधार ।।(१६३)
हे नवनारायण करभञ्जन। गहिनीनाथ हो नाम भुवन ।।
हो तुम सम्पूर्ण योग ज्ञाता। भक्ति ब्रह्मज्ञान के दाता ।।(१६४)
हो सम्मुख तब गोरखनाथ। बोले गुरु मछिन्द्रनाथ ।।
शिष्य हो तुम अति भाग्यवान। पाए संग रूप नव भगवान् ।।(१६५)

भावार्थ: तब गुरु मत्स्येन्द्रनाथ बोले, 'करभञ्जननाथ अवतरित हुए हैं।' तब दयालु शिशु के निकट गए। 'हे पृथ्वी के आधार हरि नव नारायण करभञ्जन आपका स्वागत है। पृथ्वी पर आपका नाम गहिनीनाथ होगा। आप सम्पूर्ण योग के ज्ञाता, भक्ति और ब्रह्मज्ञान के दाता हैं।' फिर गोरखनाथ की ओर मुड़ कर गुरु मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे शिष्य, तुम अत्यंत भाग्यशाली हो। नव नारायण रूप का साथ पाए हो।

फैला यह समाचार सर्वत्र। हैं ज्ञाता गोरखनाथ तंत्र।।
हो कल्याण पाने से दर्शन। हेतु आने लगे जन स्थापन।।(१६६)
बोले तब गुरु मछिन्द्रनाथ। सुनो हे शिष्य गोरखनाथ।।
हुआ पूर्ण मन्त्र अभ्यास। नहीं उचित ठहरें आवास।।(१६७)
थे सहमत शिष्य स्व-गुरुवर। बोले दें आज्ञा हे सदयवर।।
पहुंचा समाचार ग्राम्यजन। जा रहे संतगण छोड़ स्थापन।।(१६८)

भावार्थ: यह समाचार सर्वत्र फैल गया कि गोरखनाथ तंत्र के ज्ञाता हैं। उनके दर्शन से कल्याण होगा, इस कारण प्राणी वहां आश्रम में आने लगे (प्राणियों की भीड़ लगने लगी)। तब गुरु मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे शिष्य गोरखनाथ सुनो। तुम्हारा मन्त्र अभ्यास पूर्ण हुआ। अब इस आवास पर रुकना उचित नहीं है।' अपने गुरुदेव से शिष्य सहमत हुए और बोले, 'हे दयालु, आज्ञा दें।' यह समाचार ग्रामवासियों के पास पहुंचा कि संतगण आश्रम छोड़कर जा रहे हैं।

आए आश्रम समूह ग्राम्यजन। करें निवेदन पड़ संत चरन।।
करेंगे हम सब आपकी सेवा। नहीं करो अनाथ हमें देवा।।(१६९)
जब से पड़े संत आपके चरन। बढ़ी समृद्धि हुए सब प्रसन्न।।
करें विनती बहु ग्राम्यजन। पर बोले मधुर वचन महन।।(१७०)
जानें हम भाव तव हृदय। पर हम योगी असंग जग दृश्य।।
नहीं संभव ठहरें इस स्थल। हेतु समूह जन हो कोलाहल।।(१७१)
होता अति विघ्न हमारे मनन। पर दें तुम्हें हम एक वचन।।
है हमारा यह आशीर्वचन। आएं पुनः आगामि प्रकरन।।(१७२)

भावार्थ: ग्रामवासियों के समूह आश्रम आए और संतों के चरण पकड़ निवेदन करने लगे, 'हम सब आपकी सेवा करेंगे, हे देव, आप हमें अनाथ कर न जाएं। जब से आप संतों के चरण पड़े हैं, समृद्धि बढ़ी है, सब प्रसन्न हुए हैं।' इस प्रकार बहु भांति ग्रामवासियों ने विनती की। तब महात्मा (मछिन्द्रनाथ) मधुर वचन बोले, 'हम आपके हृदय के भाव जानते हैं, पर हम संसार से विरक्त योगी हैं। एक स्थान पर ठहरना संभव नहीं है। प्राणियों के समूह (के आने के कारण) के कारण कोलाहल होता है जिससे हमारी साधना में अत्यंत विघ्न होता है। परन्तु हम तुम्हें एक वचन देते हैं कि यह हमारा आशीर्वाद है कि हम अवसर मिलने पर दोबारा आएंगे।

थे मधुनाभ नाम के ब्राह्मन । वासी ग्राम धर्मी बुद्धिवन ।।
पंडित कर्मकांडी विद्वन । करें कर्मकांड ग्रामवासिन ।। (१७३)
थे सब ग्राम्यजन अति आप्त । गंगा नाम भार्या हरि भक्त ।।
नहीं थी पर उनके संतति । करें संत विनय सब निवसति ।। (१७४)
हे प्रभु दो इन्हें आप बालक । लिया जन्म हेतु मन्त्र साधक ।।
पड़े मधुनाभ तब संत चरन । बोले पाऊँ यदि बालक महन ।। (१७५)
हो धन्य मेरा दुःखित जीवन । पकड़े गंगा भी तब संत चरन ।।
देखे उन ओर मछिन्द्रनाथ । बोले मधुर वचन दयालु नाथ ।। (१७६)

भावार्थः मधुनाभ नाम के धार्मिक, बुद्धिमान, कर्मकांडी, ज्ञानी ब्राह्मण उस ग्राम वासी थे। वह पंडित ग्रामवासियों के कर्मकांड करते थे। सभी ग्रामवासियों के अति सम्माननीय थे। गंगा नाम की उनकी भगवद्भक्त पत्नी थीं। उनके कोई संतान नहीं थी। सब ग्रामवासी संत से विनती करने लगे, 'हे प्रभु, इन्हें आप बालक दे दें जो साधक (गोरखनाथ) के मन्त्र के द्वारा अवतरित हैं।' तब मधुनाभ ने भी संत (मछिन्द्रनाथ) के चरण पकड़े और बोले, 'यदि मुझे बालक मिल जाए तो मेरा दुःखित जीवन धन्य हो।' तब गंगा ने भी संत के चरण पकड़ लिए। मछिन्द्रनाथ ने उनकी ओर देखा। वह दयालु नाथ मधुर वचन बोले।

समझूँ मैं तुम्हारी व्यथा । पर सुनो ध्यान से यह कथा ।।
है नहीं यह साधारण बालक । लिया जन्म हेतु इच्छा पालक ।। (१७७)
बोला व्यंग्मय तब एक ग्राम्यक । हाँ नहीं यह प्राकृत बालक ।।
लिया जन्म हेतु मृत्तिका । बोले संत कहे सत्य ग्रामिका ।। (१७८)

भावार्थः 'मैं तुम्हारी व्यथा समझता हूँ। परन्तु ध्यान से मेरी कथा सुनो। यह साधारण बालक नहीं है। इसने प्रभु की इच्छा से जन्म लिया है।' तब एक ग्रामीण व्यंग्य में बोला, 'हाँ, यह बालक प्राकृतिक नहीं है (माँ के गर्भ से नहीं जन्मा है)। इसने मिट्टी से जन्म लिया है।' तब संत बोले, 'हे ग्रामीण,यह सत्य है।'

बना प्रत्येक प्राणी पञ्च-तत्व । नभ पवन अग्नि जल मृदातत्व ।।
निःसंदेह समान मृदा तन । मिल जाए मृदा हो जब मरन ।। (१७९)
नहीं असामान्य है अजायत । हेतु मृत्तिका जात शिशुवत ।।
है असाधारण इसकी आत्मा । है यह करभञ्जन परमात्मा ।। (१८०)
है अंग अभिन्न नव नारायण । लिया जन्म इच्छा नागभूषण ।।
अतः नितांत है अटूट श्रद्धा । प्रति हरि हेतु पालन शुद्धा ।। (१८१)

भावार्थः 'प्रत्येक प्राणी पञ्च तत्व - आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी तत्व से बना है। निःसंदेह यह शरीर मृदा (भूमि) के समान है और मरण पश्चात भूमि में ही मिल जाता है। इस बालक का मृत्तिका से उत्पन्न होना असाधारण नहीं है। इसकी आत्मा असाधारण है। यह हरि करभञ्जन की परम आत्मा है। नव नारायण का अभिन्न अंग है। शिव शंकर की इच्छा से (इसने) जन्म लिया है। अतः इस पवित्र आत्मा के पालन हेतु प्रभु के प्रति अटूट श्रद्धा आवश्यक है। '

बोले मधुनाथ हो नतमस्तक । होऊंगा सुभग बन पालक ।।
यदि करें प्रभु मुझ पर कृपा । हो गहिनीनाथ अनुकम्पा ।। (१८२)
करें हम द्वि पति पत्नी सेवा । अनन्य प्रेम श्रद्धा से देवा ।।
मुदित बोले मछिन्द्रनाथ । करो तुम सेवा गहिनीनाथ ।। (१८३)
जाओ गृह हेतु सुखागत । पधारेंगे शीघ्र वहां महत ।।
किए दम्पति संत स्पर्श चरन । गए तुरंत गृह हेतु शोधन ।। (१८४)

भावार्थः मधुनाथ नतमस्तक हो कर बोले, 'यदि मुझ पर प्रभु कृपा करें और गहिनीनाथ की अनुकम्पा हो तो मैं पालक बन अत्यंत सौभाग्यशाली हूँगा। हम दोनों पति पत्नी अनन्य प्रेम और श्रद्धा से देव की सेवा करेंगे।' प्रसन्न हो तब मछिन्द्रनाथ बोले, 'तुम गहिनीनाथ की सेवा करो। अपने घर उन का स्वागत करने हेतु जाओ। शीघ्र ही महात्मा वहां पधारेंगे।' तब दम्पति ने संत के चरण स्पर्श किए और तुरंत घर शुद्धिकरण के लिए चले गए।

जाना जब हुआ गृह दिव्य । चले मछिन्द्रनाथ संग शिष्य ।।
थे साथ में बाल गहिनीनाथ । पहुंचे गृह मधुनाभ नाथ ।। (१८५)

होने लगे मन्त्र उच्चारण।किए प्रवेश जब महात्मगण।।
पहने गहिनीनाथ सुवस्त्र।गूँज उठी ध्वनि जय सर्वत्र।।(१८६)
लगाए गुरु भस्म तब पावन।मस्तक गंगा जपत नारायन।।
हुआ गंगा मातृत्व संवेदन।भर आया दुग्ध उनके स्तन।।(१८७)
लीं स्व-अंक तब वह बाल दिव्य।किए आरम्भ शिशु पान स्तन्य।।
थी तब चंहु ओर प्रसन्नता।बोले तब गुरुवर महन्ता।।(१८८)

भावार्थ: जब यह जाना कि गृह दिव्य हो गया है (गृह शुद्धिकरण सम्पन्न हो गया है), तब मछिन्द्रनाथ शिष्य (गोरखनाथ) के साथ चले। बालक गहिनीनाथ के साथ वह महात्मा मधुनाथ के गृह पहुंचे। जब महात्माओं ने गृह में प्रवेश किया तब मन्त्रों का उच्चारण होने लगा। गहिनीनाथ को सुन्दर वस्त्र पहनाए। सर्वत्र जय की ध्वनि गूँज उठी। तब गुरुदेव ने नारायण का जप करते हुए गंगा के मस्तक पर पवित्र भस्म लगाई। गंगा को (भस्म लगाते ही) मातृत्व की अनुभूति होने लगी। उनके स्तनों में दुग्ध भर आया। तब उन्होंने दिव्य बालक (गहिनीनाथ) को अपनी गोद में ले लिया और शिशु ने दुग्ध पान प्रारम्भ कर दिया। सब ओर अत्यंत प्रसन्नता थी। तब महात्मा गुरुदेव बोले।

ब्राह्मण सुनो मेरे वचन।करेगा यह बालक वंश पावन।।
होगा यह योगी दिव्य सिद्ध।होगा यह विश्व में प्रसिद्ध।।(१८९)
करते कार्य जनहित नित्य।होगा शिष्य निवृत्तिनाथ दिव्य।।
हो तब सब भांति संतुष्ट तृप्त।चले द्वि योगी छोड़ वसति।।(१९०)

भावार्थ: 'ब्राह्मण मेरे वचन सुनो। यह बालक (तुम्हारे) वंश को पवित्र करेगा। यह दिव्य सिद्ध योगी होगा। यह संसार में प्रसिद्ध होगा। यह दिव्य निवृत्तिनाथ का शिष्य बनेगा।' सब प्रकार से तृप्त और संतुष्ट हो तब दोनों योगी (मछिन्द्रनाथ और गोरखनाथ) निवास छोड़ कर चले गए।

बद्रिकाश्रम में साधना

करते भ्रमण तीर्थ आश्रम । पहुंचे योगी बद्रिकाश्रम ।।
आया विचार गुरुदेव मन । कहे वह गोरखनाथ वचन ।। (१९१)
बिन कृपा रूद्र भगवान् । न हो सफल कर्मकांड ज्ञान ।।
है संभव करो जप संजीवन । दे प्रभाव यह मन्त्र असुम्र ।। (१९२)
रहोगे तुम सदैव सुरक्षित । होगी कृपा जब उमापति ।।
बोले तब योगी गोरखनाथ । बताओ विधान तुम हे नाथ ।। (१९३)
करूँ कैसे मैं शिव प्रसन्न । बोले तब मछिन्द्रनाथ महन ।।
हैं हम बद्रिकाश्रम पावन । करो तुम साधना जाकर वन ।। (१९४)
होगे सफल हेतु तुम मनन । होगी कृपा जब शंकर भगवन ।।
करो साधना हेतु उन मन्त्र । सिखलाए मैंने पूर्व तत्र ।। (१९५)

भावार्थ: तीर्थ आश्रमों में भ्रमण करते हुए वह योगी बद्रिकाश्रम पहुंचे। गुरुदेव (मछिन्द्रनाथ) के हृदय में विचार आया। वह गोरखनाथ से बोले, 'बिना शिव शंकर की कृपा के कर्मकांड ज्ञान सफल नहीं होता। यह संभव है कि जब तुम संजीवन मन्त्र का जाप करो तब उस मन्त्र का उलटा प्रभाव हो (अर्थात तुम्हारे लिए ही हानिकारक हो)। लेकिन यदि शिव शंकर की कृपा होगी तब तुम सदैव सुरक्षित रहोगे।' तब योगी गोरखनाथ बोले, 'हे स्वामी, मुझे विधान (शिव शंकर की उपासना की विधि) बताओ कि मैं शिव शंकर को कैसे प्रसन्न करूँ?' तब महात्मा मछिन्द्रनाथ बोले, 'हम पवित्र बद्रिकाश्रम में हैं। तुम वन जाकर साधना करो। जब तुम्हारी साधना सफल हो जाएगी तब शिव की कृपा होगी। जो मैंने तुम्हें पूर्ववत मन्त्र सिखलाए हैं, उन्हीं के द्वारा साधना करो।'

कर पालन आदेश गुरु महन । किए प्रवेश गोरखनाथ वन ।।
जब पाया एक उचित स्थान । हेतु साधना शंकर भगवान् ।। (१९६)
बैठे हेतु तपस्या साधक । छोड़े भोजन उस काल भक्त ।।
किए द्वादस वर्ष तपस्या । हुए प्रकट तब दुर्जनीया ।। (१९७)
बोले शिव शंकर मधुर वचन । जागो अब साधना महन ।।
खोले नेत्र तब गोरखनाथ । पड़े चरण वह कैलाशनाथ ।। (१९८)

भावार्थ: महात्मा गुरुदेव के आदेश का पालन करते हुए तब गोरखनाथ ने वन में प्रवेश किया। शिव शंकर की साधना हेतु जब एक उचित स्थान पाया तब वह साधना करने बैठ गए। उन भक्त ने उस समय (साधना काल) भोजन छोड़ दिया। बारह वर्ष तक तपस्या की। तब शिव शंकर प्रकट हुए और मधुर वचन बोले, 'हे महात्मा, अब साधना से जागो।' तब गोरखनाथ ने नेत्र खोले और शंकर भगवान् के चरणों पर पड़ गए।

हरि यदि मुझ पर आप प्रसन्न । दो वर हो सफल मेरा शिक्षन ।।
रहे सदैव समर्पित मेरा मन । पग कमल स्वरुप श्री भगवन ।। (१९९)
तथास्तु बोले त्रिपुरारी । हुए भक्त तब अति सुखारी ।।
हुआ इस भांति पूर्ण शिक्षण । हुए अंतर्ध्यान नागभूषण ।। (२००)
पा आशीर्वाद त्रिलोचन । हुए अधीर मिलने गुरु महन ।।
किया गमन तब गोरखनाथ । मिलने हेतु मछिन्द्रनाथ ।। (२०१)

भावार्थ: 'हे प्रभु, यदि मुझ पर प्रसन्न हैं तो वर दीजिए कि मेरी शिक्षा पूर्ण हो। आपके कमल स्वरुप चरणों में हे भगवन, मेरा मन सदैव समर्पित रहे।' तब शिव शंकर भगवान् ने 'तथास्तु' कहा। भक्त (गोरखनाथ) अत्यंत प्रसन्न हो गए। इस प्रकार उनकी शिक्षा पूर्ण हुई। तब शिव अंतर्ध्यान हो गए। शिव शंकर का आशीर्वाद मिलने के पश्चात वह महात्मा गुरुदेव से मिलने हेतु अधीर हो गए। तब गोरखनाथ जी ने मछिन्द्रनाथ (गुरुदेव) से मलने हेतु प्रस्थान किया।

कानिफनाथ का चमत्कार

पहुंचे उत्काल गोरखनाथ। थे इच्छित हों दर्श जगन्नाथ।।
पहुंचे वह नगर हेलापट्टन। थे गोपीनाथ यहां के राजन।।(२०२)
थे वह क्रूर प्रति संत साधक। थे संत जालंधर उनके बंधक।।
थे वह पीड़ित हेतु दुराचार। हुए दुःखी सुन करुणाधार।।(२०३)

भावार्थ: गोरखनाथ उत्काल (देश) पहुंचे। उनकी इच्छा हुई कि वह जगन्नाथ के दर्शन करें। वह हेलापट्टन नगर पहुंचे। वहां के सम्राट गोपीनाथ संतों और साधकों के प्रति क्रूर थे। उन्होंने योगी जालंधर को बंधक बना रखा था। उनके दुराचार से वह पीड़ित थे। यह सुनकर दयावान (गोरखनाथ) को दुःख हुआ।

सुना तब हैं उनके एक शिष्य। नाम कानिफनाथ अभिकृत्व।।
बिन किए चिंता गुरुदेव। बिता रहे हैं जीवन सुखेव।।(२०४)
गोरखनाथ गए उनके धाम। पहुँच किए आदेश प्रणाम।।
सुन नाथ पंथ अभिवादन। कानिफनाथ हुए संसर्पन।।(२०५)
तुरंत किए वह भी अभिवादन। कहकर आदेश शब्द उच्चारन।।
क्या तुम भी सम्प्रदाय नाथ। दो परिचय कहे कानिफनाथ।।(२०६)

भावार्थ: तब उन्होंने सुना कि उनके एक शिष्य हैं जिनका नाम चमत्कारी कानिफनाथ है। (अपने) गुरुदेव (जालंधर) की चिंता किए बिना वह सुखमय जीवन बिता रहे हैं। गोरखनाथ उनके निवास पर गए और 'आदेश' प्रणाम किया ('आदेश' नाथ पंथ की विशेष अभिवादन विधि है)। नाथ सम्प्रदाय की विधि से अभिवादन सुन कानिफनाथ को आश्चर्य हुआ। तुरंत उन्होंने भी 'आदेश' शब्द के उच्चारण से उनका अभिवादन किया। कानिफनाथ बोले, 'क्या तुम नाथ पंथ से हो, अपना परिचय दो।'

दिए परिचय तब गोरखनाथ। हूँ शिष्य मैं मत्स्येन्द्रनाथ।।
सुनकर नाम मत्स्येन्द्रनाथ। हुए नतमस्तक कानिफनाथ।।(२०७)
बैठाए तुरंत निकट आसन। बोले क्या आप क्षुधित महन।।
देखो मधुरक आम्र विटप। करूँ अर्पित बिन विलोपत।।(२०८)

है मुझ में शक्ति अति विलक्षन ।कह सको चमत्कार आप महन ।।
कहे गोरखनाथ है आभार ।नहीं क्षुधित मैं मायाकार ।।(२०९)

भावार्थ: तब गोरखनाथ ने अपना परिचय दिया, 'मैं मत्स्येन्द्रनाथ का शिष्य हूँ।' मत्स्येन्द्रनाथ का नाम सुन कानिफनाथ नतमस्तक हो गए। अपने निकट आसन पर उन्हें बिठाया और बोले, 'क्या आपको भूख लगी है? स्वादिष्ट आम का वृक्ष देखो। बिना तोड़े मैं आपको अर्पित करता हूँ। मुझ में अत्यंत विलक्षण शक्ति है। हे महात्मा, तुम इसे चमत्कार कह सकते हो।' गोरखनाथ बोले, '(आपका) आभार है। हे चमत्कारी, मैं भूखा नहीं हूँ।'

गर्वित बोले कानिफनाथ ।न करो संकोच गोरखनाथ ।।
तब फेंकी भस्म पढ़ एक मन्त्र ।आने लगे आम्र स्थल तत्र ।।(२१०)
किए भक्षण आम्र द्वि महन ।भरा उदर हुए वह पारन ।।
पर रहे अनेक आम अभी शेष ।बोले तब गोरखनाथ सर्वेश ।।(२११)
नहीं उचित करें फल व्यर्थ ।लगाओ वृक्ष पुनः हे समर्थ ।।
सुन वचन श्री गोरखनाथ ।बोले विस्मित कानिफनाथ ।।(२१२)

भावार्थ: गर्व से कानिफनाथ बोले, 'गोरखनाथ संकोच नहीं करो।' तब उन्होंने मन्त्रित भस्म फेंकी और उस स्थल पर आम आने लगे। दोनों महात्माओं ने पेट भर आमों का भक्षण किया और संतुष्ट हो गए। पर अभी भी अनेक आम शेष बच गए। तब विश्व स्वामी गोरखनाथ बोले, 'फल को व्यर्थ करना उचित नहीं है। हे समर्थ (कानिफनाथ), इन्हें दोबारा वृक्ष पर लगाओ।' श्री गोरखनाथ के वचन सुनकर कानिफनाथ अचंभित हो बोले।

कहते क्या गोरखनाथ वचन ।हो सके क्या संभव पुनः सलंग्न ।।
बोले तब गोरखनाथ महन ।है संभव हेतु कृपा गुरुजन ।।(२१३)
पर हो न यदि पूर्ण शिक्षन ।नहीं संभव हो पूर्ण मन्मन् ।।
नहीं दिए जालंधर शिक्षन ।कर सको तुम सफल सिद्धिन् ।।(२१४)

भावार्थ: 'गोरखनाथ तुम क्या बोलते हो? क्या पुनः (वृक्ष से आम्र) लगाना संभव है?' तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'गुरु की कृपा से संभव है। परन्तु यदि शिक्षा पूर्ण न हो,

तब इच्छा पूर्ण होना संभव नहीं। जालंधर ने शिक्षा नहीं दी कि तुम्हारी सिद्धि पूर्ण फलित हो।

हो क्रुद्ध बोले कानिफनाथ । रखो नियंत्रण गोरखनाथ ।।
न करो अवसाद मेरा ज्ञान । पाया हूँ पूर्ण तंत्र ज्ञान ।।(२१५)
मेरे गुरु हैं ज्ञाता सिद्धि । नहीं कम मछिन्द्रनाथ बुद्धि ।।
बोले तब योगी गोरखनाथ । सुनो मेरे वचन कानिफनाथ ।।(२१६)
हैं केवल दो ही संभावना । प्रथम नहीं दिए तुम्हें वयुना ।।
या नहीं शिक्षित स्वयं ज्ञान । जो सिखा सकें पूर्ण विज्ञान ।।(२१७)
लगे मुझे संभावना द्वितीय । नहीं मम सम गुरु अद्वितीय ।।
हैं वह नृप गोपीनाथ बंधक । पा रहे कष्ट अति वह साधक ।।(२१८)
होते यदि समर्थ पूर्ण सिद्धि । होते मुक्त कर प्रयोग बुद्धि ।।
हुए दस वर्ष पर हैं बंधक । जाओ देखो स्व-नेत्र सिद्धक ।।(२१९)
जाओ तुम नगर हेलापट्टन । रहें जहां गोपीनाथ राजन ।।
सुन हुए कानिफनाथ भग्नमन । नहीं शब्द कोई उनके आनन् ।।(२२०)

भावार्थ: कानिफनाथ क्रोधित होकर बोले, 'गोरखनाथ नियंत्रण में रहो। मेरे ज्ञान को कम नहीं आंको। मैंने पूर्ण तंत्र ज्ञान पाया है। मेरे गुरु सिद्धि के ज्ञाता हैं। बुद्धि में मछिन्द्रनाथ से कम नहीं हैं।' तब योगी गोरखनाथ बोले, ' कानिफनाथ, मेरे वचन सुनो। दो ही संभावना हैं। प्रथम तुम्हें ज्ञान नहीं दिया, या (द्वितीय) स्वयं ज्ञान में निपुण नहीं हैं जो तुम्हें पूर्ण विज्ञान सिखा सकते। मुझे दूसरी संभावना लगती है। मेरे गुरु के समान विलक्षण नहीं हैं। वह (जालन्धर) सम्राट गोपीनाथ के बंधक हैं। वह साधक अत्यंत कष्ट पा रहे हैं। यदि सिद्धि में पूर्ण हुए होते तब बुद्धि का प्रयोग कर वह मुक्त हो जाते। दस वर्ष से वह बंधक हैं। हे सिद्धक, जाओ और अपने नेत्रों से देखो। तुम हेलापट्टन राजा गोपीनाथ के नगर जाओ।' यह सुनकर कानिफनाथ भ्रमित हो गए। उनके मुख से शब्द नहीं निकल रहे थे।

बोले आगे गोरखनाथ महन । देखना चाहो शक्ति महस्विन् ।।
करूँ आम्र मैं वृक्ष सलंग्न । समझो तब गुरु ओजस्विन् ।।(२२१)
हो विस्मित बोले कानिफनाथ । यदि कर सको यह तुम नाथ ।।
मानूँ मैं तुम हो श्रेष्ठतर । मछिन्द्रनाथ गुरु उत्तमवर ।।(२२२)

भावार्थ: आगे महात्मा गोरखनाथ बोले, 'तुम महात्मा की शक्ति देखना चाहते हो? मैं आमों को वृक्ष पर दोबारा लगा सकता हूँ। तब गुरु के ओज को समझ पाओगे।' अचंभित कानिफनाथ बोले, 'हे नाथ (नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी), यदि तुम ऐसा कर सको तो मैं तुम्हें अपने से श्रेष्ठ और मछिन्द्रनाथ को उत्कृष्ट गुरु मानूंगा।'

गोरखनाथ तब हो अधीनस्थ ।किया प्रयोग प्रेरणास्थ ।।
डाली आमों पर भस्म पावन ।उड़े फल तुरंत तब संग पवन ।। (२२३)
गए ओर वृक्ष और हुए संलग्न ।जैसे लगे पूर्ववत शाखिन् ।।
हुए अति विस्मित कानिफनाथ ।कैसे किए यह गोरखनाथ ।।(२२४)

भावार्थ: गोरखनाथ ने तब नियंत्रित हो प्रेरणास्थ (मन्त्र) का प्रयोग किया। आमों पर पवित्र भस्म डाली। वायु के साथ तब फल तुरंत उड़ने लगे और वृक्ष की ओर जा पूर्ववत शाखाओं में लग गए। यह देख कानिफनाथ अचंभित हुए। (और सोचने लगे) गोरखनाथ ने यह कैसे किया?

करबद्ध बोले तब कानिफनाथ ।करो क्षमा तुम महत नाथ ।।
हुई भूल नहीं समझ सका ।हो आप उत्कृष्ट तंत्रका ।।(२२५)
है मम शिक्षा अभी असिद्ध ।ढूँढूँ जालंधर सुजन बुद्ध ।।
जाऊं मैं नगर हेलापट्टन ।करूँ प्रयास हों मुक्त महन ।।(२२६)

भावार्थ: करबद्ध तब कानिफनाथ बोले, 'हे महात्मा नाथ, क्षमा करो। भूल हुई, समझ नहीं सका कि आप उत्कृष्ट तांत्रिक हैं। मेरी शिक्षा अभी अपूर्ण है। मैं दयालु बुद्धिमान जालंधर को ढूंढूंगा। मैं हेलापट्टन नगर जाऊंगा और महात्मा को मुक्त कराने का प्रयास करूँगा।'

न करो तुम पश्चाताप महन ।हुआ प्रसन्न मैं हेतु मिलन ।।
जाओ तुम अब हेलापट्टन ।होंगे सफल प्रयास कहे मन ।।(२२७)
मैं जाऊं अब तिरिया देश ।मिलें मुझे वहां गुरु सर्वेश ।।
तब लिए विदा गोरखनाथ ।हुए विगम तब कानिफनाथ ।।(२२८)

भावार्थः 'हे महात्मा, तुम पश्चाताप नहीं करो। में आपसे मिलकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। अब तुम हेलापट्टन जाओ। तुम्हारे प्रयास सफल होंगे, ऐसा मेरा मन कहता है। मैं दिव्य गुरु से मिलने तिरिया राज्य जाऊँगा।' गोरखनाथ ने तब विदा ली और वह कानिफनाथ से विगम हुए।

गोरखनाथ का तिरिया राज्य प्रस्थान

चले गोरखनाथ गुरु मेलन । पहुंचे तिरिया राज्य सीमन् ।।
करूँ कैसे मैं अंतर्गमन । है निषेध यहां नर निवेशन ।। (२२९)
हो आसीन तब एक ग्रावन् । करें विचार प्रवेश अध्वन् ।।
देखे तब एक रथ अति सुन्दर । आ रहा उन ओर शीघ्रतर ।। (२३०)

भावार्थ: गोरखनाथ गुरु से मिलने चले और तिरिया राज्य की सीमा पर पहुंच गए। पुरुषों का यहां अंदर जाना निषेध है, मैं कैसे प्रवेश करूँ, यह सोचते हुए एक पत्थर की शिला पर बैठ गए। तभी उन्होंने एक अत्यंत सुन्दर रथ को अपनी ओर तीव्र गति से आते देखा।

बैठीं थी कुछ नारी अंदर । सभी रम्य पर एक अति सुन्दर ।।
पहनी वस्त्र सम राजसुता । लिए हस्त सब वाद्य सुस्वरता ।। (२३१)
रुका वह रथ निकट साधक । उतरीं वहां वह हेतु शयानक ।।
गोरखनाथ गए निकट नारि । पूछे हैं वह कौन सुनारि ।। (२३२)
आईं कहाँ से कौन निवास । जाएं कहाँ कौन नववास ।।
बोलीं तब प्रमुख कुलीन । ऊधर राज्य की हम वासीन ।। (२३३)
जा रहीं हम तिरिया देश । पूछ रहे हैं क्यों संतेश ।।
है क्या लक्ष्य आपका गमन । पूछे तब गोरखनाथ महन ।। (२३४)

भावार्थ: (उस रथ के) अंदर कुछ नारियां बैठी थीं। सभी रम्य थीं परन्तु एक अति सुन्दर थीं। वह राजकुमारियों जैसे वस्त्र पहनी थीं और हाथों में संगीत वाद्य लिए हुईं थीं। वह रथ उन साधक (गोरखनाथ) के समीप रुका। वह वहां विश्राम हेतु उतरीं। गोरखनाथ उन स्त्रियों के निकट पहुंचे और पूछा कि वह सुन्दर स्त्रियां कौन हैं, कहाँ से आईं हैं? उनका निवास कहाँ है? कौन से नए स्थान को जा रही हैं? तब प्रमुख नारी बोली, 'हम ऊधर राज्य की निवासन हैं। तिरिया राज्य जा रहीं हैं। हे श्रेष्ठ संत, यह आप क्यों पूछ रहे हैं?' तब गोरखनाथ पूछे, 'आपका (तिरिया राज्य) जाने का लक्ष्य क्या है?'

बोलीं प्रमुख नारि हे महन । हेतु संगीत कला प्रदर्शन ।।
रानी मैनाकिनी राष्टक । हैं संगीत कला अति रुचिक ।। (२३५)
पर नहीं अनुमति पुरुषवर । करें प्रवेश राज्य मान्यवर ।।
हेतु इस करें केवल वनिता । संगीत कला उत्तरपक्षता ।। (२३६)

भावार्थ: प्रमुख नारी बोलीं ,'हे महात्मा, संगीत कला के प्रदर्शन हेतु। इस देश की रानी मैनाकिनी संगीत कला की प्रेमी हैं। हे मान्यवर, पुरुषों को राज्य में प्रवेश की अनुमति नहीं है, इस कारण केवल नारियां ही संगीत कला का प्रदर्शन करती हैं।'

है उचित हे कुलीन वनिता । क्या नाम आपका मान्यता ।।
पूछे गोरखनाथ सह कुतुक । क्या है आपकी वृत्ति सश्रिक ।। (२३७)
नाम कलिंगरानी हे महन । है वृत्ति नृत्य और गायन ।।
और क्या चाहो तुम पूछना । लगते अति उत्सुक महामना ।। (२३८)

भावार्थ: तब उत्सुकता पूर्वक गोरखनाथ पूछे, 'हे कुलीन नारी, '(यह जो भी कहा) उचित है। हे सम्माननीय, आपका नाम क्या है और हे सुंदरी, आपका व्यवसाय क्या है?' (सुन्दरी ने उत्तर दिया) 'हे महात्मा, (मेरा) नाम कलिंगरानी है। मेरा व्यवसाय नृत्य और गायन है। और क्या पूछना चाहते हो? हे महात्मा, अति उत्सुक लगते हो।'

कहे तब विनम्र गोरखनाथ । हूँ मैं संत सम्प्रदाय नाथ ।।
हैं यह आपके निज विषय । नहीं मेरी रूचि कला प्रज्ञ ।। (२३९)
करूँ आपसे बस एक विनती । ले चलो संग मुझे रूपवती ।।
जाना चाहूँ तिरिया राज्य । मिलने एक विशेष जन प्राज्ञ ।। (२४०)

भावार्थ: विनम्र गोरखनाथ तब बोले, 'मैं नाथ सम्प्रदाय का एक संत हूँ। हे कला निपुण, यह सब आपके निजी विषय हैं, इनमें मेरी रूचि नहीं है। हे रूपवती, मैं आपसे एक विनती करता हूँ। मुझे अपने साथ ले चलो। मैं एक विशेष प्रमत व्यक्ति से मिलने तिरिया राज्य जाना चाहता हूँ।

हंसने लगीं तब कलिंगरानी । हो पुरुष आप अति मानी ।।
पर जाना चाहो भू अवदत् । हैं जहां केवल नारि अनुमत ।। (२४१)
क्या यह प्रभाव भाव काम । नहीं अपवाद साधु निष्काम ।।
बोले तब विनम्र महात्मा । हूँ मैं बाल ब्रह्मचारी माँ ।। (२४२)
चाहूँ मैं राज्य अवलोकन । और मिलना प्राज्ञ नगरजन ।।
मिल जाए दो समय भोजन । है बस यही मेरा एक मन्मन् ।। (२४३)

भावार्थ: तब कलिंगरानी हंसने लगीं (और बोलीं), 'आप प्रतिष्ठित पुरुष हो और उस सुन्दर भूमि जाना चाहते हो जहाँ केवल नारियों को अनुमति है। क्या यह काम का प्रभाव है जहां निष्काम साधु भी अपवाद नहीं हैं?' तब विनम्र महात्मा बोले, 'माता, मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ। मैं राज्य को देखना और वहां के प्राज्ञ नगरवासियों से मिलना चाहता हूँ। बस दो समय का भोजन मिल जाए, मेरी तो बस यही एक इच्छा है।'

कीं विचार तब वह नारिवर । मिले हेतु भोजन कर्मकर ।।
है उचित बोलीं तब वादक । पर कैसे संभव प्रवेश साधक ।। (२४४)
पूछे तब विनम्र योगीवर । है क्या कारण जो निषेध नर ।।
बोलीं कलिंगरानी हे महन । सुना आते वहां पुत्र-पवन ।। (२४५)
सुने यदि नर उनकी गर्जन । होता मरण उसका तत्क्षन ।।
सुन गर्जन हों नारि गर्भिनी । दें जन्म वह केवल दुहितृनी ।। (२४६)
किंचित वातावरण स्थापन । दे जन्म नारि करे नर मरन ।।
सुन यह बोले योगी महन । अवश्य है उपचार इस विघ्न ।। (२४७)

भावार्थ: तब श्रेष्ठ नारी ने विचार किया कि केवल भोजन पर कार्य करने वाला मिल जाएगा। तब वह वादक बोलीं, 'उचित है। लेकिन साधक, वहां प्रवेश कैसे संभव होगा?' तब योगी ने विनम्रता से पूछा कि क्या कारण है जो पुरुष निषेध हैं। तब कलिंगरानी बोलीं, 'हे महात्मा, सुना है कि वहां हनुमान जी आते हैं। यदि पुरुष उनकी गर्जन सुन ले तो तत्क्षण उसका मरण हो जाता है। उनकी गर्जन सुन नारी गर्भवती हो जाती हैं और केवल पुत्री को ही जन्म देती हैं। उस स्थल का वातावरण ऐसा है कि नारियों का जन्म और पुरुषों का मरण होता है।' यह सुनकर महात्मा योगी बोले, 'इस समस्या का समाधान मेरे पास है।'

क्या उपचार तुम्हारे मन। करो साझा हमसे हे महन।।
बोलीं विस्मित कलिंग रम्या। बोले तब महात्मा प्रज्ञा।।(२४८)
हे सुंदरी मैं वैरागी संत। नहीं अर्थकर कोई हनुमंत।।
कर प्रयोग मम योग दिव्य। करूँ परवर्तित तन स्त्रीत्व।।(२४९)
नहीं पहचान सकें सुत-पवन। करूँ प्रवेश इस पथ पट्टन।।
लगता उचित यह संत महन। करोगे कैसे रुध हनु गर्जन।।(२५०)
पूछीं तब कलिंग सुदर्शना। बोले तब विनम्र महामना।।
नहीं करो तुम उसका चिंतन। न हो हानि बिन मम मन्मन्।।(२५१)

भावार्थ: विस्मित कलिंग रानी बोलीं, 'हे महात्मा, आपके मन में क्या उपचार है, हमसे साझा कीजिए।' तब बुद्धिमान महात्मा बोले, 'हे सुंदरी, मैं वैरागी हूँ। हनुमान जी के किसी कार्य का नहीं हूँ। अपने दिव्य योग का प्रयोग कर (मैं अपने) शरीर को स्त्री का बना लूंगा। हनुमान भी नहीं पहचान सकते। इस मार्ग से मैं नगर में प्रवेश करूंगा।' तब सुंदरी कलिंग रानी बोलीं, 'हे महात्मा, यह उचित लगता है। पर हनुमान जी की गर्जन को कैसे रोकोगे?' तब विनम्र महात्मा बोले, 'उसकी चिंता तुम मत करो। मेरी इच्छा के बिना मेरी हानि नहीं हो सकती।'

है अवश्य उचित आपका कथन। क्या समझूँ हैं आप निष्पन्न।।
कहो अब अग्रिम प्रयोजन। बोलीं कलिंग निपुण गायन।।(२५२)
कहे तब विनम्र योगी महन। करो सम्मिलित मुझे स्व-गन।।
चलूँगा संग मैं मण्डलिका। युक्त वाद्य बनकर वादका।।(२५३)
बोलीं हंसकर तब गायिका। है नितांत कल्प हेतु गाथका।।
हो तुम एक साधु परतज्यकी। जानो क्या तुम कला गायकी।।(२५४)

भावार्थ: गायन में निपुण कलिंग रानी बोलीं, 'आपका कथन अवश्य उचित है। क्या मैं समझूँ कि आप (हमारे साथ आने के लिए) तैयार हैं। अगली योजना क्या है?' तब विनम्र योगी महात्मा बोले, 'मुझे अपने समूह में सम्मिलित कर लो। मैं आपके समूह में वाद्य के साथ वादका बनकर चलूँगा।' तब हंसकर गायिका (कलिंग रानी) बोलीं, 'गायक के लिए अभ्यास करना आवश्यक है। आप एक वैरागी साधु हैं। गायकी कला को क्या जानें?'

बोले तब गोरखनाथ महत।हूँ मैं वादक गायक अत्युत्त।।
करूँ इसका अभी प्रदर्शन।चाहो यदि हे निपुण गायन।।(२५५)
है उचित देखें हम निपुणता।बोलीं तब कलिंग सहजता।।
लिए महंत तब कर भस्म पावन।लगाई मस्तक कर गुरु स्मरन।।(२५६)
लिए हस्त वीणा हेतु वादन।किए गन्धर्व विद्या आवाहन।।
किए प्रारम्भ सप्त सुर गायन।छाया सब नारि सम्मोहन।।(२५७)

भावार्थ: तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'मैं उत्कृष्ट गायक और वादक हूँ। हे गायकी में निपुण (कलिंग रानी), यदि आप चाहो तो मैं इसका प्रदर्शन कर सकता हूँ।' तब कलिंग रानी विनम्रता से बोलीं, 'उचित है। हम आपकी निपुणता देखेंगे।' तब महात्मा ने हाथ में पवित्र भस्म लेकर एवं गुरु का स्मरण कर मस्तक पर लगाई। वादन के लिए वीणा हाथ में ली और गन्धर्व विद्या का आवाहन किया। सप्त सुर में गाना प्रारम्भ किया। सभी नारियां मंत्रमुग्ध हो गईं।

हुईं कलिंगरानी प्रसन्न।भर आए अश्रु उनके नयन।।
नहीं कोई आपके समान।हो भावुक बोलीं हे महान।।(२५८)
हो आप अति निपुण वादक।होंगी मैनाकनी सम्मोहक।।
देंगी वह आपको पुरस्कार।बने धन जीवन सुखाधार।।(२५९)
हो सम्मिलित आप हमारे गन।है क्या आपका नाम हे महन।।
बोले तब छिपा स्व-नाम ब्रह्म।नाम मेरा है माँ पुरवर्दम।।(२६०)

भावार्थ: कलिंग रानी प्रसन्न हुईं। उनके नेत्रों में जल भर आया। भावुक होकर बोलीं, 'हे महात्मा, आपके समान कोई नहीं है। आप संगीत में अत्यंत निपुण हैं। मैनाकिनी मंत्रमुग्ध हो जाएँगी। वह आपको पुरस्कार देंगी। वह धन आपके जीवन में सुख लाएगा। आप हमारे समूह में सम्मिलित हो जाओ। हे महात्मा, आपका नाम क्या है?' तब महात्मा अपना परिचय छुपाते हुए बोले, ' माँ, मेरा नाम पुरवर्दम है।'

बोलीं कलिंग हे महाराज।बन रथ सारथी चलो आज।।
चला रथ तब तिरिया भुवन।पहुंचा चिन्नपटना पट्टन।।(२६१)
था सायं काल रवि विनिवेश।रोका रथ हेतु सन्निवेश।।
पकाए और पाए सब भोजन।गईं तब सब नारि हेतु शयन।।(२६२)

पूछीं तब कनिंग सुदर्शना । क्या संत इच्छा हेतु संलयना ।।
बोले तब गोरखनाथ महन । नहीं हो रही इच्छा शयन ।। (२६३)
यदि आएंगी देवी निद्रा । करूँ शयन मैं आसित मुद्रा ।।
समझो सुंदरी योगीमत । रहते वह सदा शयन जाग्रत ।। (२६४)

भावार्थ: कलिंग (रानी) बोलीं, 'हे महाराज, आज हमारे रथ सारथी बन (कर) चलो। तब रथ तिरिया राज्य चला और चिन्नपटना राजधानी पहुँच गया। वह सूर्य अस्त का सायं समय था। तब शिविर स्थापन हेतु रथ रोका। भोजन पकाया और खाया। उसके पश्चात सभी नारियां शयन हेतु चली गईं। तब सुंदरी कलिंग (रानी) ने (गोरखनाथ से) पूछा, 'हे संत, क्या शयन की इच्छा है?' तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'शयन की इच्छा नहीं हो रही। यदि निद्रा देवी आएंगी तो मैं बैठे ही सो जाऊँगा। हे सुंदरी, योगी की विचारधारा समझो। वह सदा शयन और जाग्रत (दोनों ही अवस्था में) रहते हैं।'

नहीं समझीं कुछ गायिका । गईं वह हेतु शयन सदनिका ।।
थे गोरखनाथ दशा जागरण । डूबे विचार अग्रिम चरण ।। (२६५)
कैसे हो गुरुदेव मिलन । आया तब विचार उनके मन ।।
करूँ कुछ न कर सकें प्रवेश । इस राज्य में श्री वानरेश ।। (२६६)
हो सका यदि सफल विचिन्तन । कर सकूं परिस्थिति नियंत्रन ।।
कर विचार हृदय विधान । हो गए निश्चिंत तब वह महान ।। (२६७)

भावार्थ: गायिका (कलिंग रानी) कुछ नहीं समझीं। वह शयन हेतु कक्ष में चली गईं। गोरखनाथ जाग्रत रहे। अगला कदम सोचने लगे जिससे गुरुदेव (मछिन्द्रनाथ) उन्हें मिलें। उनके मन में एक विचार आया। मैं कुछ ऐसा करूँ कि हनुमान जी इस राज्य में प्रवेश न कर पाएं। यदि यह विचार सफल हुआ तो परिस्थिति नियंत्रण में कर सकता हूँ। हृदय में विधि सोचते हुए तब महात्मा निश्चिंत हो गए।

श्री राम और हनुमान जी से मिलन

है निवास स्थाई हनुमान । सेतुबंध रामेश्वर स्थान ।।
पर आते तिरिया प्रति रात । हेतु गर्जन हो घोर आघात ।। (२६८)
गोरखनाथ किए तब विचार । रोकूं मैं हनु प्रवेश द्वार ।।
हेतु बज्र अस्त्र की क्षेमा । चहुँ ओर सीमान्त परिमा ।। (२६९)

भावार्थ: हनुमान जो का स्थाई निवास सेतुबंध रामेश्वर स्थान है, परन्तु वह प्रति रात्रि तिरिया (राज्य) आते थे। (अपनी) गर्जन से घोर आघात पहुंचाते थे। गोरखनाथ ने तब विचार किया कि मैं हनुमान जी को द्वार पर रोकूं। चारों ओर उन्होंने (राज्य की) सीमा परिधि की बज्र अस्त्र से सुरक्षा की।

आए जब रात को हनुमंता । बज्र अस्त्र से हुई विघ्नता ।।
न कर सके प्रवेश अन्तः सीमा । हो कर क्षुब्ध गिरे भूमिमाँ ।। (२७०)
किए तब गोरखनाथ प्रयोग । अन्य दिव्य शस्त्र हेतु योग ।।
किए वह स्पर्श अस्त्र से तन । निष्क्रिय श्री अंजनिनंदन ।। (२७१)
मोहन अस्त्र से हुए सम्मोहित । नहीं कर सकें गति हनुमत ।।
फिर किया नाग अस्त्र प्रहार । बंधे नाग पाश कपि आधार ।। (२७२)

भावार्थ: जब रात्रि को हनुमान जी आए तो बज्र अस्त्र से उन्हें विघ्नता हुई। वह (राज्य की) सीमा के अंदर प्रवेश नहीं कर पाए। क्षुब्ध होकर भूमि माँ पर गिर पड़े। तब गोरखनाथ ने अपने योग के प्रभाव से अन्य दिव्य अस्त्रों का प्रयोग किया। स्पर्श अस्त्र से उन्होंने हनुमान जी के शरीर को निष्क्रिय बना दिया। मोहन अस्त्र से उन्हें सम्मोहित कर दिया जिससे हनुमान जी गति विहीन हो गए। फिर नाग अस्त्र के प्रहार से हनुमान जी को नाग पाश में बाँध दिया।

फिर किए गोरखनाथ प्रयोग । प्रक्षेप अस्त्र हेतु शक्ति योग ।।
हुआ अंतर्धान उनका तन । सीमा बाह्य तिरिया भुवन ।। (२७३)
हुए जब सचेत श्री हनुमान । न लगा सके इसका अनुमान ।।
पुकारे तब वह श्री राम । आए तुरंत त्रिलोकात्म ।। (२७४)

भावार्थ: तब गोरखनाथ ने योग शक्ति से प्रक्षेप अस्त्र का प्रयोग किया जिससे उनका (हनुमान जी) शरीर तिरिया भूमि की सीमा से बाहर अंतर्धान हो गया। जब हनुमान जी सचेत हुए, वह इसके कारण का अनुमान नहीं लगा सके। तब उन्होंने श्री राम को पुकारा। तीनों लोकों की आत्मा (प्रभु) तुरंत आ गए।

देख दयनीय दशा हनुमान । बोले व्यथित राम भगवान् ।।
हेतु क्या इस दशा हनुमंत । बोले तब पवन पुत्र हे अनंत ।। (२७५)
हुआ अहत दिव्यास्त्र भगवन । न जानूं किए कौन प्रतिबंधन ।।
किए हरि जाग्रत दिव्य नयन । जाने तुरंत हेतु इस घटन ।। (२७६)

भावार्थ: हनुमान जी की दयनीय दशा देख कर व्यथित भगवान् राम बोले, 'हे हनुमान, इस दशा का कारण क्या है?' तब पवन पुत्र बोले, 'हे अनंत भगवान्, दिव्यास्त्रों से मुझ पर आक्रमण किया गया है। किसने यह किया, मुझे ज्ञान नहीं है।' तब भगवान् ने अपनी दिव्य दृष्टि को जाग्रत किया और तुरंत सब घटना जान गए।

बोले श्री राम हे हनुमन । नहीं शक्ति यह किसी दुर्जन ।।
है यह कृत्य एक सिद्ध भूजन । जो युक्त गुरु आशीर्वचन ।। (२७७)
क्रोधित बोले तब पुत्र-पवन । बतलाओ तुरंत नाम भगवन ।।
दूँ मैं उसे दंड इस कृत्य । नहीं कर सके साहस भविष्य ।। (२७८)

भावार्थ: श्री राम बोले, 'हे हनुमान, यह किसी दुष्ट की शक्ति नहीं है। यह कार्य एक सिद्ध प्राणी का है जिसे गुरु का आशीर्वाद प्राप्त है।' तब क्रोधित होकर हनुमान बोले, 'हे भगवान्, मुझे तुरंत उसका नाम बतलाओ। मैं उसे इस कृत्य का ऐसा दंड दूंगा कि भविष्य में कभी साहस न कर सके।

हंसकर बोले तब श्री भगवन । हो शांत हे प्रिय पुत्र-पवन ।।
करो हर कृत्य सोच समझकर । अन्यथा हो अनुताप प्रियवर ।। (२७९)
समझो तुम शक्ति अतिपात जन । पूर्व तत्पर हेतु अभिपतन ।।
करबद्ध बोले तब हनुमंत । कहो शक्ति प्रतिपक्ष अनंत ।। (२८०)

भावार्थ: हंसकर तब श्री भगवान् बोले, 'हे पवन पुत्र शांत हो जाओ। हर कार्य सोच समझ कर करो, अन्यथा हे प्रिय, पछताओगे। आक्रमण के लिए तत्पर होने से पूर्व अपने विरोधी की शक्ति समझो।' तब करबद्ध हनुमान जी बोले, 'हे अनंत, मुझे विरोधी की शक्ति बतलाओ।'

बोले तब राम वचन धृतम् । है यह एक नाथ ज्ञानी ब्रह्म ।।
है अवतार यह देव महेश्वर । शिष्य मछिन्द्रनाथ योगेश्वर ।। (२८१)
नाम उसका गोरखनाथ । अति बलशाली बोधिनाथ ।।
सुन हुए विस्मित हनुमान । बोले सहज तब हे भगवान् ।। (२८२)
मछिन्द्रनाथ रहते तिरिया । करें भोग विलास क्रिया ।।
यह शिष्य उनका गोरखनाथ । बना कैसे अत्यंत बलनाथ ।। (२८३)

भावार्थ: तब राम गंभीर वचन बोले, 'यह एक नाथ है जो ब्रह्म-ज्ञानी है। यह शिव शंकर का अवतार है। योगेश्वर मछिन्द्रनाथ का शिष्य है। उसका नाम गोरखनाथ है। वह अत्यंत ज्ञानी और बलशाली है। आश्चर्य से तब सहज ही हनुमान जी बोले, 'हे भगवान्, मछिन्द्रनाथ तो तिरिया (राज्य) में रहते हैं। वह भोग विलास में लिप्त हैं। यह उनका शिष्य गोरखनाथ इतना बलशाली कैसे बन गया?'

बोले हरि तुम ज्ञानी पुत्र । समझते महिमा ध्यान मन्त्र ।।
क्या नहीं संभव हेतु योग । नहीं कोई सम जन युक्त योग ।। (२८४)
पूछे तब दैत्यकुलान्तक । हैं अनेक साधक उपासक ।।
है क्यों यह योगी विलक्षन । नहीं समान कोई इस भूजन ।। (२८५)

भावार्थ: भगवान् बोले, 'हे पुत्र, तुम ज्ञानी हो। ध्यान मन्त्र की महिमा समझते हो। योग के माध्यम से क्या संभव नहीं है? योगी के समान कोई प्राणी नहीं है।' तब दैत्यकुलान्तक (हनुमान जी) पूछे, '(हे प्रभु) अनेक साधक और उपासक हैं। यह योगी इतना विलक्षण क्यों है कि इसके समान कोई प्राणी नहीं है।'

बोले श्री राम मधुर वचन । है यह विधि विधान स्नेहन ।।
पर है यह आलाप महत । नहीं लक्ष्य इस योगी कृत ।। (२८६)

कि करें अपमान आपका। चाहें वह स्वातन्य गुरु का।।
फंसे मछिन्द्रनाथ दलदल। किए गोरखनाथ हेतु हलचल।।(२८७)
ताकि करो तुम मदद महन। नहीं डालो कोई पथ विघ्न।।
बोले हनुमान तब हे भगवन। करती हुई मम आज्ञा पालन।।(२८८)
कर रहीं मैनाकिनी सेवा। मछिन्द्रनाथ योगी सम देवा।।
थी यह इच्छा नृपाङ्गना। हो क्लेश यदि मुक्त महामना।।(२८९)

भावार्थ: श्री राम मधुर वचन बोले, 'हे प्रिय, यह प्रभु का विधान है। परन्तु महत्वपूर्ण बात है कि इस योगी का कृत्य तुम्हारा अपमान करने का नहीं है। वह केवल अपने गुरु की मुक्ति चाहते हैं। मछिन्द्रनाथ दलदल में फंसे हैं। गोरखनाथ ने यह चमत्कार इसलिए किया है कि तुम उनकी मदद करो। मार्ग में कोई विघ्न नहीं डालो।' तब हनुमान बोले, 'हे भगवन, मेरी आज्ञा का पालन करते हुए मैनाकिनी योगी मछिन्द्रनाथ की सेवा कर रहीं हैं। यह रानी की इच्छा थी। यदि महात्मा मुक्त हुए, तब समस्या होगी।'

बोले तब श्री राम भगवन। नहीं संभव यह अब पुत्र-पवन।।
है दृढ़ संकल्प गोरखनाथ। करें मुक्त गुरु मछिन्द्रनाथ।।(२९०)
बोले तब करबद्ध हनुमान। हो सहाय मम कार्य भगवान्।।
चलो मम संग निकट महात्मा। समझाएं आप हे परमात्मा।।(२९१)
छोड़ें हठ वह योगी मुक्ति। है हेतु इस कृत्य अति महति।।
पूछे तब श्री राम भगवन। कैसे जाएं हम समक्ष महन।।(२९२)

भावार्थ: तब श्री राम बोले, 'पवन-पुत्र, यह अब संभव नहीं है। गोरखनाथ का दृढ़ संकल्प है कि वह गुरु मछिन्द्रनाथ को मुक्त कराएं।' तब करबद्ध हनुमान जी बोले, 'हे भगवान्, आप मेरी सहायता करें। आप उन्हें समझाएं कि वह योगी की मुक्ति की हठ छोड़ दें। (योगी मछिन्द्रनाथ का मैनाकिनी के पास रहने का कृत्य) इस कृत्य का कारण अत्यंत महत्वपूर्ण है। तब भगवान् श्री राम पूछे, 'हम महात्मा के निकट कैसे जाएं?'

कर विचार फिर बोले भगवन। जाएं रूप ब्राह्मण प्रच्छन्न।।
है उचित यह बोले हनुमान। धरे तब रूप विप्र द्वि महान।।(२९३)

पहुंचे शीघ्र वह चिन्नपट्टन। निकट योगी गोरखनाथ महन।।
बैठे योगी अदम्भ पद्मासन। कलिंग आदि थीं मुद्रा शयन।।(२९४)

भावार्थ: कुछ सोच कर भगवान् बोले, 'हम ब्राह्मण के रूप वेशान्तर में जाएं। 'यह उचित है', ऐसा हनुमान जी बोले। तब दोनों उत्कृष्ट ब्राह्मण का रूप धरे और शीघ्र ही चिन्नपट्टण (नगर) महात्मा योगी गोरखनाथ के निकट पहुंचे। योगी सीधे पद्मासन में बैठे थे। कलिंग आदि (नारियां) शयन मुद्रा में थीं (सो रहीं थीं)।

था समय वह गत रात्रि मध्य। था वातावरण अति सौम्य।।
थे अति विस्मित योगी दिव्य। आया कौन इस काल शर्य।।(२९५)
किया उन्होंने अवरुद्ध रध्य। कौन कर सके प्रवेश राज्य।।
फिर भी उठे वह अपने आसन। किए तब हार्दिक अभिनंदन।।(२९६)

भावार्थ: वह अर्ध रात्रि के बाद का समय था। वातावरण अति शांत था। दिव्य योगी (गोरखनाथ) आश्चर्यचकित थे। इस रात्रि काल कौन आया है? उन्होंने सभी मार्ग अवरुद्ध कर रखे हैं फिर इन्हें राज्य में प्रवेश कैसे मिला? फिर भी वह अपने आसन से उठे और तब हार्दिक अभिनंदन किया।

बिठलाया निकट स्व-आसन। हैं कौन आप ब्राह्मण महन।।
आए कहाँ से क्या प्रयोजन। विनम्र गोरखनाथ कहे वचन।।(२९७)
बोले हरि ब्राह्मण निरूपन। सुनो योगी हमारा निवेदन।।
है एक महत्वपूर्ण कार्य। कर सकें आप उत्कृष्ट आर्य।।(२९८)
यदि दें आप मदद हेतु वचन। करें तब हम विस्तार वर्णन।।
हुआ संदेह तब मस्तक महन। नहीं उचित अविचार्य वचन।।(२९९)

भावार्थ: अपने आसन के निकट (ब्राह्मणों को) बिठलाया, फिर विनम्र गोरखनाथ बोले, 'हे ब्राह्मण, आप कौन हैं? कहाँ से आए हैं? क्या लक्ष्य है?' तब ब्राह्मण रूप भगवान् बोले, 'हे योगी, हमारा निवेदन सुनो। एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसे आप उत्कृष्ट आर्य कर सकते हैं। यदि आप हमारी मदद करने का वचन दें, तब हम विस्तारपूर्वक वर्णन करें।' तब महात्मा (गोरखनाथ) के मस्तिष्क में संदेह हुआ। बिना विचार किए वचन देना उचित नहीं है।

बोले करबद्ध विनम्र महत । दूंगा वचन अवश्य देवव्रत ।।
पर दो पहले अपना परिचय । हैं कौन आप दीप्त दैव्य ।। (३००)
बोले तब विनम्र भगवान् । हूँ मैं राम संग हनुमान ।।
बोले गोरखनाथ पड़ चरन । हूँ मैं सुभग पाया दर्शन ।। (३०१)
हूँ मैं एक सामान्य भूजन । और आप ईश्वर त्रिभुवन ।।
करो मेरा उद्धार भगवन । करूँ कोटि कोटि मैं नमन ।। (३०२)

भावार्थ: करबद्ध विनम्र महात्मा (गोरखनाथ) बोले, 'हे पवित्र आत्मा, वचन अवश्य दूंगा, परन्तु पहले आप अपना परिचय दें। आप कौन दीप्त दैव्य (पुरुष) हैं?' तब विनम्र भगवान् बोले, 'मैं राम हूँ और यह साथ में हनुमान हैं।' तब गोरखनाथ (प्रभु के) चरण पड़ कर बोले, 'मैं सौभाग्यशाली हूँ जो आपके दर्शन पाया। मैं एक सामान्य प्राणी हूँ और आप तीनों लोकों के स्वामी हैं। हे भगवान्, मेरा उद्धार करो। मैं आपको कोटि कोटि नमन करता हूँ।'

दिया हमने अपना परिचय । दो अब आप वचन महत दिव्य ।।
सुने अति प्रिय वचन भगवंत । बोले तब गोरखनाथ संत ।। (३०३)
हे प्रभु हैं आप जगतेश्वर । करूँ जो हो उचित महेश्वर ।।
दें आज्ञा है क्या प्रयोजन । तब बोले हरि कहो पुत्र-पवन ।। (३०४)

भावार्थ: 'हमने अपना परिचय दिया। हे दिव्य महात्मा, अब आप वचन दें।' प्रभु के प्रिय वचन सुनकर संत गोरखनाथ बोले, 'हे प्रभु, आप विश्व के स्वामी हैं। जो उचित हो, प्रभु वही करूंगा। क्या लक्ष्य है? आज्ञा दें।' तब भगवान् ने हनुमान जी से (प्रयोजन) बताने को कहा।

पा आज्ञा श्री राम भगवान् । हो विनम्र बोले हनुमान ।।
हे योगी कहे राम भगवन । मछिन्द्रनाथ आपके मानन ।। (३०५)
गुरु और जनयित्र महन । है लक्ष्य आपका उनका मोचन ।।
आए तिरिया हेतु इस लक्ष्य । नहीं संभव यह हे महत दिव्य ।। (३०६)
मछिन्द्रनाथ यहां हेतु मम । कर रहे पालन मेरा अनुक्रम ।।
अतः न करो तुम हठ निरर्थक । जाओ वापस गृह हे साधक ।। (३०७)

भावार्थ: श्री राम भगवान् की आज्ञा पाकर हनुमान जी विनम्रता से बोले, 'हे योगी, भगवान् राम ने बतलाया कि मछिन्द्रनाथ आपके अति पूजित गुरु और महान जनयित्र (माता पिता) हैं। आपका लक्ष्य उनको मुक्ति दिलाना है। इसी लक्ष्य के कारण आप तिरिया (राज्य) आए हैं। हे दिव्य महात्मा, यह संभव नहीं है। मछिन्द्रनाथ यहां मेरे कारण हैं और मेरी आज्ञा का पालन कर रहे हैं। अतः तुम निरर्थक हठ न करो। हे साधक, अपने घर वापस जाओ।'

करबद्ध बोले तब गोरखनाथ । सुनो अंजनी सुत मेरे नाथ ।।
नहीं मेरे गुरु विषयासक्त । वह योगी वैरागी अनासक्त ।। (३०८)
क्या है यह उचित हेतु महन । भोग रहे हैं आसक्त जीवन ।।
हेतु आपकी आज्ञा पालन । नहीं कर पा रहे ध्यान मनन ।। (३०९)
होगा अवमत सम्प्रदाय नाथ । करो उन्हें मुक्त हे जगनाथ ।।
करने लगे हनुमान चिन्तन् । बोले गोरखनाथ तब वचन ।। (३१०)

भावार्थ: करबद्ध तब गोरखनाथ बोले, 'हे मेरे स्वामी अंजनी पुत्र, सुनो। मेरे गुरु विषयों में डूबने वाले नहीं हैं। वह योगी, वैरागी और अनासक्त हैं। आपकी आज्ञा के कारण वह आसक्त जीवन भोग रहे हैं। क्या यह महात्मा के लिए उचित है? वह ध्यान साधना नहीं कर पा रहे हैं। इससे नाथ सम्प्रदाय की अवहेलना होगी। हे जग के स्वामी (हनुमान जी), उन्हें मुक्त कर दो। हनुमान जी प्रत्युत्तर देने लगे। तब गोरखनाथ जी वचन बोले।

करूँ करबद्ध मैं निवेदन । हो सहाय मम कार्य हनुमन ।।
है मेरा दृढ़ संकल्प महन । नहीं उचित यह वातावरन ।। (३११)
हेतु गुरु हे प्रिय भगवन । करूँ जो उचित अंजनी नंदन ।।
नहीं यह संभव बोले हनुमन । करो रण चाहो गुरु मोचन ।। (३१२)

भावार्थ: 'मैं करबद्ध विनती करता हूँ कि हे हनुमान, मेरे कार्य में सहायक हो। हे महात्मा, यह मेरा दृढ़ संकल्प है। यह वातावरण गुरु हेतु उचित नहीं है। हे प्रिय भगवन हनुमान जी, गुरु के लिए जो उचित है, (मैं) वह करूंगा।' हनुमान जी बोले, 'यह संभव नहीं है। गुरु की मुक्ति चाहते हो, तो युद्ध करो।'

बोले गोरखनाथ मधुर वचन । नहीं इच्छा प्रभु करूँ मैं रन ।।
यदि संभव यही एक पथिन् । हूँ तत्पर करूँ आज्ञा पालन ।। (३१३)
हुए अति क्रोधित हनुमान । बोले तब श्री राम भगवान् ।।
हो जाओ शांत पुत्र-पवन । नहीं होता क्रोध परिशोधन ।। (३१४)
करो उपयोग तुम सुनीति । क्या यह मैनाकिनी इच्छति ।।
हों पति मछिन्द्रनाथ महन । क्या दिए तुम कुछ ऐसा वचन ।। (३१५)

भावार्थ: तब गोरखनाथ मधुर वचन बोले, 'हे प्रभु, मेरी इच्छा युद्ध करने की नहीं है। यदि यही एक मार्ग संभव है, तो आज्ञा पालन हेतु तत्पर हूँ।' हनुमान जी अत्यंत क्रोधित हुए। तब भगवान् श्री राम बोले, 'हे पवन पुत्र शांत हो जाओ। क्रोध समाधान नहीं होता। अपनी बुद्धि का उपयोग करो। क्या मैनाकिनी की यह इच्छा थी कि महात्मा मछिन्द्रनाथ उसके पति हों? क्या तुमने ऐसा कोई वचन दिया था?'

हो गए शांत अंजनी नंदन । बोले नहीं दिए ऐसा वचन ।।
पूछे पुनः श्री राम भगवन । क्या दिए मछिन्द्रनाथ शासन ।। (३१६)
करें सदा तिरिया निवासन । कहें हनुमंत पुनः न भगवन ।।
तब हो रहे तुम क्यों क्रुद्ध । बोले प्रभु सुनो हे बुद्ध ।। (३१७)
कर आज्ञा आपकी पालन । किया वास यहां दीर्घ महन ।।
पर नहीं उन पर कोई बंधन । करें तिरिया सदा आवासन ।। (३१८)
अतः छोड़ो तुम यह निश्चय । करें मछिन्द्रनाथ यह निर्णय ।।
रहें यहां या अन्यत्र भुवन । न होगा भग्न आपका वचन ।। (३१९)

भावार्थ: हनुमान जी (तब) शांत हो गए और बोले कि मैंने ऐसा कोई वचन नहीं दिया। भगवान् श्री राम फिर पूछे कि क्या मछिन्द्रनाथ को ऐसा आदेश दिया था कि वह सदैव तिरिया (राज्य) में निवास करें? हनुमान जी ने इसको भी नकार दिया। तब भगवान् बोले, 'हे बुद्धिमान, सुनो। फिर तुम क्रोधित क्यों हो रहे हो? तुम्हारी आज्ञा का पालन करते हुए महात्मा योगी दीर्घ काल से यहां रह रहे हैं। उन पर कोई बंधन नहीं है कि वह तिरिया (राज्य) में सदैव निवास करें। अतः मछिन्द्रनाथ पर यह निश्चय छोड़ो कि वह यहां रहने का निर्णय करते हैं अथवा किसी और भूमि पर। इससे तुम्हारा वचन नहीं टूटेगा।'

हो शांत बोले तब हनुमान।है क्या मम दायित्व भगवान्।।
हंसकर बोले राम भगवन।जाओ मछिन्द्रनाथ सदन।।(३२०)
कहो पूर्ण वृतांत महत।और मैनाकिनी यह पक्वत।।
हुआ गोरखनाथ आगमन।हेतु गुरु-शिष्य पुनर्मिलन।।(३२१)

भावार्थ: शांत हो तब हनुमान बोले, 'हे प्रभु, मेरा क्या दायित्व है?' हंसकर तब भगवान् राम बोले, 'मछिन्द्रनाथ के निवास पर जाओ। उन महात्मा को पूर्ण वृतांत कहो। और मैनाकिनी को भी यह समाचार दो कि गोरखनाथ का आगमन गुरु-शिष्य के पुनर्मिलन हेतु हुआ है।'

हो हृदय तब अत्यंत प्रसन्न।पड़े गोरखनाथ द्वि दिव्य चरन।।
करबद्ध करें वह तब निवेदन।हैं आप हरि और हनु सुजन।।(३२२)
करें क्षमा मुझे सुत-पवन।हे दयालु आप राम भगवन।।
दिए तब द्वि दिव्य स्वस्त्ययन।हो कीर्तिमान तुम महन।।(३२३)
कर आज्ञा पालन भगवान्।चले तब योगी सदन हनुमान।।
था काल निशांत अति पावन।जल रहे दुर्ग अल्प द्योतन।।(३२४)

भावार्थ: हृदय में अत्यंत प्रसन्न होकर तब गोरखनाथ दोनों दिव्य (देवों) के चरण पड़े। करबद्ध तब निवेदन करने लगे, 'आप ईश्वर हैं और हनुमान जी दयालु हैं। हे दयालु भगवान् श्री राम और पवन पुत्र, मुझे क्षमा करें।' तब दोनों दिव्य (देवों) ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि हे महापुरुष (गोरखनाथ), तुम कीर्तिमान हो। भगवान् की आज्ञा का पालन कर तब हनुमान जी योगी (मछिन्द्रनाथ) के आवास की ओर चले। रात्रि के अंत का अत्यंत पवित्र काल था। दुर्ग में कुछ दीपक जल रहे थे।

धर सूक्ष्म रूप किए प्रवेश।दुर्ग अंदर श्री वानरेश।।
गए अग्र मैनाकिनी शाला।थीं गहन निद्रा में महिला।।(३२५)
जगाए उन्हें तब सुत पवन।देख समक्ष दिव्य पड़ीं चरन।।
करबद्ध बोलीं तब वह वचन। किया कष्ट किस हेतु भगवन।।(३२६)
होगी अवश्य कोई विशेषात्।आए शयन काल आप तात।।
हैं आप कृपालु मेरे रक्षक।कहो क्या आदेश निर्देशक।।(३२७)

भावार्थ: सूक्ष्म रूप धर कर हनुमान जी ने दुर्ग के अंदर प्रवेश किया। पहले वह मैनाकिनी के कक्ष में गए। सुंदरी वहां गहन निद्रा में थीं। हनुमान जी ने उन्हें जगाया। दिव्य (देव) को समक्ष देख वह उनके चरणों में गिर पड़ीं। करबद्ध तब वह बोलीं, 'हे भगवन, किस कारण कष्ट किया? कोई अवश्य ही विशेष बात होगी जो प्रभु शयन काल में आए। हे मेरे कृपालु रक्षक मार्गदर्शक, क्या आज्ञा है?'

सुनो मैनाकिनी मेरे वचन । नहीं होगा कोई कष्ट तन ।।
पर संभव मानसिक विकार । दूँ मैं जो तुम्हें समाचार ।। (३२८)
तुमने की मम गहन साधना । हुईं पूर्ण उस हेतु कामना ।।
किए मछिन्द्रनाथ अनुपालन । दिए तुम्हें हर यौन सुखन ।। (३२९)
कर रहे यहां निवास साधक । वर्ष द्वादस और दिए पुत्रक ।।
आए उनके शिष्य हेतु मिलन । गोरखनाथ जो योगी महन ।। (३३०)
हैं वह युक्त अप्रमेय शक्ति । लक्ष्य उनका हो गुरु मुक्ति ।।
नहीं किसी में है दाक्ष्य । रोक सके जो उनका निश्चय ।। (३३१)

भावार्थ: 'मैनाकिनी, मेरे वचन सुनो। मैं जो तुम्हें समाचार दूंगा, उससे तुम्हें कोई शारीरिक हानि नहीं होगी, लेकिन मानसिक कष्ट संभव है। तुमने मेरी गहन साधना की, जिस कारण तुम्हारी कामना पूर्ण हुई। मछिन्द्रनाथ ने मेरी आज्ञा का पालन करते हुए तुम्हें यौन सुख दिया। वह साधक बारह वर्ष से यहां वास कर रहे हैं। उनसे तुम्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई। अब उनके शिष्य गोरखनाथ जो महान योगी हैं, वह उनसे मिलने आए हैं। वह असीमित शक्ति के स्वामी हैं। उनका लक्ष्य है कि उनके गुरु की मुक्ति हो। किसी में इतना सामर्थ्य नहीं है कि उनके संकल्प को रोक सके।'

हुईं मैनाकिनी उद्विग्न । पड़ीं तुरंत हनुमान चरन ।।
बोलीं वह अति करुण वचन । है कठिन रह सकूं बिन महन ।। (३३२)
हैं मुझे मछिन्द्रनाथ प्रिय । होगा अवश्य मार्ग हे दिव्य ।।
रोक सकें हम मछिन्द्रनाथ । मानें कथन यह गोरखनाथ ।। (३३३)
यदि दें आप उन्हें प्रचोदन । नहीं वह टालें आपके वचन ।।
बोले हनुमंत सुन प्रिय वचन । नहीं संभव बदले शिष्य मन ।। (३३४)

भावार्थः मैनाकिनी चिंतित हो गईं। वह तुरंत हनुमान जी के चरण पड़ गईं। अति करुणा भरे वचन बोलीं, 'बिन महात्मा के मेरा रहना कठिन है। मुझे मछिन्द्रनाथ अति प्रिय हैं। हे दिव्य (हनुमान जी), कोई मार्ग अवश्य होगा जिससे मछिन्द्रनाथ को रोक सकें। गोरखनाथ यह कथन मान लें। यदि आप आज्ञा देंगे तो गोरखनाथ आपके आदेश को नहीं टालेंगे।' यह प्रिय वचन सुन हनुमान जी बोले, 'शिष्य का मन बदल जाए, ऐसी संभावना नहीं है।'

मानो यह सत्य मेरा कथन। किए प्रयास श्री राम भगवन ।।
है यह उनका दृढ़ संकल्प। जाएं संग गुरु न अन्य विकल्प ।। (३३५)
बोलीं तब करबद्ध शोभन। क्या करूँ मैं दें प्रभु मंत्रन ।।
बोले हनुमान सुनो वनिता। संभव हेतु त्रिया चरिता ।। (३३६)
करो प्रयत्न नारी वशीकरण। देखें हम तुम्हारा कार्मण ।।
अन्यथा नहीं है कोई मार्ग। रोक सको तुम योगी आर्य ।। (३३७)

भावार्थः 'यह मेरा कथन सत्य मानो कि भगवान् राम ने भी प्रयास किया। यह उनका (गोरखनाथ का) दृढ़ संकल्प है। गुरु के साथ जाएंगे और कोई विकल्प नहीं है।' तब सुन्दरी करबद्ध बोलीं, 'हे प्रभु, मुझे विमर्श दीजिए, मैं क्या करूँ?' तब हनुमान जी बोले, ' हे सुंदरी, त्रिया चरित्र से यह संभव है। नारी वशीकरण का प्रयोग करो। हम तुम्हारी माया देखें। अन्यथा कोई मार्ग नहीं है कि तुम आर्य योगी को रोक सको।'

कह सकें कुछ और वनिता। हुए अदृश्य तुरंत हनुमंता ।।
बैठी मैनाकिनी चिंतित। थीं शोकमय और विध्वस्त ।। (३३८)

भावार्थः सुंदरी (मैनाकिनी) कुछ और कह सकें, (इससे पहले) तुरंत हनुमान जी अदृश्य हो गए। मैनाकिनी चिंता में बैठ गईं। वह दुःखी और पीड़ित थीं।

जागो मछिन्द्रनाथ

इधर हुआ अंत काल रजनी । जागीं कलिंग आदि शोभनी ।।
देखा बैठे योगी पद्मासन । थे मग्न गहन साधना मनन ।। (३३९)
कर नित्य क्रिया वह शोभन । हुईं सज्ज हेतु महल गमन ।।
गोरखनाथ बने रथ सारथी । पहुंचे शीघ्र वह लाभार्थी ।। (३४०)

भावार्थ: इधर जब रात्रि काल का अंत हुआ तब कलिंग आदि सभी महिलाएं जागीं। उन्होंने योगी (गोरखनाथ) को पद्मासन (अवस्था) में गहन साधना और मनन में मग्न देखा। नित्य क्रिया कर सभी सुंदरियां महल जाने के लिए तैयार हुईं। गोरखनाथ रथ के सारथी बने। वह लाभार्थी (उपहार लाभ की इच्छा रखने वाली) शीघ्र ही (महल के द्वार) पहुँच गईं।

रोका रथ सुरक्षित स्थल पर । उतरे सब रथारूढ़ वहां पर ।।
की विनय तब कलिंग नायिका । साधु धरो रूप प्रसाधिका ।। (३४१)
जानो तुम विधि इस पट्टन । न कर सकें प्रवेश पुरुष जन ।।
समझे संत स्थिति गम्भीरता । हेतु योगबल बने वह वनिता ।। (३४२)

भावार्थ: एक सुरक्षित स्थान पर रथ रोका। सब रथारूढ़ वहां पर उतरे। तब प्रमुख कलिंग ने विनती की, 'हे साधु, सेविका का रूप धारण करो। आपको इस नगर का नियम ज्ञात है। यहां पुरुष जनों को प्रवेश नहीं है।' संत (गोरखनाथ) ने स्थिति की गंभीरता को समझा और योग से स्त्री का रूप धारण किया।

हुई कलिंग रूप देख विस्मित । लग रहे संत अति सम्मोहित ।।
बोलीं कलिंग हे साधु महन । न कोई ऐसी सुंदरी भुवन ।। (३४३)
मुसकुराए तब गोरखनाथ । कहे मृदुल वचन संत नाथ ।।
करो प्रबंध हे मुख्याङ्गना । हो मिलन अब नृपाङ्गना ।। (३४४)
भेजीं अनुचर राज सभालय । हेतु अनुमत प्रवेश नृपालय ।।
दीं सन्देश तब द्वार पालक । इच्छा करें प्रदर्शन वादक ।। (३४५)
मिली आज्ञा हेतु प्रदर्शन । गए सभा तब सब हेतु वादन ।।
बैठीं थीं रानी सिंहासन । था निकट मछिन्द्रनाथ आसन ।। (३४६)

भावार्थ: कलिंग (गोरखनाथ जी का स्त्री) रूप देख अचंभित हुईं। संत अति सम्मोहक लग रहे थे। कलिंग बोलीं, 'हे महात्मा साधु, आप जैसी सुंदरी विश्व में नहीं है।' तब मुसकुराकर गोरखनाथ बोले, 'हे नायिका, रानी से मिलन हो, इसका प्रबंध करो।' तब महल में प्रवेश की अनुमति हेतु राज सभा गृह में उन्होंने सेविका भेजी। उन्होंने द्वारपालक को सन्देश दिया कि वादक (संगीत विशेषज्ञ) प्रदर्शन करना चाहते हैं। प्रदर्शन के लिए आज्ञा मिलने पर सब वादन के लिए सभा गए। रानी सिंहासन पर बैठीं थीं। उनके निकट ही मछिन्द्रनाथ आसीन थे।

लग रहीं उदास मैनाकिनी । किए अभिवादन सब वादिनी ।।
किए समागम तब सब साधन । कीं कलिंग प्रारम्भ गायन ।।(३४७)
कर रहे थे गोरखनाथ वादन । यन्त्र मृदंग कर रहा मुग्धन ।।
हुए मछिन्द्रनाथ सञ्चिन्तन । था छिपा सन्देश इस वादन ।।(३४८)
हुए शब्द वादक सर्व स्पष्ट । जागो मछिन्द्रनाथ उत्कृष्ट ।।
आए हैं मिलने गोरखनाथ । हेतु संग लेने तुम्हें हे नाथ ।।(३४९)

भावार्थ: मैनाकिनी उदास लग रहीं थीं। सभी वादकों ने अभिवादन किया। सबने वाद्य एकत्रित किए और कलिंग ने गायन प्रारम्भ किया। साधक गोरखनाथ अत्यंत सम्मोहक मृदंग का वादन कर रहे थे। मछिन्द्रनाथ उद्विग्न हो गए। इस वादन में सन्देश छिपा था। वादक के शब्द बिलकुल स्पष्ट हो गए। 'महान मछिन्द्रनाथ जागो। हे स्वामी, गोरखनाथ आपको साथ ले जाने हेतु मिलने आए हैं।'

देख दशा मुख मछिन्द्रनाथ । बोलीं मैनाकिनी हे नाथ ।।
लगता हो रहे आप क्षुभित । दूँ आदेश हो वाद्य समापित ।।(३५०)
बोले मछिन्द्रनाथ तब वचन । नहीं उद्विग्न पर हुआ चेतन ।।
हो विह्वल बोलीं महारानी । नहीं समझीं आपकी वानी ।।(३५१)
बोले तब मछिन्द्रनाथ महन । समझो सुर मृदंग स्नेहन ।।
दे रहे सन्देश हे महात्मन । जागो मछिन्द्रनाथ इस वस्थन ।।(३५२)
आए लेने तुम्हें गोरखनाथ । चलो संग गुरु मछिन्द्रनाथ ।।
जाना होगा अब मुझे तत्क्षण । नहीं रुक सकता में एक क्षण ।।(३५३)

भावार्थ: मछिन्द्रनाथ की मुख दशा देखकर मैनाकिनी बोलीं, 'हे नाथ, आप उद्विग्न लग रहे हैं। क्या मैं वाद्य समाप्ति का आदेश दूँ?' तब मछिन्द्रनाथ बोले, 'मैं उद्विग्न नहीं पर चेतना अनुभव कर रहा हूँ।' तब घबराकर महारानी बोलीं, 'मैं आपके वचन नहीं समझी।' तब महात्मा मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे प्रिय, इस मृदंग के सुर समझो। यह सन्देश दे रहे हैं कि हे महात्मा मछिन्द्रनाथ इस दशा से जागो। तुम्हें गोरखनाथ लेने आए है। गुरु मछिन्द्रनाथ उनके साथ चलो। मुझे तुरंत जाना होगा। मैं अब एक क्षण भी नहीं रुक सकता।'

कीं मैनाकिनी तब स्मरण । वचन श्री हनुमंत बीते क्षण ।।
बजा रही मृदंग जो वनिता । हैं गोरखनाथ रूप छादिता ।। (३५४)
कहीं दे उपहार वह वादक । लो विदा तुम अब सब गायक ।।
पर न जाएं वादक मृदंग । कीं विनम्र विनय तब कलिंग ।। (३५५)

भावार्थ: तब मैनाकिनी को श्री हनुमान जी के बीते क्षण के वचन याद आए। जो स्त्री मृदंग बजा रही है, वह वेशान्तरण में गोरखनाथ हैं। वादकों को उपहार देकर उन्होंने कहा कि तुम सब वादक/गायक अब विदा लो। लेकिन मृदंग वादक नहीं जाएं।' तब विनम्रता से कलिंग बोलीं।

हे रानी भवती अनुग्राहक । मत रोको इन मृदङ्ग वादक ।।
होगा नष्ट हमारा व्यापार । है मृदङ्ग वादक आधार ।। (३५६)
बिन उनके हैं हम अगुणिन । नहीं कर सकें नाद प्रदर्शन ।।
बोलीं तब क्रुद्ध मैनाकिनी । की हो छल तुम हे वादनी ।। (३५७)
है मृदङ्ग वादक रूप नरत्व । नहीं स्त्री जानूं यह तथ्य ।।
तोड़ा तुमने राज्य व्यवहार । है यह घोर राजापकार ।। (३५८)
दूँ यदि दंड हेतु अपचार । मिले मृत्यु दंड वाद्यकार ।।
पर वादक हूँ मैं अति प्रसन्न । किए तुम उत्कृष्ट प्रदर्शन ।। (३५९)
अतः करूँ क्षमा महापातक । जाओ तुरंत गृह हे वादक ।।
हुईं दुःखी विहाय साधक । गईं गृह तुरंत तब वादक ।। (३६०)

भावार्थ: हे महान दयालु रानी, इन मृदङ्ग वादक को मत रोको। हमारा व्यवसाय नष्ट हो जाएगा। यह मृदङ्ग वादक आधार है। इसके बिना हम अपूर्ण हैं। हम संगीत प्रदर्शन

नहीं कर सकते। तब क्रोधित मैनाकिनी बोलीं, 'हे संगीत वादनी, तुमने छल किया है। यह मृदङ्ग वादक पुरुष रूप है, स्त्री नहीं, यह तथ्य मैं जानती हूँ। तुमने राज्य का नियम तोड़ा है। यह घोर राज अपराध है। यदि इस अपराध के लिए दंड दूँ तो संगीत वादक, मृत्यु दंड मिलेगा। परन्तु वादक, मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ कि तुमने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। अतः तुम्हारे अपराध को क्षमा करती हूँ। हे वादक, तुरंत अपने गृह जाओ।' साधक (गोरखनाथ) को पीछे छोड़ने पर दुःखित वादक तब अपने गृह गए।

मछिन्द्रनाथ से पुनर्मिलन

नहीं थे गोरखनाथ विचलित।था यह उनके मन यथार्थत।।
पहचानें रानी गोरखनाथ।संभव मिलें तब मछिन्द्रनाथ।।(३६१)
दिए आदेश रानी सेविका।लाओ अंदर कक्ष वादिका।।
पहुंचे गोरखनाथ जब कक्ष।पूछीं रानी कौन तुम सक्ष।।(३६२)

भावार्थ: गोरखनाथ विचलित नहीं थे। यह उनके मन के अनुसार ही हो रहा था। रानी जब गोरखनाथ को पहचान लेंगी तभी मछिन्द्रनाथ से मिलन संभव है। रानी ने एक सेविका को आदेश दिया कि इस वादिका को कक्ष के अंदर लाओ। जब गोरखनाथ कक्ष में पहुंचे तो रानी ने पूछा, 'हे प्रतिभावान, तुम कौन हो?'

लिए स्व-रूप तब गोरखनाथ।बोले हूँ परिजन पंथ नाथ।।
है मेरा नाम गोरखनाथ।हूँ मैं शिष्य मछिन्द्रनाथ।।(३६३)
चूँकि न कर सकें नर प्रवेश।अतः रूप नारि किया निवेश।।
रह रहे संग यहां गुरुवर।वर्ष द्वादश रानी मान्यवर।।(३६४)
है समय अब हेतु संत महन।करें नाथ सम्प्रदाय शासन।।
आया हेतु लेने मैं महन।दें आज्ञा अब जाएं स्व-सदन।।(३६५)

भावार्थ: तब गोरखनाथ अपने स्वरुप में आए और बोले, 'मैं नाथ सम्प्रदाय का अनुयायी हूँ। मेरा नाम गोरखनाथ है। मैं मछिन्द्रनाथ का शिष्य हूँ। चूँकि पुरुष का प्रवेश (आपकी नगरी में) निषेध है, अतः नारी के रूप में प्रवेश किया। हे आदरणीय रानी, गुरुदेव आपके साथ बारह वर्ष से रह रहे हैं। अब महात्मा योगी के लिए समय आ गया है कि वह नाथ सम्प्रदाय का निर्देशन करें। अतः मैं महात्मा को लेने आया हूँ। आप आज्ञा दें ताकि अब अपने आश्रम जाएं।'

बोलीं मैनाकिनी सम्राज्ञी।दूँ अनुमति मिलो तुम योगी।।
है यह निर्भर उनके विवेचनम्।रहें यहां या जाएं आश्रम।।(३६६)
चलीं रानी तब संग महत।पहुँची तब योगी वस्तव्यत।।
कर सम्बोधन मछिन्द्रनाथ।बोलीं मिलो स्व-शिष्य नाथ।।(३६७)

आए मिलने हैं गोरखनाथ । करना चाहते कुछ वाचार्थ ।।
किए चरण स्पर्श तुरंत शिष्य । उठ आसन लगाए कंठ दिव्य ।। (३६८)

भावार्थ: सम्राज्ञी मैनाकिनी बोलीं, 'मैं योगी (मछिन्द्रनाथ) से मिलने की तुम्हें अनुमति देती हूँ। यह उनकी इच्छा पर निर्भर है कि यहां रहें या आश्रम में जाएं।' तब रानी महात्मा (गोरखनाथ) के साथ योगी (मछिन्द्रनाथ) के निवास पर पहुंचीं। मछिन्द्रनाथ को सम्बोधित कर बोलीं, 'हे नाथ, अपने शिष्य से मिलो। गोरखनाथ मिलने आए हैं। कुछ वार्तालाप करना चाहते हैं।' तब शिष्य ने तुरंत चरण स्पर्श किए। दिव्य (गुरु) ने उन्हें आसन से उठकर गले लगाया।

पाए शिष्य तब आशीर्वचन । पूछे मछिन्द्रनाथ स्वस्तिन ।।
वर्णित द्वादस वर्ष समय । बैठे आसन भूमि तब शिष्य ।। (३६९)
निर्देशित गुरु अति पावन । किए तप द्वादस वर्ष जतिन ।।
पाया तब अनुग्रह जतिन । हुई इच्छा हेतु गुरु मिलन ।। (३७०)
जाना हेतु योग दृष्टि महन । कर रहे यहां आप निवासन ।।
चला पादचार हेतु मिलन । मिले कानिफनाथ पथ मध्यन ।। (३७१)
किया जालंधर बंदी राजन । उग्र गोपीनाथ हेलापट्टन ।।
बतलाया कानिफनाथ तथ्य । गए हेतु मुक्ति जालंधर दिव्य ।। (३७२)
आया मैं तब तिरिया देश । मिलीं मध्य पथ कलिंग रागेश ।।
हेतु मदद तद पहुंचा देश । मिले यहां हनु और अवधेश ।। (३७३)
पाया अनुग्रह इन द्वि देवक । आया तब बन मृदंग वादक ।।
हेतु मैनाकिनी हुआ मिलन । हुआ तन मन अब अति प्रसन्न ।। (३७४)

भावार्थ: तब शिष्य (गोरखनाथ) आशीर्वाद पाए। मछिन्द्रनाथ ने कुशल मंगल पूछी। तब शिष्य ने भूमि में बैठ कर बारह वर्ष का सब विवरण दिया। 'हे अति पवित्र गुरुदेव, आपकी आज्ञा के अनुसार बारह वर्ष शिव की तपस्या की। जब शिव का आशीर्वाद मिल गया, तब गुरु (मछिन्द्रनाथ) से मिलने की इच्छा हुई। योग दृष्टि से जाना कि आप यहां निवास कर रहे हैं। तब पैदल ही आपसे मिलने चला। मार्ग के मध्य में कानिफनाथ से मिलन हुआ। उन्हें यह तथ्य बतलाया कि जालंधर (उनके गुरु) क्रूर सम्राट गोपीनाथ की राजधानी हेलापट्टन में बंदी हैं। तब वह महात्मा जालंधर की मुक्ति हेतु (हेलापट्टन) गए और मैं तिरिया देश आया। यहां मार्ग में मुझे संगीत विशेषज्ञ

कलिंग मिलीं। उनकी मदद से यहां पहुंचा। यहां हनुमान और श्री राम मिले। इन दोनों का आशीर्वाद लेकर मैं मृदंग वादक बना। मैनाकिनी ने आपसे मिलन कराया। मेरा तन और मन अत्यंत प्रसन्न है।

हो धन्य धन्य तुम गोरखनाथ । हो प्रसन्न कहे मछिन्द्रनाथ ।।
रहित मद बोले गोरखनाथ । है सब कृपा आपकी नाथ ।। (३७५)
हेतु आपके आशीर्वचन । दिए वर शिव राम पुत्र-पवन ।।
मेरी सफलता आपकी दत्त । है यह उपकार आपका महत ।। (३७६)

भावार्थ: प्रसन्न होकर मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे गोरखनाथ तुम धन्य हो, धन्य हो।' तब अहंकार रहित गोरखनाथ बोले, 'हे नाथ, यह सब आपकी कृपा है। आपके आशीर्वाद से शिव, राम और हनुमान जी से वरदान मिले। मेरी सफलता आपकी दी हुई है। हे महात्मा, यह आपका उपकार है।'

आप अगाध योगी गुरुवर । हैं किस हेतु यहां मान्यवर ।।
तिरिया विज्ञात हेतु वनिता । हो रही सर्वस्य यह वार्ता ।। (३७७)
बिन आप है नाथ वंश अनाथ । दो अब निर्देश मछिन्द्रनाथ ।।
शिष्य के सुने मृदु सत्य वचन । बोले गुरु हे शिष्य स्नेहन ।। (३७८)
सुनो वृतांत मम इह सदन । है हेतु आदेश अंजनी नंदन ।।
हेतु साधना जराधीशम । भेजा तुम्हें बद्रिकाश्रम ।। (३७९)
गया मैं स्वयं रामेश्वरम । मिले वहां हनु अमित विक्रम ।।
दिए आदेश जाओ तिरिया । हूँ बद्ध वचन विजितेन्द्रिया ।। (३८०)

भावार्थ: 'गुरुवर, आप परम योगी हैं। हे मान्यवर, किस कारण आप यहां हैं? तिरिया (राज्य) नारियों के लिए प्रसिद्ध है। यही सब स्थान पर चर्चा है। आपके बिना नाथ सम्प्रदाय अनाथ है। हे मछिन्द्रनाथ, अब निर्देश दें (शासन सम्हालें)।' शिष्य के मृदुल सत्य वचन सुन गुरु बोले, 'हे प्रिय शिष्य, यहां मेरे निवास करने का वृतांत सुनो। यह हनुमान जी के आदेश के कारण है। तुम्हें शिव जी की आराधना हेतु बद्रिकाश्रम भेजकर मैं स्वयं रामेश्वरम आया। यहां मुझे हनुमान मिले। उन्होंने मुझे आदेश दिया कि तिरिया जाओ। (मैं) हनुमान जी के वचन से बद्ध हूँ।'

बोले तब शिष्य गोरखनाथ।हुई वार्ता संग कपिनाथ।।
कर दिए वह तुम्हें मुक्त वचन।नहीं है कोई अब अवरोधन।।(३८१)
हैं स्वतंत्र इच्छा अनुसरन।आएं आश्रम हेतु वंश शासन।।
बोले तब गुरु मछिन्द्रनाथ।हूँ मैं तत्पर गोरखनाथ।।(३८२)
यदि मैनाकिनी प्रतिपन्न।चलूँ साथ मैं हो प्रसन्न।।
सोचने लगे तब महाज्ञानी।कैसे लूँ मैं सहमति रानी।।(३८३)

भावार्थ: तब शिष्य गोरखनाथ बोले, 'हनुमान जी के साथ वार्ता हुई थी। उन्होंने तुम्हें वचन मुक्त कर दिया है। अब कोई रुकावट नहीं है। (आप) इच्छानुसार स्वतंत्र हैं। आप आश्रम सम्प्रदाय का निर्देशन करने आएं।' तब गुरु मछिन्द्रनाथ बोले, 'गोरखनाथ, यदि मैनाकिनी सहमत है तो मैं तैयार हूँ। मैं प्रसन्नता से तुम्हारे साथ चलूँगा।' तब महाज्ञानी (गोरखनाथ) सोचने लगे कि रानी की सहमति कैसे लूँ?

इधर मैनाकिनी करें मनन।कैसे रख सकूं मैं संग महन।।
आया विचार तब उनके मन।यदि रहें शिष्य भी मेरे सदन।।(३८४)
तब संभव नहीं जाएंगे महत।रहेंगे शिष्य गुरु हो मुदित।।
दीं आदेश नारि सुन्दर अति।करो गोरखनाथ सम्मोहित।।(३८५)
अर्धनग्न तब गईं वह शोभन।करने लगीं काम युक्त नर्तन।।
बोले गोरखनाथ हे वनिता।हूँ अप्रभावित कामात्मता।।(३८६)

भावार्थ: इधर मैनाकिनी सोचने लगीं कि किस प्रकार महात्मा को साथ रख सकूं। उनके मन में एक विचार आया कि यदि शिष्य भी मेरे महल में रुक जाएं, तब संभव है कि महात्मा नहीं जाएंगे। शिष्य और गुरु प्रसन्नता से यहां रहेंगे। एक अति सुन्दर स्त्री को उन्होंने आदेश दिया कि गोरखनाथ को सम्मोहित करो। तब वह सुंदरी अर्धनग्न होकर (गोरखनाथ के समक्ष) काम नृत्य करने लगीं। गोरखनाथ बोले, 'हे सुंदरी, मैं कामात्मता से अप्रभावित हूँ।'

कीं सुंदरी अनेक प्रयास । रिझा सकें वह संत प्रभास ।।
पर न मिली उन्हें सफलता । हुईं निराश तब वह वनिता ।। (३८७)
गईं निकट तब मैनाकिनी । बोलीं करें क्षमा हे शालिनी ।।
करें पालन योगी ब्रह्मचर्य । नहीं संभव डोले मन दिव्य ।। (३८८)
हुईं भ्रमित मैनाकिनी । नहीं मेरे नियंत्रण होनी ।।
सोच यह हुईं वह अति खिन्न । करें मंगल कामना भगवन ।। (३८९)

भावार्थ: सुंदरी ने ओजस्वी संत को रिझाने के अनेक प्रयास किए पर उन्हें सफलता नहीं मिली। वह सुंदरी निराश हो गईं और मैनाकिनी के निकट पहुँच बोलीं, 'हे परम सुंदरी (रानी) मुझे क्षमा करें। योगी ब्रह्मचर्य में दृढ़ हैं। उनका मन विचलित हो, यह संभव नहीं है।' मैनाकिनी भ्रमित हो गईं। यह सोच कर कि होनी मेरे नियंत्रण में नहीं है, वह अत्यंत दुःखी हुईं। विधाता मंगल करें, ऐसी प्रार्थना करने लगीं।

मीननाथ का मरण और पुनर्जीवन

पाईं मैनाकिनी एक सुत । हेतु संग मछिन्द्रनाथ महन्त ।।
था मीननाथ उसका नाम । था मैनाकिनी का अति वाम ।। (३९०)
बैठे थे संग मछिन्द्रनाथ । मैनाकिनी और गोरखनाथ ।।
बोले गुरु हे गोरखनाथ । थे ग्रसित तापक मीननाथ ।। (३९१)
नहीं किए कुछ दिन प्रणेजन । दो उन्हें तुम उचित मार्जन ।।
समझे निदर्शन गोरखनाथ । करूँ लीला जो इच्छा नाथ ।। (३९२)

भावार्थ: मैनाकिनी के महात्मा मछिन्द्रनाथ से एक पुत्र था, जिसका नाम मीननाथ था। वह मैनाकिनी का अति प्रिय था। मछिन्द्रनाथ, मैनाकिनी और गोरखनाथ साथ बैठे थे, तब गुरुदेव (मछिन्द्रनाथ) बोले, 'हे गोरखनाथ, मीननाथ ज्वर से ग्रस्त थे अतः कुछ दिनों से (इन्होंने) स्नान नहीं किया। तुम इनकी उचित सफाई करो। गोरखनाथ संकेत समझ गए। नाथ (गुरुदेव) चाहते हैं कि मैं लीला करूँ।

बोले गोरखनाथ हे महन । करूँ तुरंत आज्ञा पालन ।।
ले गए तब तट निर्झरिनी । गोरखनाथ सुत मैनाकिनी ।। (३९३)
किए मार्जन पटक शिलापट्ट । रोए बाल पर थे वह अक्लिष्ट ।।
न झेल सके बाल मार ग्रावन् । हो गया तुरंत उनका मरन ।। (३९४)

भावार्थ: गोरखनाथ बोले, हे महात्मा, आपकी आज्ञा का तुरंत पालन करूंगा।' तब गोरखनाथ मैनाकिनी के पुत्र को नदी के तट पर ले गए। शिलापट्टी पर पटक कर उन्हें धोने लगे। बालक रोए पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। बालक पत्थर की मार नहीं सह सके और उनका तुरंत मरण हो गया।

लाए महल तब वह मृतक तन । कहे मछिन्द्रनाथ कहाँ नंदन ।।
आईं तब वहां मैनाकिनी । देख सुत मृत हुईं अचेतनी ।। (३९५)
अल्प काल हुईं राज्ञी चेतन । बोले मछिन्द्रनाथ रोषिन् ।।
क्या किए तुम यह गोरखनाथ । हर लिए प्राण बाल मीननाथ ।। (३९६)
हो तुम दुष्ट नर हीन हिय । करेगी कैसे सहन दुःख प्रिय ।।
बोलीं मैनाकिनी क्रुध्य । हे दुष्ट क्या वैर इस सारल्य ।। (३९७)
कर सम्बोधित मछिन्द्रनाथ । बोलीं है यह नर मूर्खनाथ ।।
करते रहते तुम प्रशंसा । है यह प्राज्ञ गुणी धर्म-अंशा ।। (३९८)
किया इसने वध प्राणप्रिय । कहो करूँ क्या इसका दिव्य ।।
दूँ मृत्यु दंड इस अकर्मन । पर नहीं लौट सके स्व-नंदन ।। (३९९)

भावार्थ: तब वह मृतक शरीर को महल में लाए। मछिन्द्रनाथ ने पूछा कि पुत्र कहाँ है? तभी वहां मैनाकिनी आ गईं। मृत पुत्र को देख अचेतन हो गईं। थोड़े समय में रानी चेतन अवस्था में आईं। मछिन्द्रनाथ क्रोधित हो कर बोले, 'गोरखनाथ यह तुमने क्या किया? मीननाथ के प्राण हर लिए। तुम दुष्ट और हृदय-हीन हो। प्रिय (मैनाकिनी) यह दुःख कैसे सहेगी?' तब क्रोधित मैनाकिनी बोलीं, 'हे दुष्ट, इस निरपराध का क्या दोष था?' फिर मैनाकिनी मछिन्द्रनाथ को सम्बोधित कर बोलीं, 'यह पुरुष मूर्खनाथ है। आप प्रशंसा करते रहते थे कि यह प्राणी बुद्धिमान, गुणी और धर्म का अंश है। पर इसने प्राण प्रिय का वध किया है। हे दिव्य, इसका क्या करूँ? इस दुष्कर्म के लिए इसे मृत्यु दंड दूँ? पर अपना पुत्र तो नहीं लौट सकता?'

बोले तब गोरखनाथ महन । न हो माता तुम इतना खिन्न ।।
नहीं कोई मरता न मारता । पाई आत्मा माँ अमृतता ।। (४००)
कहें मैनाकिनी हे अबोधन । कर कुकर्म न दो अब बोधन ।।
क्या जानो तुम प्रेम तनय । हो वैरागी लोकन कैवल्य ।। (४०१)

भावार्थ: तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'हे माँ इतना विषाद न करो। न कोई मारता है, न मरता है। आत्मा अमरत्व प्राप्त किए है।' तब मैनाकिनी बोलीं, 'हे अज्ञानी, कुकर्म करने के बाद अब ज्ञान नहीं दो। तुम पुत्र प्रेम को क्या जानो? तुम तो संसार से विरक्त वैरागी हो।'

बोले गोरखनाथ विनम्रता। कर सकूं क्या बोलो माता।।
आया समय मृत्यु भूधन। नहीं बस में काल किसी जन।।(४०२)
दो दंड जो समझो तुम उचित। हूँ तत्पर करने प्रायश्चित।।
तब बोले गुरु मछिन्द्रनाथ। सुनो हे दिव्य गोरखनाथ।।(४०३)
पाए हो तुम शक्ति दैवीय। हेतु विविध वरद ईश्वरीय।।
दूँ मैं प्राज्ञ शिष्य प्रचोदन। दो पुनर्जीवन इस मृत तन।।(४०४)

भावार्थ: गोरखनाथ विनम्रता से बोले, 'माता, क्या कर सकता हूँ? राजकुमार की मृत्यु का समय आ गया था। काल किसी के बस में नहीं है। जो दंड उचित समझो, दो। मैं प्रायश्चित करने को तैयार हूँ।' तब गुरु मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे दिव्य गोरखनाथ, सुनो। तुम अनेक ईश्वरीय वरदान के कारण दैवीय शक्ति पाए हो। हे प्रमत शिष्य, मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि इस मृत शरीर को पुनर्जीवन दो।'

कर प्रणाम गुरुदेव महन। किए आवाहन आयुर्वर्धन।।
हुए उत्पन्न तब अष्टोत्तरशत। मीननाथ चहुँ ओर रुदित।।(४०५)
थे सब संरूप मुख और तन। बोले गोरखनाथ हे सूषन।।
पहचानो तुम अपना तनय। हो प्रसन्न करो उसका लय।।(४०६)

भावार्थ: महात्मा गुरुदेव को प्रणाम कर तब (गोरखनाथ ने) आयुर्वर्धन (जीवन दान देने वाला मन्त्र) का आवाहन किया। तब १०८ चारों दशा में रोते हुए मीननाथ उत्पन्न हो गए। सभी मुख और शरीर में एक जैसे थे। तब गोरखनाथ बोले, 'हे दयालु माँ, अपने पुत्र को पहचान कर प्रसन्नता से उसका आलिंगन करो।

बोलीं मैनाकिनी विस्मित। हो गोरखनाथ मायाकृत्।।
करो दूर तुम अपना वञ्चन। दो मुझे तुरंत मेरा नंदन।।(४०७)
बोले तब गोरखनाथ साधक। है किसी विडम्बना प्रजनिक।।
नहीं पहचान सको स्व-नंदन। कैसा प्रेम माता यह भूजन।।(४०८)
होता नश्वर समझो यह तन। करो प्रेम क्यों जो न नित्यन।।
छोड़ो मोह मछिन्द्रनाथ तन। करना इन्हें कार्य अति महन।।(४०९)

भावार्थ: विस्मित होकर मैनाकिनी बोलीं, 'गोरखनाथ, (आप) मायावी हो। अपनी माया दूर करो और तुरंत मुझे मेरा पुत्र दो।' तब साधक गोरखनाथ बोले, 'माता, यह कैसी विडम्बना है कि आप अपने पुत्र को नहीं पहचान पा रहीं। यह प्राणियों का कैसा प्रेम है। इस शरीर को नाशवान समझो। जो शाश्वत नहीं है, उसे प्रेम क्यों करो? मछिन्द्रनाथ के शरीर का मोह छोड़ो। उन्होंने अत्यंत महान कार्य करने हैं।'

समझ गईं रानी रहस्य कथन । नहीं उचित रोकें वह महन ।।
है उचित कहीं तब वह वचन । दो मुझे तुम मेरा प्रिय नंदन ।।(४१०)
और करो एक वर्ष निवासन । जा सको तुम संत संग महन ।।
सुन वचन राज्ञी मैनाकिनी । कहे गोरखनाथ हे स्वामिनी ।।(४११)
करें पालन हम आपके वचन । करो छै मास वास प्रकर्षन ।।
हुईं मैनाकिनी तब मुदित । किए लोलति सप्तोत्तरशत ।।(४१२)
था प्रसन्न राज्ञी आनन । मिला उन्हें पुत्र अति स्नेहन ।।
रहे छै मास तब वह वैरागी । करें चर्चा हरि नित्य योगी ।।(४१३)

भावार्थ: रानी कथन का रहस्य समझ गईं। अब महात्मा (मछिन्द्रनाथ) को रोकना उचित नहीं। तब वह वचन बोलीं, 'उचित है। मुझे मेरा प्रिय पुत्र मुझे (वापस) दो और एक वर्ष तक (मेरी नगरी में) वास करो। तब हे योगी (गोरखनाथ), तुम महात्मा (मछिन्द्रनाथ) के साथ जा सकते हो।' रानी मैनाकिनी के वचन सुन गोरखनाथ बोले, 'हे स्वामिनी (रानी), हम आपके वचन का पालन करेंगे। निवास की अवधि छै मास कर दो।' मैनाकिनी मुदित हो गईं (अतः उन्होंने उन्हें छै मास रुकने की अवधि पर सहमति दे दी।) तब (गोरखनाथ ने) १०७ (बालकों) को अंतर्ध्यान किया। रानी का मुख अति प्रसन्न था। उन्हें अपना अति प्रिय पुत्र मिल गया। वह वैरागी तब छै माह रहे। प्रतिदिन योगी हरि चर्चा करते।

तिरिया राज्य से गुरु शिष्य गमन

आया समय जब आपृच्छा । थीं रानी उदास जान इच्छा ।।
बोलीं रुदित राज्ञी दिव्य । है उचित ले रहे विदा दैव्य ।। (४१४)
पर होगा क्या अब मीननाथ । रहें संग मम या साथ वह नाथ ।।
बोले मछिन्द्रनाथ तब वचन । कहो तुम अपनी इच्छा स्नेहन ।। (४१५)
कहीं राज्ञी सुनो हे अपाप । उपरिक्ष वसु दिए मुझे श्राप ।।
हूँ मैं एक अप्सरा व्योमन । हेतु श्राप ली जन्म भुवन ।। (४१६)
हो रही अंत अवधि इस श्राप । पश्चात छै मास नाथ अपाप ।।
जाना पड़े मुझे तब व्योमन । होगा क्या तब पुत्र स्नेहन ।। (४१७)

भावार्थ: जब विदा का समय आया, तब रानी (योगियों की) इच्छा जानकार उदास थीं। माननीय रानी रोती हुई बोलीं, 'हे दिव्य, आप विदा ले रहे हैं, यह उचित है। पर मीननाथ का क्या होगा? मेरे साथ रहें या आप ले जाएं? तब मछिन्द्रनाथ (यह) वचन बोले, 'हे प्रिय, तुम अपनी इच्छा बतलाओ।' तब रानी बोलीं, 'हे पवित्र सुनो। मैं स्वर्ग में रहने वाली एक अप्सरा हूँ। उपरिक्ष वसु ने मुझे श्राप दिया था जिसके कारण मैंने पृथ्वी पर जन्म लिया। इस श्राप की अवधि अगले छै मास में समाप्त हो जाएगी, तब मुझे स्वर्ग लौटना पड़ेगा। तब प्रिय पुत्र का क्या होगा?'

बोले मछिन्द्रनाथ सुन तथ्य । नहीं छोड़ सकते एकल प्रिय ।।
है निश्चित आएं हमारे साथ । रहें आश्रम पुत्र मीननाथ ।। (४१८)
है उचित कह रानी सुजन । करें विदा सुत कीं प्रबंधन ।।
आया जब समय हेतु उदिति । कीं आलिंगन पुत्र रुदिति ।। (४१९)
दिए आदेश तब मछिन्द्रनाथ । चलो हमारे संग मीननाथ ।।
किए मीननाथ तब अनुसरन । आज्ञा पिता निष्ठा स्व-मन ।। (४२०)

भावार्थ: तथ्य सुनकर मछिन्द्रनाथ बोले, 'पुत्र को अकेला नहीं छोड़ सकते। यह निश्चित है कि वह हमारे साथ आएं। पुत्र मीननाथ आश्रम में रहें।' तब कृपालु रानी ने कहा, उचित है। पुत्र को विदा करें, इस प्रबंध में लग गईं। जब विदा का समय आया तब रोते हुए पुत्र का आलिंगन किया। तब मछिन्द्रनाथ ने आदेश दिया, 'मीननाथ हमारे साथ चलो।' मीननाथ ने हृदय में श्रद्धा रखते हुए पिता की आज्ञा का अनुसरण किया।

आईं छोड़ने मैनाकिनी। संग सभी महल निवासिनी।।
द्वार महल तक अश्रु नयन। बोले तब मछिन्द्रनाथ महन।।(४२१)
न करो शोक इस भांति स्नेहन। है केवल छै मास कृतक्षन।।
हुए उपरिक्ष वसु अवतरित। दिए सांत्वना रानी शोकित।।(४२२)
बोले सुनो हे स्वर्ग अप्सरा। कर रहे प्रतीक्षा इंद्र इंद्रा।।
आओ शीघ्र तुम व्योमन। जो निवास तुम्हारा स्नेहन।।(४२३)
हुई शांत तब मैनाकिनी। लौटीं सदन संग सहचरिनी।।
बीते छै मास युक्त अति कष्ट। गईं स्वर्ग तब वह उत्कृष्ट।।(४२४)

भावार्थ: मैनाकिनी सभी महल निवासियों के साथ उन्हें महल के द्वार तक छोड़ने आईं। उनके नेत्रों में अश्रु थे। तब महात्मा मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे प्रिय, इस भांति शोक न करो। केवल छै महीने की प्रतीक्षा है।' तभी उपरक्षित वसु प्रगट हुए। उन्होंने दुःखी रानी को सांत्वना दी। वह बोले, 'हे स्वर्ग की अप्सरा, तुम्हारी (स्वर्ग में) इंद्रा और इंद्रा (इंद्राणी) प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम शीघ्र ही स्वर्ग आओ। हे प्रिय, वही तुम्हारा निवास है।' तब मैनाकिनी शांत हुईं और अपने महल सभी सहचरियों के साथ लौटीं। छै महीने अत्यंत कष्ट से बीते, तब वह उत्कृष्ट स्वर्ग चली गईं।

द्रव्य वितरण

जब कीं तत्पर हेतु गमन । रानी मैनाकिनी स्व-नंदन ।।
रखीं कुछ मुद्राएं स्वर्न । उनके पेटक हेतु परिव्ययन ।। (४२५)
जानते थे मछिन्द्रनाथ तथ्य । रहते चिंतित हेतु चौर्य ।।
पहुंचे पहले तैलंग जनपद । किए स्नान गोदावरी नद ।। (४२६)
पहुंचे तब गिरवागिरि वन । किए जहां वाल्मीकि तपन ।।
था मार्ग यह अत्यंत कठिन । पूर्ण दस्यु वक्री कर्षन ।। (४२७)

भावार्थ: रानी मैनाकिनी अपने पुत्र के गमन की जब तैयारी कर रहीं थीं तब व्यय के लिए उन्होंने कुछ स्वर्ण मुद्राएं उनके पेटक में रख दीं। यह तथ्य मछिन्द्रनाथ जानते थे और चोरी के कारण चिंतित रहते थे (कहीं यह धन चोरी न हो जाए इसलिए चिंतित रहते थे)। पहले वह तेलंग देश पहुंचे जहां गोदावरी नदी में स्नान किया। तब गिरिवागिरि वन पहुंचे जहां (महर्षि) वाल्मीकि ने तप किया था। यह मार्ग अति कठिन डाकुओं से पूर्ण, वक्री और मानसिक तनाव से पूर्ण था।

रहते अशांत मछिन्द्रनाथ । किए यह अनुभव गोरखनाथ ।।
पूछे शिष्य क्या कारण महन । जो रहते आप सदैव असन्न ।। (४२८)
कहे तब तथ्य गुरुवर हे शिष्य । दीं रानी कुछ स्वर्ण द्रव्य ।।
हेतु सहाय काल आवश्यक । हूँ अशांत हेतु भय चौर्यक ।। (४२९)
बोले तब गोरखनाथ साधक । नहीं धरो भय हिय हे पालक ।।
हैं हम साधु परिव्राजक । नहीं प्रयोजन धन हिरण्यक ।। (४३०)
कर सकें प्रकट गिरि स्वर्ण । हेतु वर दिए हरि अक्षयगुण ।।
अतः त्यागो मोह कुछ टङ्कन । है जो जड़ सब अशुभ कर्मन ।। (४३१)
बोले तब मछिन्द्रनाथ महत । चाहूँ दूँ सहभोजन संत ।।
अतः आवश्यक यह स्वर्ण धन । बोले तब गोरखनाथ महन ।। (४३२)
देख रहे गुरु वह गिरि अग्र । कर प्रयोग वर दिए जो रूद्र ।।
करूँ परिवर्त स्वर्ण उत्कृष्ट । किए तत्क्षण कहे जो प्रकृष्ट ।। (४३३)

भावार्थ: मछिन्द्रनाथ अशांत रहते हैं, ऐसा अनुभव गोरखनाथ ने किया। शिष्य ने पूछा, 'हे महात्मा, आप सदैव अशांत रहते हैं, इसका क्या कारण है।' तब गुरुदेव ने तथ्य बतलाया, 'रानी ने कुछ स्वर्ण धन दिया है जो आवश्यकता में काम आ सके। मैं चोरी

के डर से अशांत रहता हूँ।' तब साधक गोरखनाथ बोले, 'हे पालक, हृदय में भय नहीं धरो। हम साधु वैरागी हैं। हमें धन, स्वर्ण आदि से कोई प्रयोजन नहीं है। जो शिव शंकर ने हमें वरदान दिया है, उससे हम स्वर्ण का पर्वत उत्पन्न कर सकते हैं। अतः इन कुछ मुद्राओं का मोह त्यागो जो सभी अशुभ कर्मों की जड़ है।' तब मछिन्द्रनाथ बोले, 'मैं संतों को भोज देना चाहता हूँ, अतः स्वर्ण मुद्राएं आवश्यक हैं।' तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'गुरुदेव, वह जो समक्ष पर्वत देख रहे हैं, शिव शंकर के वरदान हेतु उसे मैं उत्कृष्ट स्वर्ण मैं परिवर्तित करता हूँ। तुरंत श्रेष्ठ (गोरखनाथ) ने यह कर दिया।

हुए संतुष्ट तब मछिन्द्रनाथ । कथन उचित है गोरखनाथ ।।
बोले मछिन्द्रनाथ प्रगुण । करूँ निरास मुद्रा स्वर्ण ।। (४३४)
करो गिरि तुम स्व-निरूपन । नहीं नित्यता स्वर्ण अधुन ।।
जैसी आज्ञा गुरु महात्मा । कहे गोरखनाथ पुण्यात्मा ।। (४३५)
हेतु तब स्व-यौगिक क्षमत । किए गिरि शिला परिवर्तित ।।
चले ओर वाल्मीकि आश्रम । पहुंचे शीघ्र वहां महात्म ।। (४३६)

भावार्थ: तब मछिन्द्रनाथ संतुष्ट हुए। गुणी मछिन्द्रनाथ बोले, 'गोरखनाथ, कथन उचित है। मैं स्वर्ण मुद्राओं का त्याग करता हूँ। पर्वत को तुम उसके स्वरुप में करो। हमें अभी स्वर्ण की आवश्यकता नहीं है।' तब पुण्यात्मा गोरखनाथ बोले, 'जैसी आपकी आज्ञा महात्मा गुरुदेव।' तब अपनी यौगिक शक्ति से उन्होंने गिरि को शिला में परिवर्तित कर दिया और वाल्मीकि आश्रम की ओर चले। महात्मा (मछिन्द्रनाथ, गोरखनाथ और मीननाथ) वहां शीघ्र ही पहुँच गए।

देख प्रशांति वहां आश्रम । की मीननाथ प्रशंसा स्थलम ।।
दें हम सहभोज यहां संत । हो यदि आज्ञा गुरु महन्त ।। (४३७)
बोले मछिन्द्रनाथ हे सुत । है यह वन सुदूर आतंकित ।।
नहीं कर सकें साहस सन्तजन । आएं इस भयभीत महावन ।। (४३८)

भावार्थ: उस आश्रम की शान्ति देखकर मीननाथ स्थान की प्रशंसा कर कहने लगे, 'यदि महात्मा गुरुदेव की आज्ञा हो तो हम संतों को भोज यहां दें।' तब मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे पुत्र, यह वन सुदूर और आतंकित है। इस भयभीत वन में आने का साहस संत नहीं कर सकते।'

बोले करबद्ध तब गोरखनाथ। है उचित कथन बाल मीननाथ।।
हे गुरुदेव अति माननीय। है स्थान रमणीक पूजनीय।।(४३९)
यदि दें प्रभु आप अनुमति।आएं मुनि देव गन्धर्व यति।।
सब संत योगी आदि हे नाथ। हो प्रसन्न कहे मछिन्द्रनाथ।।(४४०)
यदि यह इच्छा तुम योगी द्वि। करो सज्जता हे शिष्य दिव्य।।
कर नमन गुरु तब गोरखनाथ। किए आवाहन गन्धर्व-नाथ।।(४४१)
हेतु प्रभाव गंधर्व अस्त्र। हुए प्रकट तब चित्रसेन तत्र।।
बोले गोरखनाथ वह महत। क्या चाहो तुम हे शक्तिमत।।(४४२)

भावार्थ: तब करबद्ध गोरखनाथ बोले, 'बालक मीननाथ का कथन उचित है। हे अति माननीय गुरुदेव, यह स्थान रमणीक और पूजनीय है। यदि प्रभु आज्ञा दें तो हे नाथ, मुनि, देव, गन्धर्व, यति, संत, योगी आदि आएंगे। तब प्रसन्न होकर मछिन्द्रनाथ बोले, 'यदि तुम दोनों योगियों की यह इच्छा है तो हे दिव्य शिष्य (गोरखनाथ), तैयारी करो।' तब गोरखनाथ ने गुरु को प्रणाम कर गंधर्वों के स्वामी का आवाहन किया। गन्धर्व अस्त्र के प्रभाव से वहां चित्रसेन प्रकट हुए और वह महात्मा बोले, 'हे शक्तिशाली गोरखनाथ, क्या चाहते हो?'

बोले गोरखनाथ करबद्ध। धन्य धन्य हे प्रभु प्रबुद्ध।।
हूँ मैं अति कृतज्ञ हे नाथ। हुए प्रकट मह गन्धर्व-नाथ।।(४४३)
है इच्छा गुरुदेव महंत। करें प्रबंध भोज हेतु संत।।
दें निमंत्रण सब साधु महत। यक्ष किन्नर गंधर्व भगवत।।(४४४)
देवी यति आदि त्रिभुवन। करें प्रबंध सबका भोजन।।
निवास और स्थल प्रवचन। है यह मह हमारा निवेदन।।(४४५)

भावार्थ: गोरखनाथ करबद्ध बोले, 'हे प्राज्ञ प्रभु, धन्य है, धन्य है। मैं अति कृतज्ञ हूँ कि गन्धर्व-नाथ प्रकट हुए। महात्मा गुरुदेव की इच्छा है कि संतों के सहभोज का प्रबंध हो। सभी तीनों लोकों में साधु, संत, यक्ष, किन्नर, गंधर्व, देव, देवी, यति आदि को निमंत्रण दें। उनके निवास, भोजन और प्रवचन स्थल का प्रबंध करें, यह हे प्रकृष्ट, हमारा निवेदन है।

बोले चित्रसेन तथास्तु पुत्र।होगा सब प्रबंध उचित यत्र।।
गए वह तब विश्वकर्मा सदन।कहे गोरखनाथ हिय मन्मन्।।(४४६)
दिए देव शिल्पी उन्हें वचन।करूँ प्रबंध निवास व् भोजन।।
दो आप अतिथि निमंत्रण। किए चित्रगुप्त तब अनुसरण।।(४४७)

भावार्थ: चित्रसेन बोले, 'हे पुत्र, तथास्तु। यहां सब उचित प्रबंध होगा।' तब वह विश्वकर्मा के महल गए और गोरखनाथ के हृदय की इच्छा बताई। देव शिल्पी ने उन्हें वचन दिया कि भोजन और निवास का प्रबंध होगा। आप अतिथियों को आमंत्रित करें। चित्रगुप्त ने इसका अनुसरण किया।

दिए निमंत्रण तब वह दैव्य।गुरु बृहस्पति याग्यवल्क्य।।
व्यास वशिष्ठ शुक्र सूर्य।बामदेव भृगु दत्तात्रेय।।(४४८)
कपिल सौभरि अत्रि च्यवन।संग सब संत मुनि ऋषि महन।।
भेजे निमंत्रण पूज्य त्रिदेव।शंकर विष्णु और ब्रह्मदेव।। (४४९)
इन्द्रादि सब वासी व्योमन।आए सुर संत समय प्रवाचन।।
दिए सुर संत सब स्वस्त्ययन।हे त्रियोगी हो सफल जीवन।।(४५०)

भावार्थ: तब वह सभी दैव्यों को निमंत्रण भेजे, गुरु बृहस्पति, याग्यवल्क्य, व्यास, वशिष्ठ, शुक्र, सूर्य, बामदेव, भृगु, दत्तात्रेय, कपिल, सौभरि, अत्रि, च्यवन के साथ सभी संत, मुनि, ऋषि, महात्मा, पूज्य त्रिदेव शंकर विष्णु और ब्रह्मदेव, इन्द्रादि सब स्वर्ग निवासी। सभी सुर और संत निर्धारित समय पर आए। संत और देवताओं ने आशीर्वाद दिए। हे त्रियोगी (मछिन्द्रनाथ, गोरखनाथ और मीननाथ), जीवन में सफल हो।

पधारे तब संत गहिनीनाथ।लगे कंठ उनके मछिन्द्रनाथ।।
बोले गुरुवर मछिन्द्रनाथ।यह अवतार करभञ्जननाथ।।(४५१)
दो संत सुर इन्हें स्वस्त्ययन।हो प्रसन्न सब दिए वर महन।।
बोले तब शिव शंकर भगवन।लूँ अंशावतार मैं भाविन्।।(४५२)
हो नाम निवित्रीनाथ भुवन।दूँ द्वि ज्ञान और स्वस्त्ययन।।
सुन अति प्रिय यह हरि वचन।हुए सुर संत अत्यंत प्रसन्न।।(४५३)

भावार्थ: तब वहां गहिनीनाथ पधारे। मछिन्द्रनाथ ने उनको कंठ से लगाया। गुरुदेव मछिन्द्रनाथ बोले, 'यह करभञ्जननाथ के अवतार हैं। सभी संत और देवता इन्हें आशीर्वाद दें।' तब सबने प्रसन्न हो महात्मा को वर दिए। तब शिव शंकर भगवान् बोले, 'मैं भविष्य में अंशावतार लूंगा जिसका नाम पृथ्वी पर निवित्रीनाथ होगा। तब दोनों को ज्ञान और आशीर्वाद दूंगा।' भगवान् के अति प्रिय वचन सुनकर सभी संत और देवता अत्यंत प्रसन्न हुए।

होने लगी ध्वनि धरा गगन। मन्त्र युक्त त्रिमूर्ति अर्चन ।।
करें प्रशंसा सभी अतिथिगन। सुविधा और रुचिकर भोजन ।। (४५४)
हैं कृत्यज्ञ हम विश्वकर्मा। बनाए सफल यह यज्ञ महात्मा ।।
हुए अति प्रसन्न कुबेर भगवन। दिए धन-धान्य सभी मुनिगन ।। (४५५)

भावार्थ: आकाश और पृथ्वी पर त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) का मन्त्र से पूजन करने की ध्वनि होने लगी। सभी अतिथिगण (आवास) सुविधा और स्वादिष्ट भोजन की प्रशंसा कर रहे हैं। हम महात्मा विश्वकर्मा के कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस यज्ञ को सफल बनाया। कुबेर देव ने अत्यंत प्रसन्न हो सभी मुनिगणों को धन-धान्य दिया।

किए विचार मछिन्द्रनाथ। संग शिष्य श्री गोरखनाथ ।।
उचित हेतु मीननाथ पुत्रक। जाएं स्वर्ग निकट माँ प्रियक ।। (४५६)
था अब नव नाम तिलोत्तमा। अप्सरा स्वर्ग महान आत्मा ।।
हुए सहमत संत गोरखनाथ। गए तब निकट द्वि स्वर्ग-नाथ ।। (४५७)
करें हम द्वि करबद्ध निवेदन। सुनो इंद्रदेव नाथ-व्योमन ।।
माँ मीननाथ है तिलोत्तमा। रह रहीं वह स्वर्ग उत्तमा ।। (४५८)
होगा उचित देव हेतु पुत्र। रहें वह संग स्व-मात तत्र ।।
अतः जाएं मीननाथ बालक। संग आपके व्योम अनुग्राहक ।। (४५९)
रहेंगे वह वहां शांतिमय। आएं मिलने हम उचित समय ।।
करेंगे जब यज्ञ आप हे महन। है उचित बोले तब वृत्रहन् ।। (४६०)
गए तब मीननाथ संग दिव्य। हुई प्रसन्न माँ देख तनय ।।
भेजे गहिनीनाथ त्र्यम्बका। पाएं ज्ञान हेतु वृषणका ।। (४६१)
चला उत्सव निरंतर एक मासक। हो रहे आनंदित आगन्तुक ।।
गए तब स्व-धाम सभी आगत। देते आशीर्वचन दिव्यौघत ।। (४६२)

भावार्थः मछिन्द्रनाथ ने शिष्य श्री गोरखनाथ के साथ विचार किया कि पुत्र मीननाथ के लिए उचित होगा कि वह अपनी प्रिय माँ के पास स्वर्ग जाएं। अब (उनकी माँ मैनाकिनी) वह नए नाम से स्वर्ग की एक महान आत्मा अप्सरा तिलात्तमा थीं। संत गोरखनाथ जी इससे सहमत हुए। तब दोनों इंद्रदेव के पास गए और दोनों करबद्ध विनती करने लगे, 'हे स्वर्ग के स्वामी इंद्रदेव, मीननाथ की उत्कृष्ट माँ तिलोत्तमा हैं जो स्वर्ग में रह रहीं हैं। हे देव, यह पुत्र के लिए उचित होगा कि वह वहां अपनी माँ के साथ रहें। हे दयालु, अतः बालक मीननाथ आपके साथ स्वर्ग में जाएं। वह वहां शांतिपूर्वक रहेंगे। हे महान, हम उचित समय में मिलने आएंगे जब आप यज्ञ करेंगे।' तब इंद्रदेव बोले, 'उचित है।' तब मीननाथ दिव्य (इंद्रदेव) के साथ स्वर्ग गए। अपने पुत्र को देखकर माँ प्रसन्न हुईं। गहिनीनाथ को त्र्यम्बका भेजा ताकि वह शिव शंकर से ज्ञान प्राप्त कर सकें। यह उत्सव एक मास तक चला। सभी अतिथि अति आनंदित थे। (उसके पश्चात) तब सभी अतिथि दिव्य यजमानों को आशीर्वाद देते हुए अपने अपने घर चले गए।

सम्राट भर्तृहरि मिलन

बोले तब गुरु मछिन्द्रनाथ। रहूँ गर्वगिरि गोरखनाथ।।
करूँ साधना मैं शिव ईषन। जाओ तुम तीर्थ प्रवर्तन।।(४६३)
चले योगी गोरखनाथ महत। गए तुरंत गिरिनार पर्वत।।
मिले वह दत्तात्रेय भगवन। पाए यथोचित आशीर्वचन।।(४६४)
बोले तब दत्तात्रेय अनंत। जाओ गोरखनाथ अवन्ति।।
हैं वहां भर्तृहरि राजन। द्वादस वर्ष से गहन खिन्न।।(४६५)
कर स्थित स्थल श्मशान आसन। कर रहे पिङ्गला नाम जपन।।
है कौन यह पिङ्गला भगवन। पूछे गोरखनाथ सविनयन।।(४६६)

भावार्थ: तब मछिन्द्रनाथ बोले, 'मैं गर्वगिरि पर्वत पर रहकर शिव भगवान् की साधना करूंगा। तुम (गोरखनाथ) तीर्थ भ्रमण के लिए जाओ।' योगी गोरखनाथ तब (तीर्थ यात्रा हेतु) चले और शीघ्र गिरिनार पर्वत पहुंचे। वहां वह दत्तात्रेय भगवान् से मिले और यथोचित आशीर्वाद पाया। तब दत्तात्रेय भगवान बोले, ' गोरखनाथ तुम अवन्ति (देश) जाओ। वहां सम्राट भर्तृहरि बारह वर्ष से अत्यंत दुःखी हो श्मशान स्थल में आसन लगाकर पिङ्गला नाम का जप कर रहे हैं।' तब विनय पूर्वक गोरखनाथ पूछे, 'हे भगवान्, यह पिङ्गला कौन है।'

बोले तब दत्तात्रेय ज्ञानी। थीं पिङ्गला इनकी रानी।।
हुईं बारह वर्ष पूर्व मृत। कर स्मरण हैं दुःखी भूपति।।(४६७)
है दशा उनकी अति अभव्य। दिन रात रटते नाम प्रिय।।
दो उन्हें तुम समाश्वासन। बोले गोरखनाथ हे भगवन।।(४६८)
जाऊं मैं अब अवन्ति पट्टन। करूँ पालन हरि निर्देशन।।
करूँ प्रयास मिले उन्हें शम। चलूँ हेतु पालन अनुक्रम।।(४६९)

भावार्थ: तब प्रमत दत्तात्रेय बोले, 'पिङ्गला उनकी रानी थीं। बारह वर्ष पूर्व उनकी मृत्यु हो गई। उनको स्मरण कर दिन रात सम्राट दुःखी होते हैं। उनकी दशा अत्यंत दयनीय है। दिन रात (अपनी) प्रिय का नाम रटते रहते हैं। तुम उन्हें सांत्वना दो।' तब गोरखनाथ बोले, 'हे भगवन, मैं अब अवन्ति नगर जा आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। प्रयास करूंगा कि उन्हें शान्ति मिले। (आपकी) आज्ञा पालन हेतु अब चलूँ।'

पा आदेश दत्तात्रेय भगवन । गए गोरखनाथ अवन्ति पट्टन ।।
पहुंचे श्मशान स्थल वह महन । देखे रटत पिङ्गला राजन ।। (४७०)
हुए दुःखी देख नृप दशा । करें विचार हो दूर हताशा ।।
आया एक पटु विचार मन । गए लेने कुम्भ पङ्क आपन ।। (४७१)
आए तब वापस स्थल श्मशान । बैठे दुःखित जहां देश-शान ।।
पटका भूमि कुम्भ विक्रुष्ट । हुई ध्वनि उच्च जागे उत्कृष्ट ।। (४७२)
किए संग्रह वह भेदित खंड । रुदित कहें करे कोई अखंड ।।
बोले नृप क्यों करते क्रंदन । नहीं संभव अखंड हों शल्कन ।। (४७३)

भावार्थ: दत्तात्रेय भगवान् का आदेश पाकर गोरखनाथ अवन्ति नगर गए। वह महात्मा श्मशान स्थल पर गए। राजा को 'पिङ्गला' रटते हुए देखा। सम्राट की दशा देखकर दुःखी हुए। उनकी हताशा को दूर करने का विचार करने लगे। तभी एक निपुण विचार मन में आया। वह हाट से एक मिट्टी का घड़ा ले आए और श्मशान स्थल वापस आए जहां देश की शान (सम्राट) दुःखित बैठे थे। उन्होंने (गोरखनाथ ने) कुम्भ को भूमि पर तीव्रता से पटका। उसकी तीव्र ध्वनि से श्रेष्ठ (राजा) जाग गए। संत ने टूटे हुए टुकड़ों को एकत्रित किया और रुदित कहने लगे कि कोई इनको जोड़े। राजा ने पूछा, 'आप क्यों रोते हैं? इन टुकड़ों का जोड़ना संभव नहीं है।'

बोले गोरखनाथ हे राजन । कुम्भ है प्रिय अधिक जीवन ।।
कैसे सहूँ वियोग स्नेहन । क्या नहीं रुदिन उचित राजन ।। (४७४)
बोले हंस भर्तृहरि राजन । लगते तुम योगी वेश भूषन ।।
पर आसक्ति वस्तु निर्जीवन । नहीं शोभित हेतु यह महन ।। (४७५)

भावार्थ: गोरखनाथ बोले, 'रे राजन, यह घड़ा मुझे जीवन से अधिक प्रिय है। इस प्रिय का वियोग कैसे सहूँ? मेरा रोना हे सम्राट, क्या उचित नहीं है? हंसकर तब सम्राट भर्तृहरि बोले, 'वेश-भूषा से तुम योगी लगते हो, परन्तु निर्जीव वस्तु पर आसक्त हो। यह महात्मा को शोभा नहीं देता।'

बोले गोरखनाथ हे राजन । है नहीं क्या यह सत्य वर्णन ।।
हो योगी वैरागी सिद्ध संत । मनुष्य मूर्ख या अति प्रमत ।। (४७६)

होता दुःख जब खोता प्रिय। हूँ मैं नर नहीं कोई दिव्य।।
हूँ शोकाकुल खोया प्रेष्ठ। करूँ क्या मैं कहो श्रेष्ठ।।(४७७)

भावार्थ: गोरखनाथ बोले, 'हे राजन, क्या यह सत्य वर्णित नहीं है कि चाहे योगी हो, वैरागी हो, सिद्ध हो, संत हो, मूर्ख या अत्यंत बुद्धिमान मनुष्य हो, जब प्रिय वस्तु नष्ट होती है तो दुःख होता है। मैं मनुष्य हूँ, कोई दिव्य नहीं। प्रियतम के खोने से शोकाकुल हूँ। हे श्रेष्ठ, बताओ, क्या करूँ?'

कहे भर्तृहरि है परिशोधन। न करो रुदन हेतु अचेतन।।
जाओ आपण करो क्रय कुम्भ। पाओ वहां सहस्त्र सम कुम्भ।।(४७८)
बोले संत उचित कथन राजन। है सुलभ दो विमर्श अन्य जन।।
पर तुम करते क्यों क्रंदन। हेतु सम पङ्क विनाशी तन।।(४७९)
क्या नहीं करते तुम सादृश्य। क्या नहीं तुम्हारा यह आशय।।
कर रहे शोक हेतु मृत प्रिय। क्या उचित हेतु नृप दिव्य।।(४८०)

भावार्थ: भर्तृहरि बोले, 'इसका समाधान है। निर्जीव वस्तु के लिए रुदन मत करो। हाट में जाओ और (नया) घड़ा खरीदो। वहां इस प्रकार के सहस्त्रों घड़े पाओगे।' तब संत बोले, 'राजन, आपका कथन उचित है। दूसरों को विमर्श देना सुलभ है। तुम मिट्टी समान विनाशी तन पर क्रंदन क्यों कर रहे हो? तुम भी ऐसा ही तो कर रहे हो? क्या तुम्हारा आशय यही नहीं है? मृत प्रिय वस्तु के लिए शोक कर रहे हो जो श्रेष्ठ सम्राट के लिए क्या उचित है?'

बोले तब भर्तृहरि राजन। क्या सम रानी और वासन।।
रानी पिङ्गला थीं अगम्य। पर मृत्तिका कुम्भ है गम्य।।(४८१)
बोले गोरखनाथ हे राजन। देखो सहस्त्र पिङ्गला भुवन।।
देखो तुम चहुँ ओर स्वयं। हेतु व्यानास्त्र किए भ्रम।।(४८२)
दिखीं एक सहस्त्र पिङ्गला। हर ओर नृप थीं यह महिला।।
बोले योगी करो अब खोज। है कौन सी आपकी ओज।।(४८३)

भावार्थ: तब सम्राट भर्तृहरि बोले, 'क्या रानी और कुम्भ सामान हैं? रानी पिङ्गला अप्राप्य हैं, जबकि मिट्टी के कुम्भ प्राप्य हैं।' तब गोरखनाथ बोले, 'हे राजन, इस पृथ्वी

पर सहस्र पिङ्गला हैं। स्वयं अपने चारों ओर देखो।' तब व्यानास्त्र के माध्यम से उन्होंने चमत्कार किया। चारों ओर एक सहस्त्र पिङ्गला दिखने लगीं। नृप के हर ओर यह महिला थीं। तब योगी (गोरखनाथ) बोले, 'आपकी ओज (आभा) कौन सी है, उसे खोजो।'

न पहचान सके वह सुदर्शना। कह सकें पिङ्गला स्व-शोभना।।
हो अचंभित पूछे तब प्रश्न। प्रति पिङ्गला विषय उपच्छन्न।।(४८४)
दीं हर नारि सदृश्य उत्तर। हुए नृप भ्रमित निरुत्तर।।
बोलीं तब सब नारि एक साथ। हो नहीं भ्रमित हे भूनाथ।।(४८५)
नहीं पाए अमरता भूजन। निश्चित अवश्य उनका मरण।।
कोई शीघ्र कोई तदन्तर। नहीं रहे जीव कोई अनन्तर।।(४८६)
है जब मरण जन अनिवार्य। करो क्यों शोक तुम हे आर्य।।
लो शरण योगी गोरखनाथ। चाहो यदि कल्याण हे नाथ।।(४८७)
समझो तुम पथ निर्मोचन। हेतु ज्ञान इन योगी महन।।
हुईं अंतर्ध्यान सब शोभन। कह यथार्थ सत्य कटु वचन।।(४८८)

भावार्थ: वह नारी को नहीं पहचान सके जिसे स्व-पत्नी पिङ्गला कहें। अचंभित हो तब वह प्रति पिङ्गला से गुप्त प्रश्न पूछने लगे। सभी नारियों ने समान उत्तर दिए। तब सम्राट भ्रमित और निरुत्तर हो गए। तब सब नारियां एक साथ बोलीं, 'हे सम्राट, भ्रमित न हो। किसी भी प्राणी को अमरता नहीं मिली। सबका मरण शीघ्र अथवा देर से निश्चित है। कोई अनंत काल तक जीवित नहीं रह सकता। जब प्राणी का मरण निश्चित है तो हे आर्य, शोक क्यों करते हो? हे नाथ, यदि कल्याण चाहते हो तो गोरखनाथ की शरण लो। इन महात्मा योगी के ज्ञान से मोक्ष का मार्ग समझो।' यह सत्य, वास्तविक और कटु वचन कह सभी नारियां अंतर्ध्यान हो गईं।

हुआ बोध भर्तृहरि राजन। हुई विरक्ति भौतिक जीवन।।
तब किए गोरखनाथ नमन। बोले योगी सुनो हे राजन।।(४८९)
की कृपा दत्तात्रेय भगवन। हो कृत्यज्ञ स्वरुप नारायन।।
मेरे गुरु हैं मछिन्द्रनाथ। हैं वह भी शिष्य महानाथ।।(४९०)
हेतु इस सम्बन्ध हे राजन। हो तुम गुरु भाई मानन।।
करो राज्य का उचित शासन। कर हृदय पिङ्गला धारन।।(४९१)

भावार्थ: तब सम्राट भर्तृहरि को आत्म-ज्ञान हुआ। भौतिक जीवन से उन्हें विरक्ति मिली। गोरखनाथ का अभिनंदन किया, तब योगी (गोरखनाथ) बोले, 'दत्तात्रेय भगवान ने कृपा की है, उन नारायण रूप के कृतज्ञ हो। मेरे गुरु मछिन्द्रनाथ हैं जो उनके (दत्तात्रेय भगवान्) शिष्य हैं। हे राजन, इस सम्बन्ध से तुम मेरे आदरणीय गुरु भाई हुए। हृदय में पिङ्गला को धारण कर अपने राज्य का उचित शासन करो।'

बोले भर्तृहरि हे साधक । करो कृपा तुम मुझ याचक ।।
ले चलो निकट दत्तात्रेय । करूँ व्यक्त कृतज्ञता दैव्य ।। (४९२)
समझ गया हूँ मैं शक्ति योग । हुई दूर मम लालसा भोग ।।
करूँ प्राप्त मैं आत्म-बोधन । कर नमन दत्तात्रेय भगवन ।। (४९३)
पर पहले चलो मेरे पट्टन । दो अनुज तुम आशीर्वचन ।।
कहे है उचित गोरखनाथ । गए महल संग तब भूनाथ ।। (४९४)

भावार्थ: भर्तृहरि बोले, 'हे साधक, मुझ याचक पर कृपा करो। दत्तात्रेय (भगवान्) के निकट ले चलो। उन दैव्य को मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर सकूं। मैं योग की शक्ति समझ चुका हूँ। मेरी (भौतिक) लालसा दूर हो गई है। दत्तात्रेय भगवान् को नमन कर मैं आत्म-ज्ञान प्राप्त करूँ। परन्तु पहले मेरे नगर चलो और मेरे छोटे भाई को आशीर्वाद दो।' गोरखनाथ ने कहा, उचित है। तब वह सम्राट के महल गए।

मिला समाचार विक्रमराज । आ रहे भर्तृहरि महाराज ।।
आए द्वार हो अति प्रसन्न । करने स्व-अग्रज अभिनन्दन ।। (४९५)
जब देखे योगी उनके साथ । पड़े तुरंत पग गोरखनाथ ।।
बोले कृपा आपकी हे नाथ । हो गया अवन्ति राज्य सनाथ ।। (४९६)
करें अब नृप अग्रज शासन । बन सेवक बीते अब जीवन ।।
बोले तब योगी गोरखनाथ । नहीं करें शासन अब भूनाथ ।। (४९७)
हुए विरक्त भर्तृहरि राजन । है इच्छा पाएं ज्ञान-आत्मन ।।
जा रहे वह दत्तात्रेय शरन । नहीं करो तुम विकृत मन ।। (४९८)

भावार्थ: जब विक्रमराज को समाचार मिला कि महाराज भर्तृहरि आ रहे हैं, तब अत्यंत प्रसन्न हो वह अपने बड़े भाई का स्वागत करने द्वार पर आए। जब योगी को उनके साथ देखा तो तुरंत गोरखनाथ के चरण स्पर्श किए और बोले, 'हे नाथ, आपकी कृपा

हुई। अवन्ति राज्य सनाथ हो गया। अब बड़े भाई सम्राट शासन करें और मैं उनकी सेवा में जीवन बिताऊं।' तब योगी गोरखनाथ बोले, 'अब सम्राट (भर्तृहरि) शासन नहीं करेंगे। सम्राट भर्तृहरि विरक्त हो गए हैं। उनकी इच्छा ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त करने की है। वह (भगवान्) दत्तात्रेय की शरण में जा रहे हैं। तुम उनके मन को विचलित न करो।'

बोले विक्रमराज पड़ चरन । योगी होगा यह द्वन्द महन ।।
हैं अति प्रिय प्रजा राजन । नहीं जाने देंगे वह स्नेहन ।। (४९९)
होगा सन्देश देश रिपुवत । समझेंगे हो गए हम अशक्त ।।
करो कुछ हे योगी महात्मा । बदलें निर्णय पूज्यात्मा ।। (५००)

भावार्थ: विक्रमराज (गोरखनाथ जी के) चरण पड़ कर बोले, 'हे योगी यह महान द्वन्द होगा। प्रजा को सम्राट अति प्रिय हैं। वह अपने प्रिय को नहीं जाने देंगे। शत्रु देशों के लिए भी सन्देश जाएगा कि हम निर्बल हो गए हैं। हे महात्मा योगी, कुछ करो जिससे पूज्य महापुरुष (सम्राट) निर्णय बदलें।'

सुनो हे अनुज विक्रमराज । बोले गोरखनाथ योगीराज ।।
अग्रज कर चुके हैं संकल्प । हों विरक्त छोड़ रम्य लोकप ।। (५०१)
अतः न करो तुम कोई प्रयास । हों लिप्त पुनः भव विलास ।।
हेतु सुख परलोक स्नेहन । है नितांत गुरुदेव शरन ।। (५०२)

भावार्थ: योगीराज गोरखनाथ बोले, 'हे अनुज विक्रमराज, बड़े भाई संकल्प कर चुके हैं कि शासन की रम्यता से विरक्त हों। अतः तुम कोई ऐसा प्रयास न करो जिससे वह पुनः लौकिक विलास में लिप्त हो जाएं। हे प्रिय, परलोक के सुख के लिए गुरुदेव की शरण में जाना आवश्यक है।'

बोले तब विक्रमराज हे सिद्ध । लें अग्रज संन्यास हों बुद्ध ।।
है उचित पर देखो स्वास्थ्य । क्या सह सके तन है सामर्थ्य ।। (५०३)
दो आज्ञा करें वास आलय । हेतु अवधि जब तक अनामय ।।
बोले तब गोरखनाथ महन । यद्यपि कहे तुम उचित कथन ।। (५०४)

पर जानो होता हृदय दुर्बल। खींचे भव हेतु अदृश्य बल।।
है संभव आज किए संकल्प। हेतु वैराग्य उत्कृष्ट लोकप।।(५०५)
पर हो परिवर्तित कल मन। जो नहीं शुभ हेतु प्रगेतन।।
उचित नहीं रोको युवराज। हो तुम समर्थ कर सको राज।।(५०६)
न हो चिंतित हेतु स्वास्थ्य। होंगे स्वस्थ्य हेतु दया दैव्य।।
छोड़ो लें अग्रज यह निश्चय। बोलो भर्तृहरि क्या चाह हिय।।(५०७)

भावार्थ: तब विक्रमराज बोले, 'हे सिद्ध (गोरखनाथ), यह उचित है कि बड़े भाई संन्यास से आत्म-ज्ञान प्राप्त करें, लेकिन उनके स्वास्थ्य को देखो। शरीर में (तप कष्ट) सहन करने की सामर्थ्य नहीं है। आज्ञा दो कि जब तक वह स्वस्थ्य हों, महल में निवास करें।' तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'यद्यपि तुमने उचित वचन कहे, पर हृदय की दुर्बलता को समझो। वह अदृश्य शक्ति से संसार की ओर खींचता है। यह संभव है कि आज श्रेष्ठ सम्राट ने वैराग्य का संकल्प लिया है, पर कल मन बदल सकता है जो भविष्य के लिए शुभ नहीं है। हे युवराज, यह उचित नहीं है कि तुम उन्हें रोको। तुम राज (शासन) करने में समर्थ हो। इनके स्वास्थ्य की चिंता न करो। दैव्य (भगवान् दत्तात्रेय) की दया से स्वस्थ्य होंगे। यह निर्णय बड़े भाई पर छोड़ो। हे (सम्राट) भर्तृहरि, हृदय में क्या चाह है, बोलो।'

बोले भर्तृहरि हे महाराज। है दृढ़ संकल्प छोड़ूँ राज।।
हेतु शरण दत्तात्रेय भगवन। पाऊँ दुर्लभ आत्म-बोधन।।(५०८)
हुए विक्रमराज अति खिन्न। बोले है आज्ञा अग्रज नैधन।।
बीते तीन दिन इस प्रकार। छोड़ा नृप तब स्व-आगार।।(५०९)
किए धारण वह वस्त्र तपस्वी। त्यागे मण्डन वस्त्र राजस्वी।।
दी विदा अनुज प्रजाजन। भर नेत्र अश्रु हो अति खिन्न।।(५१०)

भावार्थ: भर्तृहरि बोले, 'हे महाराज (गोरखनाथ), मेरा दृढ़ संकल्प है कि राज छोड़ूँ। दत्तात्रेय भगवान् की शरण में दुर्लभ आत्म-ज्ञान पाऊँ।' विक्रमराज (यह निर्णय सुन) अत्यंत दुःखी हुए और बोले, 'बड़े भाई की आज्ञा अंतिम है (अर्थात जैसी बड़े भाई की इच्छा)।' इस प्रकार तीन दिन बीत गए, तब सम्राट ने अपना निवास छोड़ा। तपस्वी के वस्त्र धारण किए। आभूषण और राजसी वस्त्र त्याग दिए। प्रजा और विक्रमराज ने दुःखी हो नेत्रों में अश्रुओं से उन्हें विदा किया।

रुक गए योगी बाह्य पट्टन । बोले नृप है मन चलात्मन् ।।
दौड़े ओर भौतिक सुख भोग । है कठिन अत्यंत राह योग ।। (५११)
चाहो जाना वापस शासन । है अभी समय हेतु विवेचन ।।
कर सको तुम स्तुति भगवन । रह महल करते हुए शासन ।। (५१२)

भावार्थः नगर के बाहर योगी रुक गए और बोले, 'हे सम्राट, यह मन चलायमान है। सुख भोग की ओर दौड़ता है। योग का मार्ग अत्यंत कठिन है। यदि अपने राज्य वापस जाना चाहते हो, तो अभी भी विवेचना का समय है। भगवान् की स्तुति महल में रहते राज्य करते हुए भी कर सकते हो।'

बोले नृप है सत्य यह कथन । पर योगी है मेरा दृढ़ मन ।।
है नहीं संतोष बिन योग । नहीं शासन और भव भोग ।। (५१३)
चलो महात्मा हेतु दर्शन । दत्तात्रेय निरूपण भगवन ।।
है उचित बोले गोरखनाथ । जैसी आपकी इच्छा भूनाथ ।। (५१४)
पर समझो एक कठोर नियम । हेतु प्राप्ति आत्म-ज्ञानम् ।।
हैं सब नारि सम बहन माता । न हो मन मोहित ओर कान्ता ।। (५१५)
रहना पड़े निर्भर बस भिक्षा । संभव कई दिन बीतें बुभुक्षा ।।
कर सको यदि पालन यह विधि । हो तब नृप योग की सिद्धि ।। (५१६)
जाओ हेतु भिक्षा स्व-पट्टन । करो गमन स्व-महल हे राजन ।।
आएंगी रानी देने भिक्षा । कह माता मांगो तुम भिक्षा ।। (५१७)
कर सको यदि तुम यह कार्य । बिन काम भावना हे आर्य ।।
समझो हुआ तब सिद्ध योग । हुआ विरक्त मन लौकिक भोग ।। (५१८)

भावार्थः सम्राट बोले, 'यह कथन सत्य है परन्तु योगी, मेरा मन दृढ़ है। योग के बिना संतोष नहीं है। राज्य और भौतिक भोग में (संतोष) नहीं है। हे महात्मा, भगवद् स्वरूप दत्तात्रेय के दर्शन के लिए चलो। तब गोरखनाथ बोले, 'उचित है। जैसी सम्राट आपकी इच्छा। परन्तु आत्म-ज्ञान प्राप्ति के लिए एक कठोर नियम समझो। सभी नारियां बहन और माता के समान हैं। कभी सुंदरी से मन मोहित न हो। केवल भिक्षा पर निर्भर रहना पड़ता है। कई दिनों भूखा रहना पड़ता है। यदि इन नियमों का पालन कर सको तो सम्राट, योग की सिद्धि होगी। हे सम्राट, अपने नगर भिक्षा हेतु जाओ। अपने महल को जाओ। रानियां भिक्षा देने आएंगी। उन्हें माता सम्बोधित कर भिक्षा मांगो। हे आर्य, यदि

बिना काम भावना के यह कार्य कर सको तो समझो योग सिद्ध हुआ और मन सांसारिक भोग से विरक्त हुआ।'

है उचित आपका योगी कथन । बोले नम्र भर्तृहरि राजन ।।
किए वह योगी आज्ञा पालन । गए हेतु भिक्षा राजभवन ।। (५१९)
पुकारे अलख पहुँच द्वार । दो भिक्षा स्वामिन आगार ।।
निकलीं रानी सुन धीर स्वर । देखा खड़े समक्ष प्रियवर ।। (५२०)

भावार्थ: नम्र सम्राट भर्तृहरि बोले, 'हे महात्मा योगी, उचित है।' योगी की आज्ञा पालन कर तब वह भिक्षा के लिए महल गए। द्वार पर पहुँच कर 'अलख' की पुकार दी, 'हे गृह स्वामिनी, भिक्षा दो।' पहचाना स्वर सुन रानियां निकलीं। उन्होंने सामने प्रियतम को खड़े देखा।

पड़ पग देवी बोलीं राजन । हैं आप हमारे नाथ स्नेहन ।।
छोड़ो हठ तुम हेतु तपोधन । आओ अन्तःपुर हे राजन ।। (५२१)
करो भोग धन काम ऐश्वर्य । होगा तुष्ट तन मन आर्य ।।
बोले भर्तृहरि सुनो मान्य । नहीं हम अब नृप असामान्य ।। (५२२)
हैं हम तपस्वी शिष्य महन । समझो हमें सम सुत हे मानन ।।
दो भिक्षा हेतु निर्वाह जीवन । नहीं सम्बन्ध मध्य हम पूर्वतन ।। (५२३)

भावार्थ: सम्राट के चरण पड़ रानियाँ बोलीं, 'हे प्रियतम, आप हमारे स्वामी हैं। हे सम्राट, वैरागी होने की हठ छोड़कर अंतःपुर आएं। धन, काम और ऐश्वर्य का भोग करें। हे आर्य, इससे आपका तन और मन संतुष्ट होगा।' तब भर्तृहरि बोले, 'हे आदरणीय, सुनो। अब हम विशेष सम्राट नहीं हैं। हम महात्मा के शिष्य तपस्वी हैं। हे पूज्य, हमें अपने पुत्रवत समझो और जीवन निर्वाह के लिए भिक्षा दो। हमारे मध्य पूर्ववत सम्बन्ध (पति-पत्नी सम्बन्ध) नहीं है।

बोलीं सब राज्ञी हे राजन । हो हमारे नाथ नहीं नंदन ।।
दिया विवाह काल यह वचन । रहेंगे साथ पर्यन्त मरन ।। (५२४)
न करो ध्वंश यह अधिकृति । करें हम सब विनम्र विनति ।।
बोले तब भर्तृहरि राजन । हो न माते तुम वृथा खिन्न ।। (५२५)

कहा जैसे मैंने पूर्ववत । हूँ न अब भर्तृहरि भूपति ।।
दो भिक्षा या करूँ मैं गमन । व्यर्थ न करो समय तुम मानन ।। (५२६)

भावार्थ: तब सब रानियां बोलीं, 'हे राजन, आप हमारे स्वामी हैं, पुत्र नहीं। विवाह समय वचन दिया था की मरण पर्यन्त साथ रहेंगे। हमारे अधिकार मत छीनो, यह हम सब आपसे विनम्र विनती करते हैं।' तब सम्राट भर्तृहरि बोले, 'हे माताओं, व्यर्थ में दुःखी न हो। जैसा मैंने पहले कहा कि मैं अब भर्तृहरि सम्राट नहीं हूँ। भिक्षा दो, अथवा मैं प्रस्थान करूँ। हे आदरणीय, तुम समय व्यर्थ न करो।'

सुनो तुम सब सत्य मेरे वचन । चाहो स्व-मंगल यदि स्नेहन ।।
करो महिमामंडन भगवन । कर धार हिय नित्य-स्वरूपन ।। (५२७)
समझ गईं सब रानी तथ्यन । नहीं हो नृप मन परिवर्तन ।।
यदि कीं वह हठ हेतु लौक्यन । संभव लौटें नृप बिन अन्न ।। (५२८)
दीं अतः तुरंत उन्हें भिक्षा । अश्रु नयन यद्यपि अनिच्छा ।।
हुए नहीं देख द्रवित राजन । चले त्याग महल निकट महन ।। (५२९)

भावार्थ: (नृप भर्तृहरि ने कहना क्रमशः रखा) 'तुम सब मेरे सत्य वचन सुनो। हे प्रिय, यदि अपना कल्याण चाहती हो तो हृदय में नित्य स्वरुप (नारायण) को धारण कर भगवान् का महिमामंडन करो।' तब नृप की रानियां समझ गईं कि सम्राट का मन परिवर्तित नहीं होगा। यदि उन्होंने सांसारिकता की हठ की, तब संभव है कि नृप बिना अन्न (भिक्षा) के लौट जाएं। अतः उन्होंने तुरंत भिक्षा दी। इच्छा न होते हुए भी नेत्रों में जल भरा था। सम्राट यह देखकर द्रवित नहीं हुए (उनके नेत्रों में अश्रु देखकर भी सम्राट द्रवित नहीं हुए) और महल छोड़ महात्मा (गोरखनाथ) के निकट चले।

देख भर्तृहरि लौटे ले अन्न । हुए गोरखनाथ अति प्रसन्न ।।
हुआ विश्वास नृप संकल्प । है अटल मन उनका हेतु तप ।। (५३०)
है समय दत्तात्रेय दर्शन । अब विलम्ब हेतु किस ऊहन ।।
निकाली भस्म तुरंत स्व-पेटक । की वह मन्त्रित यानास्त्रक ।। (५३१)
लगाई मस्तक स्व और राजन । पहुंचे आश्रम तत्क्षण भगवन ।।
देख समक्ष श्री दत्तात्रेय । की पूजा बहु भांति दैव्य ।। (५३२)

भावार्थ: भर्तृहरि अन्न (भिक्षा) ले कर लौट आए हैं, यह देख गोरखनाथ अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्हें सम्राट के संकल्प पर विश्वास हो गया कि उनका मन तप हेतु अटल है। अब दत्तात्रेय के दर्शन का समय हो गया। विलम्ब किस कारण किया जाए? उन्होंने अपनी पेटक से भस्म निकाली और उसे यानास्त्रक (मन्त्र) से मन्त्रित किया (यानास्त्रक मन्त्र का आवाहन विमान को प्रकट होने के लिए किया जाता है)। भस्म नृप और स्वयं के मस्तिष्क पर लगाईं। वह तत्क्षण भगवान् (दत्तात्रेय) के आश्रम पहुँच गए। अपने समक्ष श्री दत्तात्रेय को देख उन दैव्य की बहु भांति (उन्होंने) पूजा की।

बोले तब दत्तात्रेय भगवन । हो तुम मुझे अति प्रिय राजन ।।
भेजे मैंने गोरखनाथ महन । करें दूर आपका सम्मोहन ।। (५३३)
हूँ प्रसन्न अति मैं हे राजन । हो तत्पर लेने अब बोधन ।।
कर स्वीकार शिष्य भर्तृहरि । दिए ज्ञान तब दत्तात्रेय हरि ।। (५३४)

भावार्थ: तब दत्तात्रेय भगवान बोले, 'हे राजन, तुम मुझे अत्यंत प्रिय हो। मैंने महात्मा गोरखनाथ को तुम्हारा मोह भंग करने भेजा था। हे राजन, मैं अति प्रसन्न हूँ कि तुम आत्म-ज्ञान लेने को तत्पर हो।' तब भर्तृहरि को शिष्य स्वीकार कर भगवान् दत्तात्रेय ने उन्हें (आत्म) ज्ञान दिया।

चौरंगीनाथ का गहन तप

रह रहे दत्तात्रेय आश्रम। योगी गोरखनाथ महात्म।।
आए मिलने मछिन्द्रनाथ। दिए आशीर्वाद सर्वनाथ।।(५३५)
है इच्छा करूँ तीर्थ भ्रमन। बोले तब मछिन्द्रनाथ महन।।
दें यदि आज्ञा श्री भगवन। बोले दत्तात्रेय हो प्रसन्न।।(५३६)
हो मछिन्द्रनाथ पूर्ण मन्मन्। जाओ गोरखनाथ सम्भूयन।।
कर धारण आज्ञा प्रभुवर। चले संग गोरखनाथ शिष्यवर।।(५३७)
पहुंचे कौण्डिल्यापुर पट्टन। देखे बालक विहीन कर चरन।।
था त्यक्त चौरंगी त्रिपथन। कराहता हेतु क्षत वेदन।।(५३८)

भावार्थ: महात्मा योगी गोरखनाथ दत्तात्रेय आश्रम में रह रहे थे। वहां मिलने मछिन्द्रनाथ आए। भगवान् (सर्वनाथ दत्तात्रेय) ने उन्हें आशीर्वाद दिया। तब महात्मा मछिन्द्रनाथ बोले, 'यदि प्रभु (दत्तात्रेय) आज्ञा दें तो तीर्थ यात्रा की इच्छा है।' तब अत्यंत प्रसन्न हो दत्तात्रेय बोले, 'मछिन्द्रनाथ, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। अपने साथ गोरखनाथ को ले जाओ।' प्रभु (दत्तात्रेय) की आज्ञा धारण कर तब शिष्य गोरखनाथ (गुरुदेव मछिन्द्रनाथ के) साथ चले। वह कौण्डिल्यापुर नगर पहुंचे। वहां उन्होंने चौरंगी चौराहे पर एक हस्त और पग विहीन परित्यक्त बालक देखा। वह घाव के कारण दर्द से कराह रहा था।

हो रहा एकत्रित समूह जन। पर नहीं था कोई परिजन।।
पूछे मछिन्द्रनाथ एक जन। कौन यह किस हेतु निक्षिप्तन।।(५३९)
बोला तब सज्जन हे महात्मन। नाम कृष्णागर सुत राजन।।
हैं पिता सशांगर राजन। दिए दंड हेतु कोई व्यसन।।(५४०)
काटे कर पग इस बाल तरुन। कर रहे निंदा यह समूह जन।।
पर निःसहाय हेतु आज्ञप्ति। नहीं कर सकें मदद क्लिशिति।।(५४१)

भावार्थ: पुरुषों की भीड़ इकट्ठी हो रही थी, लेकिन कोई मददगार नहीं था। तब मछिन्द्रनाथ ने एक पुरुष से पूछा , 'यह कौन है और किस कारण त्यागा गया है?' तब वह सज्जन बोले, 'हे महात्मा, इसका नाम राजकुमार कृष्णागर है और इसके पिता सम्राट सशांगर हैं। किसी अपराध के कारण उन्होंने इसे दंड दिया है। इस युवा

बालक के हाथ पैर काट दिए हैं। यह पुरुषों की भीड़ इसकी (राजा के कृत्य की) निंदा कर रही है पर राजाज्ञा के कारण इस दुःखी की मदद करने के लिए असमर्थ है।'

मछिन्द्रनाथ करने लगे मनन। अवश्य यह हेतु कर्म पूर्वतन ।।
दिव्य दृष्टि से जाने कारण। हेतु जन्म यह बाल विलक्षण ।। (५४२)
कर रहे थे कृष्णा नद प्लवन। एक बार श्री सशांगर राजन ।।
जब किए वह अर्पण जल कञ्जर। वीर्य शिव गिरा उनके कर ।। (५४३)
लिया जन्म इस हेतु एक बालक। बिन मात पिता और कोशक ।।
किए बालक पालन वह राजन। था मेधावी शक्त गुण संपन्न ।। (५४४)
हुईं महारानी अति ईर्ष्यक। रचीं षड्यंत्र हेतु वध बालक ।।
कहीं नृप रखे काम दृष्टि। दो उपयुक्त दंड हेतु कुदृष्टि ।। (५४५)

भावार्थ: मछिन्द्रनाथ सोचने लगे कि यह अवश्य पूर्व जन्म का फल है। दिव्य दृष्टि से उन्होंने इन विलक्षण बालक के जन्म का कारण जाना। एक बार जब नृप श्री सशांगर कृष्णा नदी में स्नान कर रहे थे और सूर्यदेव को जल अर्पण कर रहे थे, तब शिव वीर्य उनके हाथ में गिरा। उसी कारण बिना माता, पिता और गर्भ के इस बालक का जन्म हुआ। राजा ने इस बालक का पालन किया। वह मेधावी, बलशाली और गुण संपन्न था। महारानी को (इस बालक से) अत्यंत ईर्ष्या हुई। उन्होंने इस बालक के वध के लिए षड्यंत्र रचा। वह राजा से बोलीं, 'यह बालक (उनके प्रति) काम दृष्टि रखता है। इस कुदृष्टि के लिए इसे उचित दंड दें।'

हुए अति क्रोधित तब राजन। किया विहीन बालक कर चरन ।।
सुनाई यह कथा गोरखनाथ। तब महात्मा मछिन्द्रनाथ ।। (५४६)
सुन पीड़ा बालक हुए द्रवित। शिष्य गोरखनाथ सुहृदयित ।।
हे गुरूवर करूँ निवेदन। लें संग हम यह बालक खिन्न ।। (५४७)
बोले मछिन्द्रनाथ हे शिष्य। हैं हम योगी नहीं गृहस्थ्य ।।
करेंगे कैसे इसका पालन। करते रहते हम सदा भ्रमन ।। (५४८)

भावार्थ: तब राजा अत्यंत क्रोधित हुए और इस बालक को कर पग विहीन कर दिया। यह कथा महात्मा मछिन्द्रनाथ ने गोरखनाथ को सुनाई। बालक की पीड़ा सुन दयालु शिष्य गोरखनाथ का हृदय द्रवित हो गया। वह गुरुदेव से निवेदन करने लगे, 'हम

इस दुःखी बालक को अपने साथ ले चलें।' तब मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे शिष्य, हम योगी हैं, गृहस्थ नहीं। इसका पालन कैसे करेंगे? हम सदैव भ्रमण करते रहते हैं।'

बोले गोरखनाथ हे गुरुवर । पा रहा यह बाल दुःख अतिकर ।।
फिर है यह संतान महेश्वर । है विलक्षण सम रुप ईश्वर ।। (५४९)
होगा कृतज्ञ हे गुरुवर । दें जीवन दान इस श्रेष्ठकर ।।
है यदि यह तुम्हारा मन्मन् । बोले तब मछिन्द्रनाथ महन ।। (५५०)
लें हम संग यह शंकर नंदन । लें अनुमति सशांगर राजन ।।
है उचित बोले गोरखनाथ । गए तब महल मछिन्द्रनाथ ।। (५५१)

भावार्थ: गोरखनाथ बोले, 'हे गुरुवर, यह बालक अत्यंत दुःख पा रहा है। फिर शंकर की संतान विलक्षण ईश्वर स्वरुप है। यह कृतज्ञ होगा यदि हे उत्कृष्ट, हम इसे जीवन दान दें। तब महात्मा मछिन्द्रनाथ बोले, 'यदि यह तुम्हारी इच्छा है तब इस शंकर पुत्र को हम अपने साथ लेंगे यदि सम्राट सशांगर अनुमति दे दें।' गोरखनाथ बोले, 'यह उचित है।' तब मछिन्द्रनाथ (सम्राट की अनुमति लेने हेतु) महल गए।

भेजे सन्देश तब वह भूनाथ । आए मिलने मछिन्द्रनाथ ।।
बुलाए तुरंत सभा सशांगर । हुआ धन्य आए आप आगर ।। (५५२)
कहो करूँ क्या मैं सेवा । बोले मछिन्द्रनाथ हे देवा ।।
जानूं दिए तुम दंड स्व-सुत । हेतु अवश्य कोई अघ महत ।। (५५३)
मम शिष्य योगी गोरखनाथ । चाहे अनुमति दें भूनाथ ।।
लें जाएं संग इस दुःखी जन । दे ज्ञान करें दूर पापक गुन ।। (५५४)
बोले तब सशांगर राजन । करें जैसा समझें श्रेष्ठ महन ।।
हुए धन्य हेतु अनुमति राजन । दिए कोटि कोटि स्वस्त्ययन ।। (५५५)

भावार्थ: तब वह सम्राट (सशांगर) को सन्देश भेजे कि मछिन्द्रनाथ मिलने आए हैं। (सम्राट) सशांगर ने तुरंत सभा में बुलाया और बोला, 'मैं धन्य हुआ जो आप मेरे आवास आए। मैं क्या सेवा करूँ?' तब मछिन्द्रनाथ बोले, 'सम्राट, तुमने अपने पुत्र को दंड दिया है, अवश्य ही उसने कोई घोर पाप किया होगा। मेरे शिष्य गोरखनाथ चाहते हैं कि आप अनुमति दें कि हम इस दुःखी प्राणी को अपने साथ ले जाएं। इसे ज्ञान देकर इसके पापमय गुणों को दूर करें।' तब सम्राट सशांगर बोले, 'हे महात्मा, जो

आपको उचित लगे, कीजिए।' सम्राट की अनुमति से कृतज्ञ उन्होंने उसे कोटि कोटि आशीर्वाद दिए।

आए तब वह चौरंगी चत्वर । लिए अंक उस बालक गुरुवर ।।
बोले तब शिष्य गोरखनाथ । मिला यह चौरंगी हमें नाथ ।। (५५६)
दें अनुमति आप हे गुरुवर । हो नाम चौरंगीनाथ कुंवर ।।
है उचित बोले मछिन्द्रनाथ । लो स्व-अंक अब गोरखनाथ ।। (५५७)
लिए अंक बालक तब शिष्यवर । हुआ उन्मूल कष्ट सद्य कुंवर ।।
किए गमन तब बद्रिकाश्रम । पाए दर्शन वहां सोमेश्वरम ।। (५५८)
धरे बालक तब चरण भगवन । लो इसे शरण हे त्रिलोचन ।।
बोले मृदु वचन गोरखनाथ । तथास्तु बोले तब भोलेनाथ ।। (५५९)

भावार्थ: तब वह चौरंगी चौराहे पर आए। गुरुदेव ने बालक को अपनी गोदी में लिया। तब शिष्य गोरखनाथ बोले, 'हे नाथ, यह हमें चौरंगी (चौराहे) पर मिला है। यदि गुरुदेव अनुमति दें तो इस राजकुमार का नाम चौरंगीनाथ रखा जाए।' मछिन्द्रनाथ बोले, 'उचित है। अब गोरखनाथ इसे अपनी गोदी में लो।' तब शिष्य (गोरखनाथ) ने बालक को अपनी गोदी में लिया। राजकुमार के कष्ट तुरंत दूर हो गए (पीड़ा समाप्त हो गई)। तब उन्होंने बद्रिकाश्रम को प्रस्थान किया। वहां शिव शंकर भगवान् के दर्शन हुए। गोरखनाथ ने बालक को प्रभु के चरणों में रख दिया और (प्रभु से) मधुर वचन बोले, 'हे भूतेश्वर, इसे अपनी शरण में लो।' तब शिव शंकर भगवान् ने 'तथास्तु' कहा।

तब पा आज्ञा मछिन्द्रनाथ । चले बालक संग गोरखनाथ ।।
अंदर पावन गुहा एक पर्वत । दिए ज्ञान बालक वह महत ।। (५६०)
हुआ समाप्त जब स्व-बोधन । कहे गोरखनाथ प्रमत वचन ।।
चौरंगीनाथ करो तुम मनन । कर केंद्रित शिलापट मन ।। (५६१)
है संभव यदि टूटा धरन । टूटे शिला हो हेतु मरन ।।
पर यदि निरंतर केंद्रित मन । न टूटे शिला यह मेरा वचन ।। (५६२)
जाना मुझे तीर्थ स्थापन । अतः वियोग है नित्य नंदन ।।
लौटूंगा मैं बिन यापना । करो तब तक यहां साधना ।। (५६३)

भावार्थ: तब मछिन्द्रनाथ की आज्ञा पाकर गोरखनाथ बालक के साथ एक पर्वत की पवित्र गुहा के अंदर गए। उन महात्मा ने वहां बालक को ज्ञान दिया। जब आत्म-ज्ञान समाप्त हुआ तब गोरखनाथ महत्वपूर्ण वचन बोले, 'चौरंगीनाथ, तुम यहां अपना मन शिलापट पर केंद्रित कर साधना करो। यदि तुम्हारा ध्यान टूटा तो संभव है कि शिलापट टूट जाए और तुम्हारे मरण का कारण बने। परन्तु यदि तुम निरंतर मन को केंद्रित करोगे तो मेरा यह वचन है कि यह शिलापट नहीं टूटेगा। मुझे तीर्थ स्थान पर जाना है (तीर्थ यात्रा के लिए प्रस्थान करना है), अतः हे पुत्र, यह वियोग आवश्यक है। मैं शीघ्र ही लौटूंगा तब तक तुम यहाँ साधना करो।'

तब किए गोरखनाथ साधना । किए माँ चामुंडा वन्दना ।।
हुईं प्रकट माँ समक्ष महत । पकड़ चरण माँ करें विनिति ।। (५६४)
कर रहा बाल यहां साधना । करो रक्षा माँ महामना ।।
न कर सके हानि कोई पशु वन । मिले प्रतिदिन फल एक भोजन ।। (५६५)
हुईं तब प्रसन्न शिव स्नेहन । हो इच्छा पूर्ण भक्त पावन ।।
हो गईं तब वह अंतर्ध्यान । गए गोरखनाथ तीर्थ स्थान ।। (५६६)

भावार्थ: तब गोरखनाथ ने माँ चामुंडा की वंदना और साधना की। महात्मा के समक्ष माँ प्रकट हुईं। माँ के चरण पकड़ कर तब उन्होंने (गोरखनाथ ने) विनती की, 'हे महान माँ, यहां बालक साधना कर रहा है। उसकी रक्षा करो। कोई वन पशु उसको हानि न पहुंचा सके और उसे प्रतिदिन भोजन हेतु एक फल मिले।' तब माँ भवानी प्रसन्न हो कर बोलीं, 'हे पवित्र भक्त, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो।' तब वह अंतर्ध्यान हो गईं और गोरखनाथ तीर्थ यात्रा को चले गए।

इधर करें तप चौरंगीनाथ । अनुसार गुरु गोरखनाथ ।।
दिया जैसा चामुंडा वचन । करें रक्षा बाल प्रतिदिन ।। (५६७)
दें एक फल नित्य हेतु भोजन । पर नहीं करें भोज योगिन् ।।
किए द्वादस वर्ष साधना । लौटे गोरखनाथ महामना ।। (५६८)
हुआ मिलन माँ गुहा द्वार । बोले योगी हे माँ आधार ।।
करो स्वीकार कोटि नमन । करूँ वंदन कमल सम चरन ।। (५६९)

भावार्थ: इधर चौरंगीनाथ गुरु गोरखनाथ के (आदेश) अनुसार तप करने लगे। जैसा चामुंडा माँ ने वचन दिया था वह बालक की प्रतिदिन रक्षा करतीं और एक फल भोजन हेतु प्रतिदिन देतीं। परन्तु योगी (चौरंगीनाथ) भोजन नहीं करते। बारह वर्ष तक (चौरंगीनाथ ने) तपस्या की, तब महात्मा गोरखनाथ लौटे। कंदरा के द्वार पर माँ से भेंट हुई। योगी (गोरखनाथ) बोले, 'हे आधार माँ, मेरा कोटि नमन स्वीकार करो। आपके कमल समान चरणों की वन्दना करता हूँ।

देखा पर्वत फल गुहा अंदर । बोलीं माँ उमा मुसकुराकर ।।
नहीं किया साधक भोजन । इन द्वादस वर्ष मध्य मनन ।। (५७०)
यद्यपि दी मैं फल प्रतिदिन । बना फल पर्वत इस कारन ।।
बोले तब योगी गोरखनाथ । हैं माँ कृपा से हम सनाथ ।। (५७१)
नहीं नितांत होता भोजन । ऊर्जा माँ जब पालक जीवन ।।
हो प्रसन्न दे आशीर्वचन । हुई अंतर्ध्यान शिव स्नेहन ।। (५७२)

भावार्थ: कंदरा के अंदर (गोरखनाथ ने) फल का पर्वत देख। (तब) उमा माँ मुसकुराकर बोलीं, 'साधक ने इन बारह वर्षों में साधना के मध्य भोजन नहीं किया, यद्यपि मैंने प्रतिदिन एक फल दिया। इस कारण यह फलों का पर्वत बन गया।' तब योगी गोरखनाथ बोले, 'हे माँ, आपकी कृपा से हम सनाथ हैं। जब माँ की ऊर्जा जीवन की पालक हो, तब भोजन आवश्यक नहीं है।' प्रसन्न हो माँ ने आशीर्वाद दिए और वह शिव प्रिय (माँ चामुंडा) अंतर्ध्यान हुईं।

दी गोरखनाथ तब हुंकार । आए मिलन गुरु अनुयातृ ।।
जागो हुई पूर्ण साधना । खोलो नेत्र उठो संराधना ।। (५७३)
जागे साधक चौरंगीनाथ । देखा समक्ष गुरु गोरखनाथ ।।
किए तब वह साष्टांग प्रणाम । लगाए कंठ गुरु अनुगाम ।। (५७४)

भावार्थ: तब गोरखनाथ उच्च स्वर में पुकारे, 'हे शिष्य, गुरु मिलने आए हैं। साधना पूर्ण हुई, (अब) जागो। तप से उठकर नेत्र खोले।' साधक चौरंगीनाथ (तब) जागे और समक्ष गुरु गोरखनाथ को देखा। उन्होंने साष्टांग प्रणाम किया। तब गुरु ने शिष्य को कंठ से लगा लिया।

हुआ तभी एक मह चमत्कार।हुए सुभंग अंगविहीन कुमार।।
हेतु तप जो हुआ असार तन।हुए तेजस्वी बलशाली सज्जन।।(५७५)
बोले तब गुरु गोरखनाथ।करें अब मनन हम आदिनाथ।।
पहुंचे शिव मंदिर तब योगी।किए छै माह तप आदियोगी।।(५७६)
हो प्रसन्न दिए हरि दर्शन।पाया मनवांछित स्वस्त्ययन।।
किए तब कौडिल्यापुर गमन।राजधानी सशांगर राजन।।(५७७)
था लक्ष्य दिखा सकें राजन।दिए अनुचित दंड वह अनाघन।।
नहीं किए प्रवेश अन्तः पट्टन।किए विश्राम एक स्थल विजन।।(५७८)

भावार्थ: तभी एक महान चमत्कार हुआ। अंगविहीन कुमार सुभंग (सुन्दर अंगों वाले) हो गए। तप के कारण (और भोजन न करने के कारण) जो शरीर दुर्बल हो गया था, अब वह तेजस्वी बलशाली हो गया। तब गोरखनाथ बोले, 'अब हमको शिव शंकर की साधना करनी चाहिए।' तब वह (दोनों) योगी एक शिव मंदिर पहुंचे। छै मास तक उन्होंने शिव शंकर की साधना की। शिव जी ने प्रसन्न होकर दर्शन दिए और उनको मनवांछित आशीर्वाद दिए। तब उन्होंने सम्राट सशांगर की राजधानी कौडिल्यापुर को प्रस्थान किया। उनका लक्ष्य था कि वह राजा को यह दिखा सकें कि उन्होंने एक निरपराध को दण्डित किया था। वह नगर के अंदर प्रवेश नहीं किए। एक सुनसान स्थान पर विश्राम किए।

चौरंगीनाथ का चमत्कार

दिए गोरखनाथ प्रचोदन। करो शिष्य स्व-बल प्रदर्शन।।
पा आज्ञा गुरुदेव महन। किए चौरंगीनाथ विस्मापन।।(५७९)
हेतु योग विद्या अति परिणत। हुआ प्रकोप प्रकृति महत।।
हुआ आघात व्यवस्था शासन। घबराए तब सशांगर राजन।।(५८०)
भेजे दूत हेतु परिबोधन। पर न पाएं थाह तथ्य इस गहन।।
बोला एक गुप्तचर हे राजन। करें सिद्ध वास बाह्य पट्टन।।(५८१)
है एक प्रौढ़ दूजा युवक। संभव घटित हेतु उन साधक।।
हो क्रुद्ध नृप दिए नियोजन। बनाओ बंदी तुरंत योगिन।।(५८२)
गए सैनिक पा नृप आज्ञा। पर असमर्थ प्रति उन प्राज्ञा।।
तब किए प्रस्थान स्वयं राजन। संग लिए बृहत सैन्य संगठन।।(५८३)

भावार्थ: तब गोरखनाथ ने आज्ञा दी, 'हे शिष्य, अपनी शक्ति का प्रदर्शन करो।' महात्मा गुरुदेव की आज्ञा पाकर तब चौरंगीनाथ ने चमत्कार किया। अत्यंत परिपक्व (सिद्ध) विद्या के कारण प्रकृति का महाप्रकोप हुआ। शासन की व्यवस्था पर आघात होने के कारण सम्राट सशांगर व्यथित हो गए। इस का कारण जानने के लिए उन्होंने दूत भेजे। पर इस गहन तथ्य का कारण न जान सके। तब एक गुप्तचर बोला 'हे सम्राट, नगर के बाहर योगी वास कर रहे हैं। एक प्रौढ़ (आयु) है, दूसरा युवक। संभव है कि यह घटना इन साधक के कारण हो रही हैं।' तब क्रोधित हो सम्राट ने उन योगियों को बंदी बनाने का आदेश दिया। सम्राट की आज्ञा पाकर सैनिक (उन्हें बंदी बनाने) गए, परन्तु उन बुद्धिमानों के समक्ष असमर्थ थे (उन्हें बंदी न बना सके)। तब स्वयं सम्राट एक विशाल सेना के साथ प्रस्थान किए।

हेतु दिव्य दृष्टि गोरखनाथ। देखा आते संग सैन्य भूनाथ।।
दिए आदेश शिष्य हो तत्पर। हेतु रण नृप हठी नरेश्वर।।(५८४)
पढ़ाएं पाठ हेतु दुष्कर्म। किया जो यह सम्राट अधर्म।।
किए प्रकट शिष्य बहु सैनिक। की निर्मूल सैन्य अधर्मक।।(५८५)
पड़ा पग नृप हेतु स्व-जीवन। बचाओ मेरे प्राण तुम महन।।
दो क्षमा हेतु अघ योगेश्वर। करूँ क्या सेवा हे महाकर।।(५८६)

भावार्थ: गोरखनाथ ने दिव्य दृष्टि से देखा कि सम्राट सेना सहित आ रहा है। तब शिष्य (चौरंगीनाथ) को आदेश दिए कि हठी सम्राट के विरुद्ध युद्ध को तत्पर हो जाओ। जो दुष्ट सम्राट ने दुष्कर्म किया है, उसका पाठ पढ़ाएं। तब उन्होंने (चौरंगीनाथ ने) असंख्य सैनिक प्रकट किए जिन्होंने अधर्मी की सेना को निर्मूल कर दिया (नष्ट कर दिया)। अपने जीवन के लिए (जीवन रक्षा हेतु) सम्राट चरण पड़ विनती करने लगा, 'हे महात्मा, तुम मेरे प्राण बचाओ। हे योगेश्वर, मेरे पापों को क्षमा करो। हे महान आत्मा, मैं क्या सेवा करूँ?'

हुए तब प्रकट गोरखनाथ। हुए नत मस्तक वह भूनाथ।।
दिए तब अनेक आशीर्वचन। बोले विनम्र योगी हे राजन।।(५८७)
क्या पहचाने तुम यह शक्त। किया जिसने सैन्य बल ध्वस्त।।
करबद्ध बोले तब राजन। नहीं प्रभु करो आप प्रसन्नन।।(५८८)

भावार्थ: तब गोरखनाथ प्रकट हुए। वह सम्राट नत मस्तक हुए। तब अनेक आशीर्वाद देते हुए योगी (गोरखनाथ) बोले, 'क्या इस बलशाली को पहचाना जिसने सेना को ध्वस्त कर दिया?' तब करबद्ध सम्राट बोले, 'नहीं, हे प्रभु, आप परिचय दें।'

बोले तब गोरखनाथ महन। करो स्मरण घटना पूर्वतन।।
द्वादस वर्ष पूर्व संपीडन। काटे तुम कर और पग नंदन।।(५८९)
किया त्याग चौरंगी चतुष्पथ। है यही वह योगी समर्थ।।
बोले तब नृप मृदुल वचन। है स्मरण महात्मा वह घटन।।(५९०)
किया वह अक्षम्य पापकृत। माँ प्रति थी दृष्टि कामवत।।
बोले गोरखनाथ महन। नहीं सत्य तथ्य यह हे राजन।।(५९१)
था निर्दोष अबोध नंदन। कीं रानी असत दोष आरोपन।।
दिए दंड तुम बिन अन्वेषन। क्या नहीं यह महा अघ राजन।।(५९२)

भावार्थ: तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'एक बारह वर्ष पूर्व की घटना का स्मरण करो, जब तुमने दंड में अपने पुत्र के हाथ पैर काट दिए थे और उसे चौरंगी चौराहे पर त्याग दिया था। यह समर्थ योगी वही है।' तब सम्राट मधुर वचन बोले, 'हे महात्मा, वह घटना मुझे स्मरण है। उसने अक्षम्य अपराध किया था। उसकी अपनी (सौतेली) माँ के प्रति काम दृष्टि थी।' तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'हे राजन, यह सत्य तथ्य नहीं है। तुम्हारा

अबोध पुत्र निर्दोष था। रानी ने असत्य दोषारोपण किया था। तुमने बिना खोज के दंड दिया, क्या यह हे राजन, (तुम्हारा) घोर अपराध नहीं है?'

झुक गया सर सशांगर राजन। बोले करो क्षमा मम दल्भन।।
लगा लिए कंठ तब स्व-नंदन। धन्य धन्य महात्मा योगिन।।(५९३)
जाना प्रताप मैं योग साधक। दिए कर पग अपाहिज पुत्रक।।
है अवश्य पुत्र चमत्कारी। निपुण युद्ध व् आयुध धारी।।(५९४)
करो स्वीकार मेरा निवेदन। आओ संग मम द्वि आप भवन।।
बोले तब योगी गोरखनाथ। यद्यपि हैं हम तापस भूनाथ।। (५९५)
पर चौरंगीनाथ आपके सुत। है अधिकार सम्बन्ध जनित।।
करेंगे त्रि दिवस वास भवन। फिर जाएं हेतु साधना वन।।(५९६)
गए द्वि योगी तब राजभवन। थीं रानी रुद क्षमायाचन।।
किए क्षमा उन्हें चौरंगीनाथ। न करो सम अघ प्रदिश् भूनाथ।।(५९७)

भावार्थ: सम्राट सशांगर का मस्तक झुक गया और बोले, ‘ मेरे पापों को क्षमा करो। हे योगी महात्मा आप धन्य हैं।' उन्होंने अपने पुत्र को गले से लगा लिया। (आगे बोले) ‘मैं योग के साधक का प्रताप जान गया। मेरे अपाहिज पुत्र को कर और पग दिए। मेरा पुत्र अवश्य ही चमत्कारी, युद्ध में निपुण और अस्त्र धारी है। मेरा निवेदन स्वीकार करो। मेरे साथ आप दोनों महल चलो।' तब गोरखनाथ बोले, 'हे सम्राट, यद्यपि हम तपस्वी हैं, पर चौरंगीनाथ आपके पुत्र हैं। इस पिता के सम्बन्ध से आपका (उन पर) अधिकार है। हम तीन दिन महल में वास करेंगे फिर साधना हेतु वन चले जाएंगे।' तब दोनों योगी राजभवन गए। रानी ने रोते हुए क्षमा माँगी। चैरंगीनाथ ने उन्हें क्षमा कर दिया। सम्राट ने (भविष्य में) ऐसा पाप न करने की चेतावनी दी।

अड़भंगनाथ

पश्चात दिवस त्रि किए गमन । पथ आरुण्य भामा पट्टन ।।
थी घाम गहन अति गर्म पवन । न मिल सका कई दिन भोजन ।। (५९८)
बैठ गए तल तरु द्वि महन । थे भूखे प्यासे वह योगिन ।।
देखा तब एक कृषक कर्षन् । लाया सेवक उस समय भोजन ।। (५९९)
रोका हल्य तब उस कृषक । कहे अलख अलख तब द्वि साधक ।।
पूछा कृषक कौन हो योगिन । किस हेतु कर रहे वन विचरन ।। (६००)

भावार्थः तीन दिन के पश्चात आरुण्य मार्ग से (योगियों ने) भामा नगर की ओर प्रस्थान किया। तेज धूप और गर्म वायु थी। कई दिनों से (योगियों को) भोजन नहीं मिला था। दोनों भूखे प्यासे महात्मा योगी एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। एक कृषक को हल चलाते देखा। उसका सेवक भोजन ले कर उसी समय आया। तब उस कृषक ने हल चलाना रोक दिया। दोनों साधकों ने तब 'अलख अलख' कहा। तब कृषक ने पूछा, 'हे योगी, आप कौन हैं और किस कारण से वन में विचरण कर रहे हैं?'

बोले गोरखनाथ हे कृषक । चाहें भोजन हैं हम साधक ।।
था नाम माणिक उस कृषक । बड़ा हठी और सदा संदेहक ।। (६०१)
बोला युक्त अहंकार वह जन । आए उचित समय हे द्वि महन ।।
आया अभी गृह से भोजन । करो ग्रहण पूर्ण परितोषन ।। (६०२)
कहे गोरखनाथ है उचित । बैठे आसन तल एक क्षितिज ।।
दिया भोजन वह रख छादन । मिटी क्षुधा हुए तुष्ट महन ।। (६०३)

भावार्थः तब गोरखनाथ बोले, 'हे कृषक, हम साधक हैं और भोजन चाहते हैं।' उस कृषक का नाम माणिक था। वह बड़ा हठी और सदैव संदेह करने वाला था। अहंकार से युक्त वह प्राणी बोला, 'हे द्वि महात्मा, आप उचित समय पर आए हैं। अभी गृह से भोजन आया है। पूर्ण संतोष के साथ ग्रहण करें।' तब गोरखनाथ बोले, 'उचित है।' एक वृक्ष के नीचे आसन पर बैठ गए। उस (कृषक) ने पत्ते पर रखकर भोजन दिया। उन महात्माओं की भूख मिटी और वह संतुष्ट हुए।

पिए दोनों जल शीतल कूपन।हो संतुष्ट पूछे तब योगिन।।
है क्या नाम आपका स्नेहन।बोला वह क्या हेतु परिगमन।। (६०४)
पाया भोजन करो अब गमन।था स्वर अति कटु युक्त रोषन।।
बोले गोरखनाथ मृदु वचन।होते क्यों क्रोधित हे सज्जन।।(६०५)
नहीं है कोई विशेष लक्ष्य।हैं उत्सुक किए तुम सुजनत्व।।
यदि नहीं चाहते बतलाना।है इच्छा तुम्हारी महामना।।(६०६)
बोला कृषक सुनो साधुजन।नहीं नियम दूँ मैं प्रसञ्ज्ञन।।
जानो यदि मेरा प्रसञ्ज्ञन।आओ पुनः हेतु उपयाचन।।(६०७)

भावार्थ: दोनों ने कुंए से शीतल जल पीया। संतुष्ट हो तब योगी (गोरखनाथ) ने पूछा। (गोरखनाथ ने पूछा) 'हे मित्र, आपका नाम क्या है?' वह (कृषक) बोला, 'आपका (नाम) जानने का कारण क्या है? भोजन पा लिया अब प्रस्थान कीजिए।' उसका स्वर कटु और क्रोध से भरा था। गोरखनाथ मृदु वचन बोले, 'हे सज्जन, क्रोधित क्यों होते हो? कोई विशेष लक्ष्य नहीं है। तुमने एक शुभ कर्म किया है, इसलिए उत्सुकता है। हे महात्मा, यदि (नाम) नहीं बतलाना चाहते हो तो तुम्हारी इच्छा है।' तब कृषक बोला, 'हे साधुजन सुनो, परिचय देना मेरा नियम नहीं है। यदि मेरा परिचय जान जाओगे तब पुनः भिक्षा के लिया आओगे।'

क्यों लूँ मैं यह आर्त महन।अतः भोजन पश्चात करो गमन।।
बोले तब गोरखनाथ साधक।उचित नहीं दो परिचय कृषक।।(६०८)
पर करो स्वीकार स्वस्त्ययन।मांगो जो तुम्हारा मन्मन्।।
बुझाई तुमने क्षुधा तर्षन।चाहें दें कुछ हेतु परितोषन।।(६०९)
बोला तब कृषक दुरुक्त।लगा रहे मोल अन्न हे भक्त।।
नहीं चाहता कुछ प्रतिदान।क्यों पीछे हेतु उपप्रदान।।(६१०)
समझे गोरखनाथ हठ उस जन।बोले पुनः करो हमें अर्हन।।
बोला कृषक है क्या मन्मन्।करूँ पूर्ण यदि मैं भाविन्।।(६११)

भावार्थ: मैं यह कष्ट क्यों लूँ? अतः भोजन के पश्चात प्रस्थान करो।' तब साधक गोरखनाथ बोले, 'हे कृषक, उचित है कि तुम परिचय न दो, पर हमारा आशीर्वचन स्वीकार करो। जो तुम्हारी इच्छा हो, मांगो। तुमने हमारी भूख और प्यास बुझाई है, इस संतुष्टि के लिए हम कुछ देना चाहते हैं।' तब कृषक कटु स्वर में बोला, 'हे भक्त,

क्या आप अन्न का मोल लगा रहे हैं? मैं कोई प्रतिदान नहीं चाहता। आप कुछ देने के पीछे क्यों पड़े हैं?' तब गोरखनाथ समझ गए कि यह हठी पुरुष है। वह पुनः बोले, 'हमें कृतज्ञ करो।' (अर्थात तुम ही हमको कुछ दो। कृषक के रूखे पन के प्रति पाठ पढ़ाने के लिए यहां योगी गोरखनाथ विपरीत मनोविज्ञान का प्रयोग कर रहे हैं)। तब कृषक बोला, 'आपकी इच्छा क्या है? यदि मैं समर्थ हूँ, तो पूर्ण करूंगा।'

बोले गोरखनाथ हे सज्जन । दो वचन न करो तुम उत्क्रमन ।।
झुंझलाकर बोला कृषक । क्यों करते विक्षिप्त साधक ।।(६१२)
नहीं पलटूँगा मैं स्व-वचन । करो विश्वास मेरा हे महन ।।
बोले गोरखनाथ हे सज्जन । करो उलट जो भी हो मन्मन् ।। (६१३)
क्या कर पाओगे यह कर्म । दो वचन मुझे तुम सुधर्म ।।
वह बोला है विचित्र मन्मन् । पर करूँ यदि चाहो यह महन ।। (६१४)
है क्या यह कोई प्रहसन । नहीं समझा क्या आपके मन ।।
हो क्या ठग चोर स्वार्थपर । क्या चाहो लूटना मेरा घर ।।(६१५)
बोले तब गोरखनाथ महन । हैं हम योगी नहीं दुष्ट जन ।।
है उचित अब हम करें गमन । न भूलो करना पालन वचन ।।(६१६)

भावार्थः तब गोरखनाथ बोले, 'हे सज्जन, वचन दो कि तुम पलट नहीं जाओगे।' तब कृषक झुंझलाकर बोला, 'मुझे कष्ट क्यों देते हो? मैं अपने वचनों से नहीं पलटूँगा। हे महात्मा, मेरा विश्वास करो।' तब गोरखनाथ बोले, 'हे सजन, जो तुम्हारी इच्छा हो, उसके उलट करो। क्या यह कृत्य कर पाओगे? हे सज्जन, मुझे तुम वचन दो। तब वह (कृषक) बोला, 'विचित्र इच्छा है, पर महात्मा, मैं वहीं करूँगा जो तुमने चाहा। क्या यह कोई प्रहसन है? तुम्हारे मन में क्या है, मैं नहीं समझा। क्या तुम कोई ठग, चोर या स्वार्थी प्राणी हो? क्या मेरा घर लूटना चाहते हो?' तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'हम योगी हैं, कोई दुष्ट प्राणी नहीं। उचित है, अब हम प्रस्थान करते हैं। अपने वचन को पालन करना न भूलो।'

यद्यपि था माणिक अप्रसन्न । पर किया पालन उसने वचन ।।
आए जब भी कोई विचार मन । करे सदा उलट वह उस मन्मन् ।। (६१७)
जब लगे अति भूख उसके तन । केवल पिए जल न करे भोजन ।।
लगे प्यास तब खाए भोजन । न करे कभी उदबिन्दु ग्रहण ।।(६१८)

लगे नींद तो रहता जागता। न हो मन शयन यत्न कर सोता।।
जब चाहे करना जल्प मन। रहता मूक माणिक सज्जन।।(६१९)
करे अतः उलट कर्म जो मन्मन्। हुआ प्रभाव गहन उसके तन।।
हुआ स्वास्थ्य अति अपचयन। क्षीण संकुचित हुआ उसका तन।।(६२०)

भावार्थ: यद्यपि माणिक अप्रसन्न था परन्तु उसने वचन का पालन किया। जब भी कोई विचार उसके मन में आता, वह सदैव अपनी इच्छा के उलट ही करता। शरीर में भूख लगती तो भोजन न कर, जल पी लेता। यदि प्यास लगती तो जल की एक बूँद भी ग्रहण न कर भोजन कर लेता। नींद आती तो जागता रहता। जब सोने का मन नहीं होता तो सोने का प्रयास कर सोता। बातें करने का मन करता तो सज्जन माणिक मूक रहता। अतः वह इच्छा से विपरीत कर्म करता। इसका उसके शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। उसका शरीर दुबला होकर सिकुड़ गया।

बीते बारह वर्ष इस प्रकार। आए त्रियोगी उसके द्वार।।
साथ गुरुदेव मछिन्द्रनाथ। और संग शिष्य चौरंगीनाथ।।(६२१)
पहुंचे घर गोरखनाथ साधक। देखा अस्वस्थ दुर्बल कृषक।।
पूछे तब गोरखनाथ महन। हुई कैसे यह दशा सज्जन।।(६२२)
बोला कृषक क्या भूले वचन। है फल साधु हेतु अनुसरन।।
हुए गोरखनाथ अति प्रसन्न। किया पालन वचन यह भूजन।।(६२३)

भावार्थ: इस प्रकार बारह वर्ष बीत गए। तीन योगी तब उसके द्वार आए। गुरुदेव मछिन्द्रनाथ और शिष्य चौरंगीनाथ के साथ साधक गोरखनाथ (उसके) गृह पहुंचे। उन्होंने देखा कि कृषक अस्वस्थ और दुर्बल है। तब महात्मा गोरखनाथ ने पूछा, 'हे सज्जन, यह (तुम्हारी) दशा कैसे हुई?' तब कृषक बोला, 'क्या आप अपने शब्द भूल गए? हे साधु, यह उन्हीं के अनुसरण करने का फल है।' इस प्राणी ने वचन का पालन किया, (यह जानकर) गोरखनाथ अत्यंत प्रसन्न हुए।

देना चाहा आशीर्वचन। हो दूर तुरंत उसका खेदन।।
पर यदि कहें यह गोरखनाथ। मांगो वरद तुम हे सनाथ।।(६२४)
होगा उलटा उसके मन्मन्। अतः करूँ यत्न प्रतिकूलन।।
बोले तब योगी हे कृषक। बनाओ मुझे तुम स्व-शिष्यक।।(६२५)

दो गुरु मन्त्र हेतु बोधन। बोला कृषक करो प्रहसन।।
हो तुम महात्मा गुरुवर। लगते संत महान बुद्धिवर।।(६२६)
लो वापस तुम अपना वचन। मिलेगी शान्ति तब मेरे मन।।
सोच सकूं मैं तब हितकर। हूँ असमर्थ अभी मैं संतवर।।(६२७)
है उचित कहे तब योगी महन। लिया वापस तुरंत स्व-वचन।।
पड़ा वह गोरखनाथ चरण। बोला लो संत अपनी शरण।।(६२८)

भावार्थ: (गोरखनाथ ने) उसे आशीर्वाद देना चाहा जिससे उसका कष्ट दूर हो। परन्तु यदि गोरखनाथ कहें कि हे भद्र, वरदान मांगो, तो उसकी इच्छा के विपरीत होगा। अतः कोई विपरीत प्रयत्न करना होगा। तब योगी (गोरखनाथ) बोले, 'हे कृषक, मुझे तुम अपना शिष्य बनाओ और ज्ञान हेतु गुरु मन्त्र दो।' कृषक बोला, 'क्यों परिहास करते हो, तुम गुरुदेव महात्मा हो। तुम बुद्धिमान महान संत लगते हो। तुम अपना वचन वापस लो जिससे मेरे मन को शान्ति मिले। तभी में अपना हित सोच सकूंगा। हे संत, अभी मैं (कुछ सोचने में) असमर्थ हूँ।' तब महात्मा योगी बोले, 'उचित है।' उन्होंने तुरंत अपना वचन वापस ले लिया। तब वह (माणिक) गोरखनाथ के चरण पड़ा और बोला, 'हे संत, मुझे अपनी शरण में लो।'

है यदि तुम्हारी यह इच्छा। बोले गोरखनाथ दूँ शिक्षा।।
लाओ मेरे समीप स्व-आनन। दूँ गुरु मन्त्र अन्तः श्रवन।।(६२९)
आए माणिक तब समीप महन। पा गुरु मन्त्र बने विनेयन।।
फेरे गुरु कर तब माणिक तन। हुए स्वस्थ शक्त और महस्विन्।।(६३०)
किए इंगित ओर मछिन्द्रनाथ। हैं यह गुरु कहे गोरखनाथ।।
किए माणिक उनके स्पर्श चरन। पाए अनेक तब आशीर्वचन।।(६३१)
हैं माणिक हठी पर अनुव्रत। हो नाम अड़बंगनाथ महत।।
बोले महात्मा गोरखनाथ। अब वैरागी तुम अड़बंगनाथ।।(६३२)
लो अनुमति अब स्व-परिवार। चलो संग हमारे छोड़ घरवार।।
किए शिष्य कहे जैसे गुरुवर। दी विदा परिवार तब संतवर।।(६३३)

भावार्थ: गोरखनाथ बोले, 'यदि यह तुम्हारी इच्छा है तो मैं तुम्हें शिक्षा दूंगा। अपने मुख को मेरे समीप लाओ। मैं कर्ण में गुरु मन्त्र दूँ।' तब माणिक महात्मा के समीप आए। गुरु मन्त्र पाकर शिष्य बने। तब गुरुदेव (गोरखनाथ) ने उनके शरीर पर हाथ फेरा

जिससे वह स्वस्थ, बलशाली और ओजस्वी हो गए। तब गोरखनाथ ने मछिन्द्रनाथ की ओर संकेत कर कहा कि यह हमारे गुरु हैं। माणिक ने तब उनके चरण स्पर्श किए और अनेक आशीर्वाद पाए। महात्मा गोरखनाथ बोले, 'माणिक हठी, पर आज्ञाकारी हैं, अतः इनका नाम संत अड़बंगनाथ होगा। हे अड़बंगनाथ, अब तुम वैरागी हो। अपने परिवार से अनुमति लो कि गृहस्थ छोड़ हमारे साथ चलोगे। तब शिष्य ने वही किया जैसा गुरुदेव ने कहा। तब संत (अड़बंगनाथ) को परिवार ने विदा किया।

अड़बंगनाथ थे अति प्रसन्न। मिला मुझे अब हेतु जीवन।।
कर सेवा इन तपस्विन महन। पाऊँ मैं स्वयं निर्मोचन।।(६३४)
दिए तब मछिन्द्रनाथ शासन। चलो बद्रिकाश्रम स्थापन।।
तब साथ योगी गोरखनाथ। चौरंगीनाथ अड़बंगनाथ।।(६३५)
चले बद्रिकाश्रम सब महान। पहुंचे शीघ्र वह अग्रस्थान।।
दिए आदेश तब गोरखनाथ। करो मनन शिव अड़बंगनाथ।।(६३६)
जाना हमें अब तीर्थ प्रवस। लौटेंगे पश्चात वर्ष द्वादस।।
होंगे प्रसन्न कैलाशनाथ। आएँगे वह संग स्वर्गनाथ।।(६३७)
ले उनसे तुम आशीर्वचन। जाओ रहो कुछ काल व्योमन।।
जब लौटो तुम बद्रिकाश्रम। होगा मिलन पुनः हे प्रीतम।।(६३८)
दे आज्ञा संत अड़बंगनाथ। गए तब तीर्थ अन्य सब नाथ।।
किए गहन मनन शिव तब शिष्य। हो प्रसन्न हुए प्रकट दिव्य।।(६३९)
थे संग इंद्र भी शिव शंकर। दिए आशीर्वचन वह प्रभुवर।।
गए स्वर्ग संग इंद्र साधक। रहे कुछ काल वहां भद्रक।।(६४०)
लौटे बद्रिकाश्रम वह महन। करें प्रतीक्ष गुरु आगमन।।
करते सेवा प्रतिदिन शंकर। बीत रहा काल अतः सुखवर।।(६४१)

भावार्थः अड़बंगनाथ अति प्रसन्न थे। मुझे जीवन का लक्ष्य मिल गया। इन महान तपस्वियों की सेवा कर मैं स्वयं मोक्ष प्राप्त करूँ। तब मछिन्द्रनाथ ने आज्ञा दी कि बद्रिकाश्रम को प्रस्थान किया जाए। तब योगी गोरखनाथ, चौरंगीनाथ और अड़बंगनाथ, सभी महात्मा बद्रिकाश्रम को चले। वह शीघ्र ही गंतव्य स्थान पर पहुँच गए। तब गोरखनाथ ने अड़बंगनाथ को शिव शंकर की साधना करने की आज्ञा दी और कहा, 'हमें तीर्थ यात्रा को जाना है। हम बारह वर्ष बाद लौटेंगे। (तुम्हारी साधना से) भोलेनाथ प्रसन्न होंगे और वह इंद्रदेव के साथ प्रकट होंगे। उनसे आशीर्वाद लेकर

कुछ समय स्वर्ग में रहना। हे प्रीतम, जब तुम (स्वर्ग से) लौटोगे तब हमारा पुनर्मिलन होगा। संत अड़बंगनाथ को आज्ञा देकर सभी नाथ (मछिन्द्रनाथ, गोरखनाथ और चौरंगीनाथ) तीर्थ यात्रा हेतु चले गए। तब शिष्य (अड़बंगनाथ) ने शिव की गहन तपस्या की। दिव्य (भगवान् शिव शंकर) इंद्रदेव के साथ प्रकट हुए। प्रभु ने उन्हें अनेक आशीर्वाद दिए। तब वह साधक इंद्रदेव के साथ स्वर्ग चले गए। वह महात्मा वहां कुछ समय तक रहे फिर बद्रिकाश्रम लौट कर गुरु के आने की प्रतीक्षा करने लगे। प्रतिदिन वह शिव शंकर भगवान की सेवा करते। इस प्रकार समय प्रसन्नता पूर्वक बीत रहा था।

सम्राट धर्मनाथ

कथित उपरि इस महाकथन । देकर अड़भंगनाथ प्रचोदन ।।
करें वह साधना शिव शंकर । त्रिनाथ हुए तीर्थ इत्वर ।। (६४२)
पहुंचे वह तब प्रयागराज । त्रिविक्रम थे वहां महाराज ।।
हुआ मरण नृप बिन संतान । तत्पर राजन्य जाएं श्मशान ।। (६४३)
करें शव को अग्नि समर्पण । कर वैदिक विधि अनुसरण ।।
थीं महिषी अत्यंत शोकवश । थीं तत्पर हेतु सती प्रेमवश ।। (६४४)
था वातावरण अति दुःखमय । चंहु ओर रुदन क्रन्दमय ।।
हुए व्यथित संत गोरखनाथ । बोले सुनो गुरु मछिन्द्रनाथ ।। (६४५)

भावार्थ: इस महाकथा में उपरोक्त वर्णित है कि अड़भंगनाथ को शिव शंकर की साधना करने का आदेश देकर त्रिनाथ (मछिन्द्रनाथ, गोरखनाथ और चौरंगीनाथ) तीर्थ यात्री हुए। वह तब प्रयागराज पहुंचे। वहां के सम्राट त्रिविक्रम थे। सम्राट का मरण संतानहीन हो गया था। राजपरिवार वैदिक विधि के अनुसार शव को अग्नि समर्पित करने हेतु श्मशान जाने को तत्पर था। महारानी अत्यंत दुःखी थीं और (पति से) प्रेमवश सती होने के लिए तत्पर थीं। वातावरण अत्यंत दुःखद था। चारों ओर रोने और पुकारने के स्वर थे। गोरखनाथ अत्यंत दुःखी हुए और गुरु मछिन्द्रनाथ से बोले।

नहीं देख सकूं मैं यह दृश्य । हैं तत्पर महारानी नैपथ्य ।।
हों सती वह साथ शव राजन । बिन संतान हुआ नृप मरन ।। (६४६)
होगा कलह हेतु सिंहासन । मध्य परिवार सैन्य संसाधन ।।
उठाएंगे लाभ रिपु राज्य । संभव हो विनष्ट लोकराज्य ।। (६४७)
थे नृप धार्मिक न्याय्य महत । है संशय बने नृप आपातत ।।
है इसका केवल परिशोधन । दें हम सम्राट दान जीवन ।। (६४८)

भावार्थ: (गोरखनाथ बोले) मैं यह दृश्य नहीं देख सकता। नैपथ्य में महारानी सम्राट के शव के साथ सती होने को तत्पर हैं। सम्राट का मरण संतानहीन हुआ है। सिंहासन के लिए परिवार एवं सैन्य अधिकारियों में कलह होगा। राष्ट्र के शत्रु इसका लाभ उठाएंगे। संभव है कि लोकतंत्र का विनाश हो। सम्राट अत्यंत धार्मिक और न्याय प्रिय

थे। संभव है कि कोई एकाधिकारी सम्राट बने। इसका केवल एक उपाय है कि हम सम्राट को जीवन दान दें (उन्हें जीवित कर दें)।

बोले मछिन्द्रनाथ हे शिष्य । थे नृप अति धार्मिक दिव्य ।।
पहुंची आत्मा साकेत धाम । नहीं संभव आए वह भूधाम ।। (६४९)
अतः नहीं संभव पुनर्जीवन । छोड़ो यह हठ तुम हे स्नेहन ।।
बोले तब गोरखनाथ महन । नहीं मेरा यह लक्ष्य गुरुजन ।। (६५०)
हेतु योगबल मैं स्व-आत्मा । करूँ प्रवेश शव हे महात्मा ।।
बोले तब गुरु मछिन्द्रनाथ । नहीं उचित यह गोरखनाथ ।। (६५१)
हो तुम युवा नियत सुकृति । यद्यपि यह चाह श्रेष्ठ कृति ।।
तत्स्थान हो मम दैह्य प्रवेश । हो जीवित तब यह शव नरेश ।। (६५२)
होगा शव मेरा यह तब तन । करो रक्षा तुम बारह वर्षन ।।
पश्चात करो प्रवेश आत्मा । अन्तः मम शरीर हे महात्मा ।। (६५३)

भावार्थ: मछिन्द्रनाथ बोले, 'हे शिष्य, सम्राट अत्यंत धार्मिक और दिव्य थे। उनकी आत्मा साकेत धाम पहुँच चुकी है। उसका पृथ्वी पर आना संभव नहीं है। अतः उनका जीवन दान संभव नहीं है। हे प्रिय, तुम यह हठ छोड़ दो।' तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'हे गुरुदेव, मेरा यह लक्ष्य नहीं था। हे महात्मा, मैं अपनी आत्मा को योग बल से इनके शव में प्रवेश कराना चाहता हूँ।' तब गुरु मछिन्द्रनाथ बोले, 'गोरखनाथ यह उचित नहीं है। यद्यपि यह उत्कृष्ट चाह है, पर तुम युवा हो। तुमने कल्याण कार्य करने हैं। तुम्हारे स्थान पर मैं अपनी आत्मा को सम्राट के शव को जीवित करने हेतु प्रवेश कराता हूँ। मेरा यह शरीर तब शव हो जाएगा। तुम उसकी बारह वर्ष तक रक्षा करना। उसके बाद हे महात्मा (गोरखनाथ), मेरे शरीर के अंदर (मेरी) आत्मा को प्रवेश कराना।'

होगा पालन आज्ञा गुरुवर । बोले गोरखनाथ शिष्यवर ।।
की प्रवेश स्व-दैह्य नृप तन । मछिन्द्रनाथ हेतु बल दैव्यन ।। (६५४)
हुए जीवित तब नृप तत्क्षण । हुए विस्मित सब कृत्य विलक्षण ।।
किए सब सम्राट अभिनंदन । संग रानी गए तब राजभवन ।। (६५५)
इस प्रकार बीता कुछ समय । हुईं रानी ऋतुया गर्भमय ।।
दीं जन्म अति सुन्दर नंदन । दिए नाम धर्मराज राजन ।। (६५६)

भावार्थ: शिष्य गोरखनाथ बोले, 'गुरु की आज्ञा का पालन होगा।' तब मछिन्द्रनाथ ने योग बल से अपनी आत्मा को सम्राट के शरीर में प्रवेश कराया। सम्राट तत्क्षण जीवित हो गए। इस विलक्षण कृत्य से सभी अचंभित हुए। सबने सम्राट का अभिनंदन किया। तब वह रानी के साथ राजभवन में गए। इस प्रकार कुछ समय बीता। उचित समय में रानी गर्भवती हुईं। उन्होंने एक अति सुन्दर पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम सम्राट ने धर्मराज रखा।

रखे गोरखनाथ शव गुरुवर। एक मंदिर रक्षित महेश्वर।।
दे दायित्व रक्षा पुरोहित। गए हेतु तीर्थ यात्रा महत।।(६५७)
बताया भेद रानी गुप्तचर। पश्चात अवधि द्वादस वत्सर।।
त्यागेंगे यह तन नरेश्वर। है यह तन हेतु दैह्य संतवर।।(६५८)
करेंगे प्रवेश तब वह स्व-तन। छुपी है जो शिव देवायतन।।
हुईं रानी अति मात्सर्य। दीं आज्ञा करो शव उन्मूलय।।(६५९)
रहे न शव संत मछिन्द्रनाथ। रहेंगे सदा संग तब भूनाथ।।
किए सेवक तब आज्ञा पालन। किए द्वादस अंश मृतक तन।।(६६०)
जाना तुरंत चंद्रप्रकाश। भेजी यक्षिणी अत कैलाश।।
ले लाओ यहां मृतक खंडका। ले आई तब शवांग सेविका।।(६६१)

भावार्थ: गोरखनाथ ने गुरुदेव के शव को शिव शंकर से रक्षित एक मंदिर में रखा। पुरोहित को उसकी रक्षा का दायित्व देकर वह महात्मा तीर्थाटन पर चले गए। यह भेद एक गुप्तचर ने रानी को बताया कि बारह वर्ष की अवधि के पश्चात सम्राट इस शरीर को त्याग देंगे जो एक संत की आत्मा के कारण है। वह तब अपने स्वयं के शरीर में प्रवेश करेंगे जो एक शिव मंदिर में छिपा है। तब रानी स्वार्थी हो गईं। उन्होंने शव को नष्ट करने का आदेश दिया। जब मछिन्द्रनाथ का शव नहीं रहेगा तब सम्राट सदा साथ रहेंगे। सेवक ने तुरंत आज्ञा का पालन किया और शव के बारह भाग कर दिए। जब यह शिव शंकर ने जाना तो उन्होंने कैलाश से एक यक्षिणी को भेजा कि मृतक के अंगों को तुरंत कैलाश लाओ। वह सेविका शव के अंगों को ले आई।

लौटे पश्चात वर्ष द्वादस।गोरखनाथ कर तीर्थ प्रवस।।
पूछे पुरोहित है कहाँ शव।बोला वह किए रानी अवयव।।(६६२)
आई तब एक यक्षिणी स्थल।ले गई थी जो शवांग शिव-स्थल।।
हुए दुःखी अति गोरखनाथ।चले तब निवास कैलाशनाथ।।(६६३)

भावार्थ: बारह वर्ष के पश्चात गोरखनाथ तीर्थ यात्रा से लौटे। पुरोहित से पूछा कि (गुरुदेव का) शव कहाँ है? वह बोला कि रानी ने उसके टुकड़े करवा दिए। तब इस स्थान पर एक यक्षिणी आई जो शव के टुकड़ों को अपने साथ शिव-स्थल (कैलाश) ले गई थी। गोरखनाथ (यह जानकर) अत्यंत दुःखी हुए। वह तब शिव निवास (कैलाश) को चल दिए।

पहुँच कैलाश किए हरि वंदन।बोले तब महेश्वर भगवन।।
करूँ एक मैं द्वादस शव खंड।जाओ तुम प्रयाग राज्यखंड।।(६६४)
है समय अब करें अभिषेक।कुंवर धर्मराज राजन नेक।।
मछिन्द्रनाथ स्वरूप राजन।करें त्याग वह यह नृप तन।।(६६५)
करें प्रवेश रक्षित शव स्व-तन।गोरखनाथ पड़े हरि चरन।।
ले शव चले तब गोरखनाथ।निकट रूप नृप मछिन्द्रनाथ।।(६६६)
मिल नृप कहे हरि आदेश।करें हरि पालन बोले नरेश।।
दिए तुरंत धर्मदास राज्य।त्यागा तब तन सम्राट दिव्य।।(६६७)
की आत्मा प्रवेश महत तन।पाया मछिन्द्रनाथ जीवन।।
कहीं तब रानी स्व-नंदन।जाओ धर्मदास निकट महन।।(६६८)
मछिन्द्रनाथ आपके पितृ।लो आशीर्वाद उनसे भद्र।।
किए वह आज्ञा माता पालन।गए मंदिर हेतु महत दर्शन।।(६६९)

भावार्थ: कैलाश पहुँच कर (गोरखनाथ ने) भगवान् (शिव शंकर) की वन्दना की। तब महेश्वर भगवान् बोले, 'मैं इन बारह शव के टुकड़ों को एक कर देता हूँ। तुम प्रयाग राज्य को प्रस्थान करो। श्रेष्ठ राजा अब राजकुमार धर्मदास का अभिषेक करें। राजा के स्वरुप में मछिन्द्रनाथ अब राजा का शरीर त्याग कर अपने रक्षित शरीर में प्रवेश करें।' तब गोरखनाथ ने प्रभु के चरण पकड़ लिए। तब गोरखनाथ शव लेकर नृप के रूप में मछिन्द्रनाथ के निकट (प्रयाग राज्य में) पहुँच गए। सम्राट से मिलकर प्रभु का आदेश सुनाया। तब नृप बोले कि हम प्रभु की आज्ञा का पालन करें। तुरंत उन्होंने

धर्मदास को राज्य दिया और तब दिव्य (महात्मा) ने अपना शरीर त्याग दिया। महात्मा की आत्मा ने अपने शरीर में प्रवेश किया और (इस प्रकार) मछिन्द्रनाथ ने जीवन पाया। तब रानी ने अपने पुत्र (धर्मदास) से कहा, 'हे धर्मदास, महात्मा के निकट जाओ। मछिन्द्रनाथ आपके पिता हैं। हे भद्र, उनसे आशीर्वाद लो।' माता के आदेश का पालन कर तब वह महात्मा के दर्शन हेतु मंदिर गए।

पड़ चरण धर्मदास कहे वचन। लो मुझे पिता अपनी शरन ।।
लगाए सुत कंठ मछिन्द्रनाथ। बोले करो अभी राज भूनाथ ।।(६७०)
करते रहो सेवा प्रजाजन। आएं काल उचित राजभवन ।।
श्री गोरखनाथ योगी महन। देने तुम्हें तब उचित बोधन ।।(६७१)

भावार्थ: तब धर्मदास महात्मा (मछिन्द्रनाथ) के चरण पड़कर बोले, 'हे पिता, मुझे अपनी शरण में लो।' मछिन्द्रनाथ ने पुत्र को गले से लगाया और बोले, 'हे सम्राट, अभी तुम राज करो। अपनी प्रजा की सेवा करते रहो। उचित समय में महात्मा योगी श्री गोरखनाथ तुम्हारे राजमहल आएंगे और तुम्हें उचित शिक्षा देंगे।

गए तीर्थ तब सब पुण्यकार। बीता कुछ समय भली प्रकार ।।
किए स्मरण मछिन्द्रनाथ वचन। दिए जो वह धर्मदास राजन ।।(६७२)
भेजे प्रयाग तब गोरखनाथ। हुए अति प्रसन्न मिल भूनाथ ।।
है समय लें विदा आप राजन। कहे गोरखनाथ मृदुल वचन ।।(६७३)
करें अभिषेक तुरंत स्व-नंदन। लें दीक्षा नाथ हों योगिन ।।
किए स्वीकार नृप प्रचोदन। हुआ भव्य तब सुत अभिषेचन ।।(६७४)
दिया नाम नव नृप तब दिव्य। होंगे प्रसिद्ध धर्म द्वितीय ।।
चले संग तब नृप धर्मदास। संत गो रखनाथ लेने सन्यास ।।(६७५)

भावार्थ: सब पुण्यकर्ता (नाथ संत) तीर्थ को चले गए। कुछ समय भली भांति बीता। तब मछिन्द्रनाथ को धर्मदास को दिया वचन याद आया। उन्होंने तब गोरखनाथ को प्रयाग भेजा। नृप (धर्मदास) उनसे मिलकर अति प्रसन्न हुए। तब गोरखनाथ मधुर वचन बोले, 'हे सम्राट, अब समय आ गया है कि आप अपने पुत्र को राज्य सौंप नाथ (पंथ) की दीक्षा स्वीकारें और योगी बनें।' सम्राट ने आज्ञा स्वीकार की और अपने पुत्र का भव्य अभिषेक किया। तब दिव्य (गोरखनाथ) ने नए सम्राट का नाम देते हुए कहा

कि यह धर्म द्वितीय के नाम से प्रसिद्ध होंगे। तब सम्राट धर्मदास संन्यास लेने संत गोरखनाथ के साथ चले।

पहुंचे बद्रिकाश्रम नाथ।ली दीक्षा धर्मदास मत नाथ।।
दिए आदेश तब गोरखनाथ।करो तुम साधना भोलेनाथ।।(६७६)
तब चले गए अन्य स्थल पावन।करें धर्मदास हरि शिव मनन।।
बीते द्वादस वर्ष कालम।लौटे सब नाथ बद्रिकाश्रम।।(६७७)
बोले तब योगी गोरखनाथ।सुनो धर्मदास प्रिय नाथ।।
हुई पूर्ण आपकी साधना।जागो ध्यान से हे महामना।।(६७८)
खोले श्रेष्ठ धर्मदास नयन।किए दंडवत देख समक्ष महन।।
बोले तब गुरु मछिन्द्रनाथ।हुई सिद्ध साधना भूनाथ।।(६७९)
करो प्रबंध हे गोरखनाथ।मनाएं उत्सव संग भोलेनाथ।।
दो निमंत्रण सभी सुर संत।आएं संग शिव ब्रह्मा अनंत।।(६८०)

भावार्थ: नाथ (गोरखनाथ) बद्रिकाश्रम पहुंचे। धर्मदास ने नाथ पंथ की दीक्षा ली। तब गोरखनाथ ने उन्हें शिव शंकर की साधना करने का आदेश दिया। (आदेश देकर) तब वह अन्य पवित्र स्थली चले गए। धर्मदास शिव की साधना करने लगे। बारह वर्ष का समय बीत गया तब सब नाथ (मछिन्द्रनाथ, गोरखनाथ और चौरंगीनाथ) बद्रिकाश्रम लौटे। तब योगी गोरखनाथ बोले, 'हे प्रिय नाथ (पंथ के अनुयायी) धर्मदास, सुनो। तुम्हारी साधना पूर्ण हुई। अब हे महात्मा, ध्यान से जागो।' तब श्रेष्ठ धर्मदास ने नेत्र खोले। महात्मा (गोरखनाथ) को समक्ष देखकर दंडवत किए। तब गुरु मछिन्द्रनाथ बोले, 'सम्राट (धर्मदास) की साधना सिद्ध हुई है, इसका शिव शंकर के साथ उत्सव मनाया जाए। हे गोरखनाथ, इसका प्रबंध करो। सभी संतों और देवताओं को निमंत्रण भेजो। वह ब्रह्मा, विष्णु और शिव के साथ आएं।'

हुआ तब एक अति भव्य विदथ्य।थे उपस्थिति सभी सुर दिव्य।।
संग ब्रह्मा विष्णु और महेश।पाए आशीष सबसे नरेश।।(६८१)
चला यह उत्सव अनेक दिवस।लौटे तब स्व-गृह सब सत्त्वस।।
दिए आदेश तब मछिन्द्रनाथ।सुनो हे धर्मदास श्रेष्ठ नाथ।।(६८२)
करो प्रचार पंथ नाथ भुवन।हो तुम एक उत्कृष्ट वक्तृन।।
धर मस्तक गुरुदेव प्रचोदन।गए धर्मदास हेतु प्रसरन।।(६८३)

भावार्थ: तब एक अति भव्य भोज हुआ। उसमें सभी दिव्य देवता ब्रह्मा, विष्णु और महेश के साथ उपस्थित थे। सम्राट (धर्मदास) ने सभी से आशीर्वाद पाया। यह उत्सव अनेक दिन चला, तब सभी देव अपने घरों को लौट गए। तब मछिन्द्रनाथ ने आदेश दिया, 'हे श्रेष्ठ नाथ धर्मदास, सुनो। तुम एक उत्कृष्ट वक्ता हो। विश्व में नाथ पंथ का प्रचार करो।' गुरुदेव मछिन्द्रनाथ की आज्ञा को मस्तक पर धारण कर तब धर्मनाथ (नाथ मत) प्रसारण हेतु चले गए।

दूरङ्गनाथ का प्रायश्चित

धर्मदास गए पंथ प्रसारण । गए गोरखनाथ तीर्थ भ्रमण ।।
ठहरे गोरखनाथ एक नगर । हुआ अनुभव भूकंप भयंकर ।। (६८४)
हेतु दिव्य दृष्टि हुआ बोधन । किए दूरङ्गनाथ संक्षोभन ।।
क्यों हुए क्रुद्ध दूरङ्गनाथ । थे उत्सुक जानें गोरखनाथ ।। (६८५)
हैं वह शिष्य निरंजननाथ । सिद्ध गहन अनुचर मत नाथ ।।
थे उनके एक शिष्य अनुव्रत । मिले गोरखनाथ उन महत ।। (६८६)

भावार्थ: धर्मदास पंथ के प्रसार हेतु गए और गोरखनाथ तीर्थ भ्रमण के लिए। (तीर्थ भ्रमण के समय) गोरखनाथ एक नगर में ठहरे। वहां उन्हें भयंकर भूकंप जैसा अनुभव हुआ। दिव्य दृष्टि से जान लिया कि यह दूरङ्गनाथ के क्षोभ के कारण है। दूरङ्गनाथ क्रोधित क्यों हुए, यह जानने के लिए गोरखनाथ उत्सुक थे। वह निरंजननाथ के सिद्ध शिष्य नाथ पंथ के गहन अनुयायी थे। उनके (दूरङ्गनाथ के) एक आज्ञाकारी शिष्य थे। उन महात्मा से गोरखनाथ मिले।

दिए स्व-परिचय गोरखनाथ । हूँ मैं शिष्य मछिन्द्रनाथ ।।
किस हेतु क्रुद्ध दूरङ्गनाथ । बताओ मुझे अनुचर नाथ ।। (६८७)
बोले तब शिष्य दूरङ्गनाथ । हे प्रथित योगी गोरखनाथ ।।
दिए आदेश मुझे गुरुवर । इच्छा लूँ समाधि शिष्यवर ।। (६८८)
हेतु काल द्वादस संवत्सर । हो रक्षक मम तन प्रियवर ।।
करबद्ध बोला मैं गुरुवर । करूँ पालन आज्ञा संतवर ।। (६८९)

भावार्थ: तब गोरखनाथ ने अपना परिचय दिया, 'मैं मछिन्द्रनाथ का शिष्य हूँ। दूरङ्गनाथ किस कारण से क्रोधित हैं, हे नाथ पंथ के अनुयायी, मुझे बतलाओ।' तब दूरङ्गनाथ के शिष्य बोले, 'हे विश्व प्रसिद्ध योगी गोरखनाथ, मुझे गुरुदेव ने आदेश दिया था कि उनकी इच्छा बारह वर्ष की अवधि के लिए समाधि लेने की है, अतः मैं उनके शरीर की रक्षा करूँ। मैंने करबद्ध गुरुदेव से कहा कि हे संत, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।'

किए प्रारम्भ समाधि महत । मैं जाऊं नित्य हेतु भिक्षावत ।।
बोला एक दिवस नवयुवक । लगते तुम स्वस्थ समर्थ साधक ।। (६९०)
क्यों नहीं करते तुम कर्मण । हेतु अपना तन भरण पोषण ।।
बोला मैं तब विनम्र वचन । हैं गुरुदेव समाधी मग्न ।। (६९१)
है मेरा दायित्व हे सज्जन । करूँ रक्षा सर्वथा उनका तन ।।
यदि जाऊं मैं हेतु कर्मण । करे कौन उनका तन रक्षण ।। (६९२)

भावार्थ: 'महात्मा (मेरे गुरुदेव दूरङ्गनाथ) ने समाधि प्रारम्भ की और मैं प्रतिदिन भिक्षा को जाता। एक दिन एक नवयुवक बोला। हे साधक, तुम स्वस्थ और समर्थ लगते हो। अपने शरीर के भरण पोषण के लिए तुम काम क्यों नहीं करते? मैं विनम्रता से बोला, 'मेरे गुरु समाधि में मग्न हैं। हे भद्र, मेरा दायित्व है कि मैं उनके तन की सर्वथा रक्षा करूँ। यदि मैं काम करने जाऊँगा तो उनके तन के रक्षा कौन करेगा?'

बोला तब वह अति व्यंग्य वचन । क्यों करते अपदेश गुरु मनन ।।
है सत्य कि तुम व्यर्थ अलसकर । न करना चाहो श्रम दुष्कर ।। (६९३)
दूँ भिक्षा यद्यपि अद्य साधक । पर न आओ कल मेरे द्वारक ।।
हुआ पूर्णतः सत्य यह कथन । नहीं मिला अन्न बाद उस दिन ।। (६९४)

भावार्थ: 'तब वह अति व्यंग्य वचन बोला कि गुरु की साधना का बहाना क्यों बनाते हो? सत्य तो यह है कि तुम व्यर्थ और आलसी हो। कठिन कार्य नहीं करना चाहते। हे साधक, यद्यपि आज मैं भिक्षा देता हूँ, परन्तु कल से मेरे द्वार पर नहीं आना। उसका कथन पूर्णतः सत्य हुआ। उस दिन के पश्चात मुझे अन्न (भिक्षा) नहीं मिला।'

था दुःखी बैठा वृक्ष तल । आई एक काष्ठिका उस स्थल ।।
पूछी योगी हो क्यों व्यथित । कहा तब मैं हेतु हे महत ।। (६९५)
नहीं देता कोई माँ अन्न । हैं स्थित समाधि गुरु महन ।।
रहेगी समाधि बारह वर्ष । कहते सब करो कार्य कर्ष ।। (६९६)
ढूंढ रहा मैं कोई कार्य । पर न देता कार्य कोई आर्य ।।
दो माँ तुम अवसर सचन । काटूँ काष्ठ हेतु विक्रयन ।। (६९७)

भावार्थ: 'दुःखी हो एक वृक्ष के नीचे बैठा था तब उस स्थान पर एक काष्ठिका (लकड़ी कटाने वाली) आई। उसने पूछा कि योगी दुःखी क्यों हो? हे महात्मा, तब मैंने इसका कारण बताया। कोई मुझे अन्न (भिक्षा) नहीं देता। मेरे महात्मा गुरु समाधि में स्थित हैं जो बारह वर्ष तक रहेगी। सब कहते हैं कि कार्य के लिए परिश्रम करो। मैं कोई कार्य ढूंढ रहा हूँ, पर कोई आर्य मुझे कार्य नहीं देता। माँ, तुम सेवा का अवसर दो। मैं बेचने के लिए (तुम्हारे लिए) लकड़ी काटूंगा।'

बोलीं काष्ठिका है उचित।दूँ द्वि रोटी नित्य हेतु कृत।।
करने लगा मैं काष्ठ छेदन।जाऊं घर घर हेतु विक्रयन।।(६९८)
इस कार्य मिलता जो भी धन।मैं करता क्रय आटा अन्न।।
बनातीं रोटी माँ छेदकर।पाता द्वि रोटी कृत्यकर।।(६९९)
करता गुरुदेव को अर्पन।कभी खाते एक कभी द्वयन।।
रहता अधिकतर मैं क्षुधित।बीते बारह वर्ष तब महत।।(७००)
हो गया था मैं सम कंकाल।जागे गुरु समाधि उस काल।।
देख मेरा क्रश दुर्बल तन।पूछे गुरु हेतु इस वृत्तन।।(७०१)

भावार्थ: 'काष्ठिका बोलीं कि उचित है। इस कार्य के लिए मैं प्रतिदिन दो रोटी दूंगी। तब मैं लकड़ी काटने लगा और घर घर जाकर बेचने लगा। इस कार्य से जो भी धन मिलता, मैं अन्न का आटा खरीदता। तब काष्ठिका माँ रोटी बनातीं और मैं इस कार्य के लिए दो रोटी पाता। मैं (दोनों) रोटी गुरुदेव को अर्पण कर देता। कभी वह एक खाते, कभी दोनों। मैं अधिकतर भूखा ही रहता। हे महात्मा, (इस प्रकार) तब बारह वर्ष बीत गए। मैं कंकाल के समान हो गया था। उस समय (बारह वर्ष बीतने पर) गुरुदेव समाधि से जागे। मेरे क्रश (दुबले) और दुर्बल शरीर को देखकर गुरुदेव ने इसका कारण पूछा।'

जान क्रूर कदर्यता भूजन।हुए गुरुदेव अति प्रतिघन।।
दूँ मैं दंड तुरंत दुष्टजन।क्रुद्ध गुरु बोले यह वचन।।(७०२)
करूँ शीघ्र नष्ट यह पट्टन।बोला तब मैं मृदुल वचन।।
ठहरो गुरुवर बस कुछ क्षन।कहूँ काष्ठिका छोड़े पट्टन।।(७०३)
हुए सहमत दयालु गुरुवर।गया झट मैं काष्ठिका घर।।
दिया सन्देश तब छोड़ो नगर।करेंगे इसे नष्ट गुरुवर।।(७०४)

त्यागीं तुरंत नगर माता।करें जप गुरु युक्त उग्रता।।
यद्यपि प्रसिद्ध नाम नगर।वल्लाभिपट्टन हे मान्यवर।।(७०५)
पर क्रुद्ध गुरु करे जपन।हो नष्ट क्रूर निर्दयी पट्टन।।
हेतु आया भूकंप हे महन। कर रहा श्राप नष्ट सब पट्टन।।(७०६)

भावार्थ: 'प्राणियों को क्रूर और दैन्य जानकार गुरुदेव अत्यंत क्रोधित हुए। मैं इन दुष्ट प्राणियों को दंड दूंगा, ऐसा क्रोधित गुरुदेव बोले। मैं शीघ्र इस नगर को नष्ट कर दूंगा। तब मैं मधुर वचन बोला कि हे गुरुदेव बस कुछ क्षण रुक जाइए। मैं काष्ठिका को नगर छोड़ने को बोल दूँ। दयालु गुरुदेव सहमत हो गए। मैं तुरंत काष्ठिका के घर गया और उसे नगर छोड़ने का सन्देश दिया क्योंकि गुरुदेव इसे नष्ट करने वाले हैं। माता ने तुरंत नगर त्याग दिया। तब क्रोधित गुरु जप करने लगे। हे मान्यवर, यद्यपि यह नगर वल्लाभिपट्टन नाम से प्रसिद्ध है, परन्तु क्रोधित गुरु ने क्रूर निर्दयी नगर नष्ट हो, ऐसा जप किया। हे महात्मा, इस कारण यह भूकंप आया है जिससे सभी नगर नष्ट हो रहे हैं।'

बोले तब गोरखनाथ महत।हेतु योगी नहीं यह उचित।।
है विरुद्ध नाथ परम्परागत।करूँ यत्न रोकूं उपाकृत।।(७०७)
हेतु योग बल रोका विघटन।सभी अन्यत्र वल्लाभिपट्टन।।
नहीं बचा सके वह यह नगर।दिया संभवतः दंड गंगाधर।।(७०८)
गए तब मिलने गोरखनाथ।संग शिष्य गुरु दूरङ्गनाथ।।
दिए स्व-परिचय तब योगी महत।बोले नहीं किया नाथ उचित।।(७०९)

भावार्थ: तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'हे योगी, यह उचित नहीं है। यह नाथ संप्रदाय के विरुद्ध है। प्रयास कर इस विनाश को रोकूंगा।' तब योग बल से उन्होंने वल्लाभिपट्टन के अतिरिक्त सभी नगरों का विनाश रोका। वह उस नगर को नहीं बचा सके। शिव शंकर ने संभवतः (उस नगर) को दंड दिया था। तब गोरखनाथ शिष्य के साथ उनके गुरु दूरङ्गनाथ से मिलने गए। योगी महात्मा (गोरखनाथ) ने अपना परिचय दिया और बोले, 'हे नाथ, यह आपने उचित नहीं किया।'

हुआ सफल मैं बचाने पट्टन। सभी अतिरिक्त वल्लाभिपट्टन ।।
है क्या नहीं योगी कर्तव्य। करें रक्षा लोकजन हे दिव्य ।।(७१०)
सुन गोरखनाथ सत्य वचन। जागी संवेदना योगी महन ।।
हुई त्रुटि बोले दूरङ्गनाथ। है मुझे पश्चाताप हे नाथ ।।(७११)
करूँ क्या अब दो निर्देशन। हो सके प्रायश्चित हे महन ।।
बोले गोरखनाथ सुनो महत। जाओ द्वारिका हेतु तप ।।(७१२)
देंगे तुम्हें शांति भगवन। बोले तब दूरङ्गनाथ महन ।।
धन्य धन्य तुम हे गोरखनाथ। करूँ अनुसरण आज्ञा नाथ ।।(७१३)

भावार्थ: 'मैं वल्लाभिपट्टन के अतिरिक्त सभी नगरों को बचाने में सफल हुआ हूँ। हे दिव्य, क्या योगी का कर्तव्य प्राणियों की रक्षा करना नहीं है?' गोरखनाथ के सत्य वचन सुन महात्मा योगी (दूरङ्गनाथ) की संवेदना जागी। दूरङ्गनाथ बोले, 'हे नाथ, मुझ से त्रुटि हुई। इसका मुझे पश्चाताप है। हे महात्मा, अब मुझे निर्देश करो कि मैं प्रायश्चित के लिए क्या करूँ?' तब गोरखनाथ बोले, 'हे महात्मा, सुनो। तप के लिए द्वारका जाओ। तुम्हें भगवान शान्ति देंगे।' तब दूरङ्गनाथ बोले, 'हे गोरखनाथ आप धन्य हो, धन्य हो।' नाथ (दूरङ्गनाथ) ने उनकी आज्ञा का अनुसरण किया।

पहुंचे द्वारका धाम भगवन। मिले वह नाथ पंथ संतजन ।।
कही कथा तब दूरङ्गनाथ। भेजा मुझे यहां गोरखनाथ ।।(७१४)
हेतु प्रायश्चित मेरे अमर्ष। करूँ क्या दो मुझे विमर्श ।।
बोले तब नाथ पंथ संत महत। करना पड़े तप वर्ष त्रिशत ।।(७१५)
प्रथम द्वादस वर्ष करो तप। खड़े एक पग तुम योगी महत ।।
फिर योगी द्वादस वर्ष अपर। करो तप लेटे आधार कमर ।।(७१६)
हेतु अंतिम द्वादस वर्ष महन। हो खड़े बल शिरस करो मनन ।।
करे स्वीकार दूरङ्गनाथ। आदेश वरिष्ठ संत पंथ नाथ ।।(७१७)
त्रिशत वर्ष किए वह गहन तप। हुआ निर्वेश इस भांति महत ।।
गए मिलने तब वह गोरखनाथ। हुए कृतमङ्गल दूरङ्गनाथ ।।(७१८)

भावार्थ: वह (दूरङ्गनाथ) हरि के धाम द्वारका पहुंचे। वह वहां नाथ पंत के संतों से मिले। दूरङ्गनाथ ने उनको सब कथा सुनाई कि मुझे गोरखनाथ ने यहां मेरे क्रोध का प्रायश्चित करने भेजा है। आप मुझे निर्देश दो, मुझे क्या करना चाहिए? तब नाथ पंथ के संत

बोले, 'छत्तीस वर्ष तक तुम्हें तप करना पड़ेगा। पहले बारह वर्ष एक पग पर खड़े तप करो। अगले बारह वर्ष कमर के बल लेट कर तप करो। अंतिम बारह वर्ष सर के बल खड़े होकर तप करो।' दूरङ्गनाथ ने यह वरिष्ठ संतों का आदेश स्वीकार किया और छत्तीस वर्ष तक घोर तप किया। इस भांति उनका प्रायश्चित हुआ। तब वह गोरखनाथ से मिलने गए। (उनसे मिलकर) दूरङ्गनाथ धन्य हो गए।

अजपानाथ से मिलन

था यह संत गोरखनाथ नियम । करते रहें सदा तीर्थ व्रजम ।।
मिले एकद योगी अजपानाथ । लिए संग यात्रा गोरखनाथ ।। (७१९)
पहुंचे दोनों देश गांधार । गए हिंगला देवी आगार ।।
किए नमन हिंगला माता । हो प्रकट दीं माँ तब वरता ।। (७२०)

भावार्थ: यह गोरखनाथ का नियम था कि वह सदैव तीर्थ यात्रा करते रहते थे। एक बार यात्रा के मध्य वह योगी अजपानाथ से मिले। उन्हें अपनी (तीर्थ) यात्रा में साथ ले लिया। दोनों गांधार देश पहुंचे। वहा हिंगला माँ के मंदिर गए। उन्होंने हिंगला माता को नमन किया। माँ ने प्रकट हो उन्हें वरदान दिए।

गए तब द्वि सुलेमान पर्वत । मिले वहां कुछ योगी महत ।।
थे वह शिष्य संत अजपानाथ । मिल हुए प्रसन्न गोरखनाथ ।। (७२१)
हुए धन्य वह अनुयायी नाथ । दिए आशीर्वाद गोरखनाथ ।।
करें वह विनती हे महत । दो हमें बोध योग व् प्रयत ।। (७२२)
हो प्रसन्न तब गोरखनाथ । दिए ज्ञान संस्कार मत नाथ ।।
ठहरे वहां वह संत कुछ दिन । चलना चाहें अन्य स्थल पावन ।। (७२३)
करबद्ध बोले तब अजपानाथ । दें आज्ञा यदि गोरखनाथ ।।
रुकें वहां वह संग स्व-शिष्य । दिए अनुमति हो प्रसन्न दिव्य ।। (७२४)
ले विदा तब गोरखनाथ । पहुंचे कटासराज शिवनाथ ।।
किए दर्शन वहां भोलेनाथ । हुआ प्रसन्न हिय गोरखनाथ ।। (७२५)
किए तप वहां वर्ष पञ्चाशत् । बनाए अनेक अनुयायी महत ।।
पाए स्वास्थ्य हेतु संत दर्शन । अनगिनत वहां दुःखी भूजन ।। (७२६)
दिए नाम गोरखटीला स्थल । कृतज्ञ निवासी उस भूस्थल ।।
पश्चात यह महादेव साधना । की आरम्भ यात्रा महामना ।। (७२७)
मध्य पथ बने अनगिनत शिष्य । पहुंचे तब डुगराल दिव्य ।।
है यह उत्तराखंड भूस्थल । ठहरे कुछ दिन चारु स्थल ।। (७२८)

भावार्थ: तब दोनों सुलेमान पर्वत पर गए। वहां कुछ योगी महात्मा मिले। वह संत (योगी) अजपानाथ के शिष्य थे। उनसे मिलकर गोरखनाथ अत्यंत प्रसन्न हुए। वह

नाथ (पंथ) के अनुयायी कृतज्ञ हुए। गोरखनाथ ने उन्हें आशीर्वाद दिए। वह विनती करने लगे, 'हे महात्मा (गोरखनाथ), हमें योग और (नाथ पंथ के) संस्कार की शिक्षा दीजिए।' तब गोरखनाथ ने प्रसन्न होकर उन्हें नाथ पंथ के संस्कार का ज्ञान दिया। वह संत (गोरखनाथ) वहां कुछ दिन रुके, फिर अन्य तीर्थ स्थल जाना चाहा। तब अजपानाथ करबद्ध बोले, 'यदि गोरखनाथ आज्ञा दें तो वह अपने शिष्यों के साथ वहां रुकें।' तब दिव्य (गोरखनाथ) ने उन्हें प्रसन्नता से अनुमति दे दी। तब गोरखनाथ ने विदा ली और वह शिवनाथ कटासराज पहुंचे। वहां भोलेनाथ के दर्शन किए। गोरखनाथ का हृदय अति प्रसन्न हुआ। वहां वह पचास वर्ष तक साधना किए। महात्मा ने वहां अनेक अनुयायी बनाए। संत दर्शन से वहां अनगिनत दुःखी प्राणियों ने स्वास्थ्य लाभ पाया। उस स्थान के कृतज्ञ प्राणियों ने उस स्थान का नाम गोरखटीला रख दिया। इसके पश्चात महात्मा ने अपनी यात्रा प्रारम्भ की। मार्ग में अनगिनत शिष्य बने। तब वह दिव्य डुगराल (ग्राम) पहुंचे। यह उत्तराखंड का एक अति सुन्दर स्थल है। वह वहां कुछ दिन ठहरे।

असहाय का सौभाग्य

साधु शिष्य थे एक गोरखनाथ । था नाम उनका पवननाथ ।।
भेजा उन्हें हेतु दुग्ध भिक्षा । गए ग्राम हेतु पालन इच्छा ।। (७२९)
देखा वहां एक समूह भूजन । पूछे कहाँ मिले अवदोहन ।।
था उनका स्वभाव दुर्नामन् । किए परिहास वह संग संतजन ।। (७३०)
किए इंगित ब्राह्मण निर्धन । कहे असत्य कि वह अति सधन ।।
स्वामी एक सहस्त्र गौ माता । है प्रसिद्ध जग महादाता ।। (७३१)
जाओ तुम उसके घर द्वार । दे तुम्हें मनचाहा आहार ।।
माना योगी यह सत्य वचन । गए द्वार उस जन हेतु याचन ।। (७३२)
की पुकार तब अलख संतजन । आया बाह्य गृह ब्राह्मन ।।
हुए विस्मित देख उसे महन । थी दशा उसकी अति निर्धन ।। (७३३)
नहीं थे तन वस्त्र यथोचित । करबद्ध बोला हूँ मैं लज्जित ।।
नहीं घर कुछ हेतु निर्यातन । नहीं पका आज घर भोजन ।। (७३४)
है भूखा मेरा परिवार । नहीं दे सकूं मैं उपहार ।।
सुन हुए संत स्वयं लज्जमन । समझे किए परिहास अघजन ।। (७३५)

भावार्थ: गोरखनाथ के एक सरल शिष्य थे। उनका नाम पवननाथ था। उन्हें दुग्ध की भिक्षा लेने (गोरखनाथ ने) भेजा। (गुरु की) इच्छा पालन हेतु वह गांव गए। वहां एक मनुष्यों का समूह देखा। उनसे पूछा कि दुग्ध कहाँ मिल सकता है? वह दुष्ट स्वभाव के मनुष्य थे। उन्होंने संत के साथ परिहास किया। एक निर्धन ब्राह्मण की ओर इंगित कर असत्य बोले कि वह अत्यंत धनी है। एक सहस्त्र गौ माताओं का स्वामी है। विश्व में महादाता विख्यात है। उसके घर के द्वार जाओ। तुम्हें मनचाहा भोजन मिल जाएगा। योगी ने उनके वचनों को सत्य समझा और वह उसके घर भिक्षा लेने पहुँच गए। उन्होंने (भिक्षा हेतु) अलख पुकार लगाई। ब्राह्मण घर से बाहर निकला। उसे देख कर महात्मा विस्मित हुए। उसकी अति निर्धन दशा थी। शरीर पर उचित वस्त्र नहीं थे। करबद्ध वह (ब्राह्मण) बोले, 'मैं लज्जित हूँ कि मेरे घर दान देने के लिए कुछ नहीं है। आज घर में भोजन नहीं पका। मेरा परिवार भूखा है। मैं कोई भेंट नहीं दे सकता।' यह सुन संत स्वयं लज्जित हुए और समझ गए कि दुष्ट लोगों ने उनके साथ परिहास किया है।

बोले तब संत पवननाथ महन । हो नहीं लज्जित तुम हे सुजन ।।
होगा कोई कारण हे आर्य । हरि तो करें सदा शुभ कार्य ।। (७३६)
रहो संतुष्ट जो दें भगवन । नहीं हो असूय देख अन्य धन ।।
दे सांत्वना गए संत अन्य घर । पाए दुग्ध यथेष्ट गुरुवर ।। (७३७)
कहे तब सब कथा पवननाथ । हुए भावुक सुन गोरखनाथ ।।
किए मन्त्रित तुरंत विभूति । दो यह भस्म उस निर्धन व्यक्ति ।। (७३८)
गए पवननाथ गृह ब्राह्मन । आया पुनः बाहर वह सज्जन ।।
हुआ विस्मित देख संत महन । कहा पहले हूँ अति निर्धन ।। (७३९)
फिर आए क्यों पुनः यहां संत । करने मुझे अपत्रप अत्यंत ।।
बोले पवननाथ मृदु वचन । सुनो ब्राह्मण गुरु अनुदेशन ।। (७४०)
किया दशा तुम्हारी वर्णन । दिए यह मन्त्रित भस्म महन ।।
रखो इसे उचित स्थान स्व-घर । करेंगे दया अवश्य भूतेश्वर ।। (७४१)

भावार्थ: तब महात्मा पवननाथ बोले, 'हे सज्जन, तुम लज्जित नहीं हो। हे आर्य, (इस दशा का) कोई कारण होगा। प्रभु तो सदैव शुभ कार्य करते हैं। जो भगवान् ने दिया है, उसमें संतुष्ट रहो। दूसरे का धन देख ईर्ष्या न करो।' इस प्रकार सांत्वना देकर संत दूसरे घर गए। वहां गुरुदेव की इच्छानुसार दुग्ध पाया। (लौटकर) पवननाथ ने सब कथा गुरु को सुनाई। यह सुन गोरखनाथ भावुक हो गए। तुरंत भस्म को मन्त्रित किया और बोले कि यह भस्म उस निर्धन को दे दो। पवननाथ उस ब्राह्मण के घर गए। वह सज्जन फिर घर के बाहर आया और महान संत को देखकर आश्चर्यचकित हुआ। (सोचने लगा) मैंने पहले ही कहा था कि मैं अति निर्धन हूँ। फिर यह संत मुझे अति लज्जित करने यहां पुनः क्यों आए हैं? तब पवननाथ मधुर वचन बोले, 'हे ब्राह्मण गुरुदेव का निर्देश सुनो। मैंने तुम्हारी दशा का महात्मा को वर्णन किया था। गुरुदेव ने यह मन्त्रित भस्म दी है। इसे तुम अपने घर में उचित स्थान पर रख दो। शिव शंकर अवश्य दया करेंगे।'

चले गए महत संत दे विभूति । बीते कुछ दिवस इस भांति ।।
आया गृह ब्राह्मण एक दिन । एक अज्ञात अतिथि था सधन ।। (७४२)
थीं अनेक भेंट उसके वाहन । पुकारे द्वार हे ब्राह्मन ।।
आओ बाहर करो स्वीकार । यह तुम समस्त श्रेष्ठ उपहार ।। (७४३)
निकले ब्राह्मण तब स्व-घर । पूछे हो तुम कौन मान्यवर ।।
बोले अतिथि हूँ व्यापारी । दिए आदेश स्वप्न मुरारी ।। (७४४)
दो यह भेंट तुरंत ब्राह्मन । आया करने आज्ञा पालन ।।
कीं भेंट स्वीकार ब्राह्मन । हुए कृतज्ञ वह उस भूजन ।। (७४५)
चले गए तब अतिथि मान्यवर । खोलीं भेंट स्वामिन् ग्रहवर ।।
थे अनेक वस्त्र मुद्रा स्वर्ण । कीं ब्राह्मणी नमन चरण ।। (७४६)
आए संत जो दिए विभूति । है यह हेतु उनके गुरु स्वस्ति ।।
बोले ब्राह्मण सच है कथन । हैं गुरु संत सिद्ध महामन ।। (७४७)

भावार्थ: संत (पवननाथ) विभूति देकर चले गए। इस प्रकार कुछ दिन बीत गए। तब ब्राह्मण के घर एक अज्ञात अतिथि जो धनी थे, आए। उनके वाहन में अनेक भेंट थीं। द्वार पर आकर पुकारे, 'हे ब्राह्मण, घर से बाहर आओ और तुम यह समस्त श्रेष्ठ भेंट स्वीकार करो।' तब ब्राह्मण अपने घर से निकले और पूछा, 'हे मान्यवर, आप कौन हैं।' अतिथि बोले, 'मैं एक व्यापारी हूँ। स्वप्न में भगवान् ने आदेश दिया है कि यह भेंट ब्राह्मण को दे दो। मैं आज्ञा पालन करने आया हूँ।' ब्राह्मण ने भेंट स्वीकार की और उस प्राणी के प्रति कृतज्ञ हुए। जब मान्यवर अतिथि चले गए तब गृह स्वामिनी ने भेंट खोलीं। उसमें अनेक वस्त्र और स्वर्ण मुद्राएं थीं। ब्राह्मणी ने उन संत के गुरु, जिन्होंने विभूति दी थी, (हृदय में) का चरण नमन किया। यह सब उनके आशीर्वाद के कारण है। ब्राह्मण बोले, 'यह सत्य कथन है। संत गुरु सिद्ध महात्मा हैं।

आए अन्य हरि भक्त गौ पालक । लिए साथ शत गौ सुदुग्धक ।।
किए अर्पित वह सुभग ब्राह्मण । हुए कृतज्ञ वह तब पा अर्पण ।। (७४८)
धन्य धन्य योगी गोरखनाथ । हुए निर्धन ब्राह्मण सनाथ ।।
देख वैभव निर्धन परिवार । हुए लज्जित परिहासकार ।। (७४९)
आए मिलने गुरु गोरखनाथ । थे संग शिष्य संत पवननाथ ।।
हुए ब्राह्मण दंपत्ति प्रसन्न । किए वह तब उनके पग पूजन ।। (७५०)

पाए अनगिनत आशीर्वचन। कहे रहें श्री सदा प्रसन्न।।
चले गए तत्पश्चात महात्मा। किए क्षमा ब्राह्मण दुरात्मा।।(७५१)

भावार्थ: एक अन्य हरि भक्त गौ पालक सौ दुग्ध देने वाली गऊएँ के साथ आए। उन सौभाग्यशाली ब्राह्मण को (गऊएँ) अर्पित कीं। भेंट पाकर वह (ब्राह्मण) कृतज्ञ हो गए। गोरखनाथ आप धन्य हैं जिन्होंने निर्धन ब्राह्मण को सनाथ (समर्थ) बना दिया। निर्धन (ब्राह्मण) परिवार का वैभव देखकर परिहास करने वाले लज्जित हुए। तब गुरु गोरखनाथ अपने शिष्य संत पवननाथ के साथ (ब्राह्मण परिवार से) मिलने आए। ब्राह्मण दंपत्ति अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने उनका पग पूजन किया। उनसे अनेक आशीर्वाद पाए। उन्होंने (गोरखनाथ ने) कहा कि श्री (लक्ष्मी) सदा प्रसन्न रहें। इसके पश्चात महात्मा (गोरखनाथ और पवननाथ) चले गए। ब्राह्मण ने दुरात्माओं (परिहास करने वालों) को क्षमा कर दिया।

ज्वालादेवी की कृपा

ठहरे गोरखनाथ उस स्थापन। कुछ और दिन साथ शिष्यन ।।
फिर हुए तत्पर तीर्थ भ्रमन। गए माँ ज्वाला गंडमंडलन ।। (७५२)
हुईं प्रकट माँ भगवती। देख गोरखनाथ आगत्यती ।।
पड़ पग बोले संत गोरखनाथ। किया मुझे माँ आज सनाथ ।। (७५३)
दीं माँ अनेक आशीर्वचन। बोलीं है स्वागत संत महन ।।
करूँ पाक स्व-हस्त मैं भोजन। हेतु तुम और सब शिष्यगन ।। (७५४)

भावार्थ: गोरखनाथ उस स्थल पर अपने शिष्यों के साथ कुछ और दिन ठहरे। तब तीर्थ यात्रा को तत्पर हुए। वह ज्वाला माँ के मंदिर गए। गोरखनाथ को आते देख माँ भगवती प्रकट हो गईं। संत गोरखनाथ उनके चरणों पर पड़ कर बोले, 'माँ आपने मुझे सनाथ कर दिया।' माँ ने अनेक आशीर्वाद दिए और बोली। 'हे महात्मा संत, आपका स्वागत है। मैं अपने हाथों से तुम्हारे और सभी शिष्यों के लिए भोजन पकाऊंगी।'

करबद्ध बोले तब संत महन। हूँ माँ मैं अत्यंत भाग्यवन ।।
पर करूँ मैं शाक आहार। बने भोज यहां मांसाहार ।। (७५५)
बोलीं माँ तब सुनो संतवर। नहीं अल्प रूचि आमिषकर ।।
समझें यह कलियुगी भक्त। होती प्रसन्न बलि आरण्यत ।। (७५६)
नहीं देती वर भ्रमित भक्त। ऐसे भूजन जो करें दुष्कृत ।।
नहीं देना वर मेरा दायित्व। भोगें फल है उनका कर्मत्व ।। (७५७)
बनाऊं मैं भोज शाक पावन। चावल दाल व् फल सुरामन् ।।
धन्य धन्य माँ कहें संत महन। सुभग पाऊँ माँ कर भोजन ।। (७५८)

भावार्थ: तब महात्मा संत करबद्ध बोले, 'माँ, मैं अत्यंत भाग्यवान हूँ। परन्तु माँ, मैं शाकाहारी हूँ, आपके यहां तो मांसाहार भोजन बनता है।' तब माँ बोली, 'हे संत सुनो। मुझे मांसाहार में अल्प रुचि भी नहीं है। यह कलियुगी भक्त समझते हैं कि पशु की बलि से मैं प्रसन्न होती हूँ। ऐसे भ्रमित भक्त जो ऐसा दुष्कर्म करते हैं, उनको मैं वर नहीं देती। वरदान न देना मेरा दायित्व है। वह इसका फल भोगें, यह उनका कर्म है। मैं शुद्ध शाकाहारी भोजन बनाऊंगी जिसमें चावल, दाल और स्वादिष्ट फल होंगे।' तब

महात्मा संत (गोरखनाथ) ने कहा, 'हे माँ, धन्य है, धन्य है। माँ के हाथ का बना भोजन पा मैं सौभाग्यशाली हूँगा।'

पर माँ दिव्य है एक मेरा पण। पकाएं चावल लाऊँ जो भिक्षण ।।
हुईं सहमत माँ संत इच्छा। गए तब गोरखनाथ हेतु भिक्षा ।।(७५९)
गए पूर्व दिशा वह महामन। पहुँच गांव रखे एक बर्तन ।।
अलख अलख करें वह पुकार। भरो पात्र चावल प्रदातृ ।।(७६०)
लाएं झोली भर भर तण्डुल। पर नहीं भरता वह कमंडल ।।
गए तब गोरखनाथ पश्चिम। माँगी भिक्षा अंदर पात्रम् ।।(७६१)

भावार्थ: (गोरखनाथ बोले) हे दिव्य माँ मेरा एक पण है कि जो मैं भिक्षा में लाऊँ, वही चावल पकाएं। माँ संत की इच्छा से सहमत हुईं। तब गोरखनाथ भिक्षा हेतु गए। वह पूर्व दिशा में गए और गांव पहुंचकर एक बर्तन (कमंडल) रखा। अलख अलख की पुकार से उन्होंने दाताओं को चावल से इस पात्र को भरने को कहा। (दाता) झोली भर भर कर चावल लाने लगे पर वह कमंडल भरता नहीं था। तब गोरखनाथ पश्चिम की ओर गए और पात्र के अंदर भिक्षा माँगी।

किए यहां एक चमत्कार महन। दिए अन्न निर्धन उस भाजन ।।
आएं सहस्त्र संख्या भूजन। पर न हो कम अन्न उस बर्तन ।।(७६२)
फिर एक दिन पकाए खिच्चाल। कर प्रयोग कपाल सम स्थाल ।।
खाई खिचड़ी अनगिनत जन। फिर भी न हुआ खाली बर्तन ।।(७६३)
जानी महिमा योगबल भूजन। बोले तब गोरखनाथ महन ।।
नहीं लक्ष्य करूँ बल प्रदर्शन। पर समझो तुम बल तप योगिन ।।(७६४)
दीं देवी ज्वाला निमंत्रन। हेतु भोजन स्व-गंडमंडलन ।।
पर दो बलि पशु तुम भूजन। हो इससे अशुद्ध मेघाध्वन् ।।(७६५)
पा सकूं शुद्ध शाक भोजन। अतः न करो दूषित वातावरन ।।
हो विनम्र बोले तब भूजन। नहीं इसमें त्रुटि प्रजाजन ।।(७६६)

भावार्थ: महात्मा ने वहां एक चमत्कार किया। उस पात्र से निर्धन लोगों को अन्न दिया। सहस्त्रों की संख्या में वहां प्राणी आएं परन्तु उस बर्तन का अन्न कम न हुआ। फिर एक दिन कपाल को पाक पात्र बना खिचड़ी पकाई। खिचड़ी अनगिनत प्राणियों ने

खाई, फिर भी बर्तन खाली नहीं हुआ। प्राणियों ने योग बल की महिमा जानी। तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'मेरा लक्ष्य बल प्रदर्शन का नहीं था। तुम योगी के तप बल को समझो (इस हेतु यह प्रयोग किया)। ज्वाला देवी ने मुझे अपने मंदिर में भोजन का निमंत्रण दिया है, परन्तु तुम प्राणियों ने पशु की बलि से वातावरण को अशुद्ध कर दिया है। मैं शुद्ध शाकाहारी भोजन पा सकूं, इस हेतु आप वातावरण को दूषित न करें।' तब विनम्र प्राणी बोले, 'इसमें हम प्रजा की त्रुटि नहीं है।'

कहे पुरोहित हों माँ प्रसन्न। दें जब बलि पशु वर इच्छित जन।।
बोले तब गोरखनाथ महन। हैं आप सरल अज्ञानी जन।।(७६७)
है यह सर्वथा असत्य कथन। कहीं माँ ज्वाला यह वचन।।
अतः करो त्याग तुम पशु हनन। धार हृदय माँ करो पूजन।।(७६८)
हो प्रसन्न करें पूर्ण मन्मन्। कहूँ तुम्हें मैं यह सत्य वचन।।
समझो बलि पशु पाप महत। कहे यह श्रुति ग्रन्थ धर्मत।।(७६९)

भावार्थ: 'पुरोहित कहते हैं कि जब वरदान की इच्छा वाले प्राणी पशु की बलि देते हैं, तब माँ प्रसन्न होती हैं।' तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'आप सरल और अज्ञानी प्राणी हैं। यह सर्वथा असत्य कथन है। माँ ज्वाला ने स्वयं यह कहा है। अतः तुम पशु बलि का त्याग करो और माँ को हृदय में धारण कर उनका पूजन करो। वह प्रसन्न होकर तुम्हें इच्छित वर देंगी, यह मैं सत्य वचन कहता हूँ। पशु बलि घोर पाप है, ऐसा धर्म ग्रन्थ श्रुति कहती है।'

सुन वचन सत्य संत सब भूजन। समझे है अघ घोर पशु हनन।।
लिए व्रत न करें यह कुकृत्य। करें अर्पण माँ श्रद्धा दिव्य।।(७७०)
आया उस काल एक जन सधन। था निःसंतान अभग वह सज्जन।।
करे विनती पड़ वह संत चरन। करो स्वीकार महन मेरा धन।।(७७१)
गए धवलगिरि संग उसके महन। दिया उसे योग विद्या बोधन।।
करो जन सेवा दिया प्रवचन। हो कृतज्ञ लौटा वह स्व-सदन।।(७७२)
हो रही थी एक सभा योगिन। त्रिशूल गंगा स्थल पावन।।
भेजे आयोजक संत निमंत्रन। गए गोरखनाथ संग शिष्यन।।(७७३)
पाए संत विचार भागी भिन्न। अतः लौटे धवलगिरि पावन।।
कर माँ ज्वाला हिय नमन। हेतु योग किए ग्रहण भोजन।।(७७४)

भावार्थ: संत के सत्य वचन सुनकर सभी प्राणी समझ गए कि पशु बलि एक घोर पाप है। उन्होंने व्रत लिया की ये कुकृत्य वह नहीं करेंगे और माँ को शुद्ध श्रद्धा अर्पण करेंगे। उस समय एक सज्जन धनी व्यक्ति आया जो दुर्भाग्य से निःसंतान था। संत के चरण पकड़ वह विनती करने लगी कि हे महात्मा, मेरा धन स्वीकार करें। तब महात्मा उसके साथ धवलगिरि गए, उसे योग विद्या का ज्ञान दिया और जन सेवा करने का निर्देश दिया। कृतज्ञ होकर तब वह अपने घर लौट गया। पवित्र स्थल त्रिशूल गंगा में एक योगियों की सभा हो रही थी। आयोजकों ने संत (गोरखनाथ) को निमंत्रण भेजा। शिष्यों के साथ गोरखनाथ वहां गए। उन्होंने योगियों के विचार अपने से भिन्न पाए, अतः वह पवित्र धवलगिरि वापस आ गए। माँ को हृदय में नमन कर योग विद्या से (माँ के द्वारा पकाया) भोजन ग्रहण किया।

करते हुए तब तीर्थ विचरण । आए उस काल कुछ योगिन ।।
थे वह नेपाल राज्य नागर । अनुयायी मछिन्द्रनाथ हितकर ।। (७७५)
लौटे तीर्थ नीलगिरि पावन । आए मिलने गोरखनाथ महन ।।
कर प्रणाम कहे वह संत । हैं महेन्द्रदेव नेपालपति ।। (७७६)
करे वह बुद्ध धर्म अंगीकार । करें विवश हम करें स्वीकार ।।
बुद्ध प्रथा समान भूपति । दे रहे कष्ट सनातन जन अति ।। (७७७)
कृपया चलो नेपाल हे महत । होंगे कृतज्ञ सनातनी मत ।।
गए तब संत बागमती तट । स्थल ललितपुर नगर निकट ।। (७७८)

भावार्थ: तीर्थ यात्रा करते हुए उस समय कुछ योगी आए जो नेपाल राज्य के वासी और हितकर मछिन्द्रनाथ के शिष्य थे। वह पवित्र नीलगिरि तीर्थ से लौट रहे थे। वह महात्मा गोरखनाथ से मिलने आए। संत (गोरखनाथ) को प्रणाम कर वह बोले, 'महेन्द्रदेव नेपाल के राजा हैं। उन्होंने बुद्ध धर्म को अंगीकार किया है। वह हम को विवश कर रहे हैं कि हम नृप के समान बुद्ध धर्म अपनाएं। वह सनातनियो को अत्यंत कष्ट दे रहे हैं। हे महात्मा, आप हमारे साथ नेपाल चलो। हम सनातनी आपके कृतज्ञ होंगे।' तब संत (गोरखनाथ) ललितपुर नगर स्थल के समीप बागमती (नदी) के तट पर गए।

कुछ अन्य महत्वपूर्ण घटनाएं

किए आरम्भ योगी वहां मनन । बोले तब नेपाली योगिन ।।
क्या नहीं जाएं नेपाल संत । बोले तब गोरखनाथ महंत ।। (७७९)
नहीं नितांत जाना उस नगर । करूँ उचित जो हो हितकर ।।
नहीं होगी वर्षा इस भुवन । आए अकाल से बुद्धि राजन ।। (७८०)

भावार्थ: वहां महात्मा ने साधना प्रारम्भ की। नेपाल वासी योगी बोले, 'हे संत, क्या आप नेपाल नहीं जाएंगे?' तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'मेरा उस नगर (देश) जाना आवश्यक नहीं है। मैं वही करूँगा जो उचित होगा। इस भूमि पर वर्षा नहीं होगी। अकाल के कारण राजा को बुद्धि आएगी।'

चले गए तब सब नेपाली संत । कहे नगर सहचर आए महंत ।।
देंगे उत्तर नेपाल राजन । नहीं दे कष्ट संत सनातन ।। (७८१)
नहीं हुई वर्षा उस संवत्सर । था अकाल नेपाल देश भर ।।
समझे संत हेतु गोरखनाथ । हुए दुःखित अति नेपालनाथ ।। (७८२)
बुलाए राज ज्योतिषी राजन । पूछा क्या है अकाल कारन ।।
कहे पंडित है कोई साधक । करता तप हेतु अनावृष्टिक ।। (७८३)

भावार्थ: तब सब नेपाली संत चले गए। उन्होंने मित्र और सम्बन्धियों को महात्मा के बारे में बतलाया। वह राजा को उत्तर देंगे ताकि वह सनातन संतों को कष्ट न दे। उस वर्ष वर्षा नहीं हुई। नेपाल पूर्ण देश में अकाल पड़ा। संत समझ गए कि यह गोरखनाथ के कारण हुआ है। नेपाल नरेश अत्यंत दुःखी हुआ। नृप ने राज ज्योतिषियों को बुलाकर अकाल का कारण पूछा। पंडितों ने कहा कि कोई साधक अनावृष्टि के लिए तप कर रहा है।

भेजे नृप चहुँ ओर गुप्तचर।करें पता है कौन योगीवर।।
लौटे गुप्तचर लेकर सन्देश।कर रहा तप एक साधक नरेश।।(७८४)
तट बागमती ललितपुर अन्तिक।नाम गोरखनाथ उस साधक।।
है वह शिष्य मछिन्द्रनाथ।है अकाल हेतु तप भूनाथ।।(७८५)
सोचें महेन्द्रदेव तप तर्क।क्यों कर रहा नष्ट राष्ट्रक।।
बुलाए ज्योतिषी मंत्रीगण।दो विमर्श करूँ क्या बुद्धिवन।।(७८६)

भावार्थ: सम्राट ने चारों ओर गुप्तचर भेजे कि पता करें यह योगी कौन है? गुप्तचर सन्देश लेकर लौटे कि हे सम्राट, एक साधक ललितपुर के निकट बागमती (नदी) के तट पर तप कर रहा है। उस साधक का नाम गोरखनाथ है। वह मछिन्द्रनाथ का शिष्य है। हे नृप, यह अकाल उसके तप के कारण है। महेन्द्रदेव (सम्राट) ने इसका उचित कारण जानना चाहा कि यह देश को नष्ट क्यों कर रहा है? उन्होंने विमर्श के लिए बुद्धिमान ज्योतिषी एवं मंत्रियों को बुलाया कि वह क्या करें?

समझे लक्ष्य साधक बुद्धिवन।है हेतु मछिन्द्रनाथ शिष्यन।।
हेतु आज्ञा नृप बदलें मत।अपनाएं बुद्ध त्याग शैव्यत।।(७८७)
उचित कहे तब नेपालनाथ।करो बंद दुराचार पंथ नाथ।।
करो संत गोरखनाथ प्रसन्न।आए वर्षा हो दूर व्यसन।।(७८८)
कहे एक मंत्री विचार हे नाथ।बनाएं मूर्ति मछिन्द्रनाथ।।
करें स्थापित ऊपर वाहन।चलें तब हम सब संग राजन।।(७८९)
तट बागमती निकट साधक।होंगे प्रसन्न देख स्व-शिक्षक।।
बोले नृप है उचित विचार।करो झट प्रबंध सलाहकार।।(७९०)

भावार्थ: बुद्धिमान (मंत्रीगण) साधक का लक्ष्य समझ गए। यह मछिन्द्रनाथ के शिष्यों के कारण हुआ है। नृप की आज्ञा कि शैव्य मत को त्याग कर बुद्ध मत अपनाएं, के कारण है। नेपाल नरेश ने कहा, 'उचित है। नाथ पंथियों पर दुराचार बंद करो। संत गोरखनाथ को प्रसन्न करो जिससे वर्षा हो और यह आपदा दूर हो।' तब एक मंत्री बोले, 'हे सम्राट, एक विचार है। हम मछिन्द्रनाथ की मूर्ति बनाएं और उसे एक वाहन पर स्थापित करें। हे नृप, हम सब साधक के निकट बागमती तट पर चलें। अपने गुरु को देख वह प्रसन्न होंगे।' नृप बोले, 'यह उचित विचार है। हे विमर्श दाता, तुरंत इसका प्रबंध करो।

बनाई एक मूर्ति सुन्दर महत । योगी मछिन्द्रनाथ महंत ।।
निकाली तब यात्रा शोभन । पहुंचे निकट नद तट राजन ।। (७९१)
देख भव्य मूर्ति गुरुवर । हुए अत्यंत प्रसन्न संतवर ।।
करबद्ध स्था किए गोरखनाथ । नमन गुरुदेव मछिन्द्रनाथ ।। (७९२)
जाने योग बल तुरंत महन । हुआ नृप हृदय परिवर्तन ।।
बोले पड़ नृप योगी चरन । करो क्षमा मम दुष्कर्म महन ।। (७९३)
किए क्षमा नृप गोरखनाथ । दिए वह आशीर्वाद भूनाथ ।।
छाए घुमड़ घुमड़ तब बादल । होने लगी वर्षा सब स्थल ।। (७९४)

भावार्थ: तब योगी महात्मा मछिन्द्रनाथ की एक महान सुन्दर मूर्ति बनाई गई। शोभा यात्रा निकालते हुए सम्राट नदी तक के निकट पहुंचे। गुरुदेव की भव्य मूर्ति देखकर संत (गोरखनाथ) अति प्रसन्न हुए। खड़े हो कर करबद्ध गोरखनाथ ने गुरुदेव मछिन्द्रनाथ (की मूर्ति) को नमन किया। योग बल से तुरंत महात्मा (गोरखनाथ) ने जान लिया कि सम्राट का हृदय परिवर्तन हो गया है। सम्राट तब योगी के चरण पड़ बोले, 'हे महात्मा, मेरे दुष्कर्मों को क्षमा करें।' गोरखनाथ ने सम्राट को क्षमा कर दिया और उन्हें आशीर्वाद दिए। तभी घुमड़ घुमड़ कर बादल छाने लगे और सभी स्थानों पर वर्षा होने लगी।

गए तब गोरखनाथ हेतु मनन । गिरि स्थित एकांत कुछ अध्वन् ।।
दें वहां शिष्य योग बोधन । बीते चतुर्दश वर्ष निवासन ।। (७९५)
आए नेपाल से पुनः योगिन । करें पुकार हेतु मदद कृपन ।।
पुनः तथैव नेपाल नरेश । कर रहा अत्याचार संतेश ।। (७९६)
करो बुद्ध पंथ अनुशीलन । छोड़ तुरंत धर्म सनातन ।।
हुए क्रोधित अति संत महत । बोले समय हटें अब भूपति ।। (७९७)

भावार्थ: तब गोरखनाथ साधना के लिए एक एकांत पर्वत पर चले गए जो थोड़ा दूर था। वह वहां शिष्यों को योग ज्ञान देने लगे। निवास करते (इस प्रकार) चौदह वर्ष बीत गए। तब नेपाल से पुनः मदद की पुकार लगाते असहाय योगी आए, 'हे संतों में श्रेष्ठ (गोरखनाथ), नेपाल नरेश उसी प्रकार पुनः अत्याचार कर रहा है। उसने आज्ञा दी है कि सनातन धर्म छोड़ बुद्ध पंथ का पालन करो।' यह सुन महात्मा संत

(गोरखनाथ) अत्यंत क्रोधित हुए और बोले, 'समय आ गया है कि नरेश को हटाया जाए।'

नहीं अधिकार किसी राजन। करे बाध्य स्व-पंथ अनुसरन ।।
है यह अधर्म प्रजापीडन। नहीं योग्य हेतु राज शासन ।।(७९८)
है नितांत देना दंड कर्म। करूंगा अब जो उचित कर्म ।।
लौटो आश्रम तुम संतवर। करूँ दूर कष्ट हेतु नृपवर ।।(७९९)
आया तभी एक युवक स्थल। नाम बसंत बोध अस्त्र बल ।।
बोले तब गोरखनाथ महत। होगा बसंत नेपाल भूपति ।।(८००)

भावार्थ: किसी सम्राट को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने धर्म का पालन करने को बाध्य करे। यह अधर्म और अत्याचार है। ऐसा राजा शासन के योग्य नहीं। इसके कर्मों का दंड देना आवश्यक है। मैं इसके लिए उचित कार्य करूंगा। तुम सभी संत आश्रम लौटो। इस सम्राट के कारण जो कष्ट है, मैं दूर करूंगा।' तभी एक युवक स्थल पर आया जिसका नाम बसंत था। उसे अस्त्र बल का ज्ञान था। तब महात्मा गोरखनाथ बोले, 'बसंत नेपाल का राजा होगा।'

हो अचंभित बोले तब बसंत। हो कैसे यह संभव हे महंत ।।
है बलशाली नेपाल राजन। कैसे करें भ्रष्ट सिंहासन ।।(८०१)
बोले तब गोरखनाथ संतवर। डालो यह भस्म अन्तः सरोवर ।।
कर प्रयोग तब पङ्क जलाशय। करो निर्मित रूप मनुष्य ।।(८०२)
बनाओ तुम एक लक्ष मूर्ति। डालूं प्राण मैं मृन्मूर्ति ।।
होंगे यह तुम्हारे सैनिक। करो रण तब विरुद्ध शासक ।।(८०३)

भावार्थ: तब बसंत अचंभित होकर बोले, 'हे महात्मा, यह कैसे संभव है? नेपाल नरेश बलशाली है। उसे सिंहासन से अपदस्थ कैसे करेंगे?' तब संत गोरखनाथ बोले, 'यह भस्म तुम सरोवर में डालो। सरोवर की मिट्टी से मनुष्यों की आकृति निर्मित करो। तुम एक लाख मूर्तियां बनाओ। मैं इन मिट्टी की मूर्तियों में प्राण डालूंगा। यह तुम्हारे सैनिक होंगे। इनसे (इन सैनिकों से) राजा के विरुद्ध रण करो।

किए बसंत तब आज्ञा पालन । किए वह एक लक्ष संनिवेशन ।।
कर प्रयोग मन्त्र संजीवन । डाले प्राण सर्व मूर्ति महन ।।(८०४)
हेतु उक्षति भस्म चंहु ओर । हुए सैनिक सज्ज अस्त्र घोर ।।
किए प्रकट तब गज और अश्व । हेतु सेना गोरखनाथ दिव्य ।।(८०५)

भावार्थ: बसंत ने तब आज्ञा का पालन किया। उन्होंने एक लाख मिट्टी की मूर्तियां बनाईं। तब महात्मा ने संजीवन मन्त्र के प्रयोग से उन सब मूर्तियों में प्राण डाले। चारों ओर भस्म को बिखराया जिससे सैनिक घातक अस्त्रों से सुसज्जित हो गए। फिर दिव्य गोरखनाथ ने सेना के लिए हाथी और घोड़े प्रकट किए।

दिए तब आदेश गोरखनाथ । करो आक्रमण हे सेनानाथ ।।
रहे बसंत यह सदैव स्मरन । करें भट निरंतर नाम जपन ।।(८०६)
गुरु मछिन्द्रनाथ पावन । होगी विजय बसंत असंशयन ।।
है मेरा यह तुम्हें स्वस्त्ययन । किए तब बसंत सैन्य आक्रमन ।।(८०७)

भावार्थ: तब गोरखनाथ ने आदेश दिया, 'हे सेनापति, आक्रमण करो। बसंत, इसका सदैव स्मरण रहे कि सैनिक निरंतर गुरु मछिन्द्रनाथ का पवित्र नाम स्मरण करते रहें। तुम्हारी निश्चय विजय होगी, यह मेरा आशीर्वाद है।' तब बसंत ने सेना से आक्रमण किया।

हुआ भयंकर युद्ध मध्य द्वि । नेपाल नरेश और बसंत सैन्य ।।
हुए पराजित नेपाल राजन । किए सैनिक नृप पलायन ।।(८०८)
गए नृप महेन्द्रदेव शरण । पकड़े संत गोरखनाथ चरण ।।
कहे किया मैंने पाप महत । करो क्षमा हे संत सुहृत् ।।(८०९)
दो वापस मुझे मेरा राज्य । करूँ पालन हर आज्ञा दैव्य ।।
बोले दयालु गोरखनाथ । हो तुम निःसंतान भूनाथ ।।(८१०)
यदि करो स्वीकार राजन । सुत दत्तक बसंत युवराजन ।।
बोले तब महेन्द्रदेव राजन । करूँ मैं आपके वचन पालन ।।(८११)
बने तब युवक बसंत युवराज । सेनापति और उपमहाराज ।।
किए स्थापित वह धर्म शासन । हुए शिष्य मछिन्द्रनाथ प्रसन्न ।।(८१२)

भावार्थ: उन दोनों, नेपाल नरेश और बसंत की सेना के मध्य भयंकर युद्ध हुआ। नेपाल नरेश पराजित हुए। उनके सैनिक पलायन कर गए। तब नृप महेन्द्रदेव गोरखनाथ के चरण पकड़ उनकी शरण में गए और बोले, 'हे दयालु संत, मैंने घोर पाप किया है, मुझे क्षमा करो। मेरा राज्य मुझे वापस दे दो। हे दैव्य, मैं आपकी हर आज्ञा का पालन करूंगा।' तब दयालु गोरखनाथ बोले, 'हे नृप, तुम निःसंतान हो। तुम बसंत को दत्तक पुत्र और युवराज स्वीकार करो।' सम्राट महेन्द्रदेव बोले, 'मैं आपके हर वचन का पालन करूंगा।' तब युवक बसंत युवराज, सेनापति और उपसम्राट बने। उन्होंने धर्म शासन स्थापित किया। मछिन्द्रनाथ के शिष्य अति प्रसन्न हुए।

जब त्यागे तन महेन्द्रदेव। बने तब सम्राट बसंतदेव।।
गए राज्याभिषेक अनन्तर। मिलने गोरखनाथ संतवर।।(८१३)
पड़ चरण हुए नतमस्तक राजन। पाए वह अनगिनत स्वस्त्ययन।।
बोले गोरखनाथ हे राजन। करो सदा मछिन्द्रनाथ मनन।। (८१४)
होए जब तक उनका पूजन। रहेगा स्थावर यह शासन।।
करे सेना राष्ट्र सुरक्षा। की उत्पन्न हेतु मन्त्र दीक्षा।। (८१५)
बोले धन्य हे गुरुदेव महन। लौटे नृप पा आर्शीवचन।।
दिए नाम गोरखा उस सेना। अनु गोरखनाथ महामना।।(८१६)
गाते महात्म्य प्रत्येक अहन्। सम्राट और सब प्रजाजन।।
करते हुए सम्मान पंथ नाथ। गोरखनाथ व् मछिन्द्रनाथ।।(८१७)
मुद्रा पर किए नृप तक्षण। मूर्ति गोरखनाथ महामण।।
किए शासन एतद्वत् नृप बसंत। कई दशक हेतु कृपा महंत।।(८१८)
रहे कुछ समय उस गिरि संत। फिर किए गमन तस्मात् महंत।।
हेतु भ्रमण विश्व अन्य स्थान। गए नगर मक्का अरबिस्तान।। (८१९)

भावार्थ: जब (सम्राट) महेन्द्रदेव ने तन त्यागा (मृत्यु कोई प्राप्त हुए), तब बसंतदेव शासक बने। राज्याभिषेक के पश्चात वह संत गोरखनाथ से मिलने गए। उनके चरण पड़ नृप नतमस्तक हुए। उन्होंने (संत गोरखनाथ से) अनेक आशीर्वाद पाए। तब गोरखनाथ बोले, 'हे सम्राट, सदैव मछिन्द्रनाथ का मनन करते रहो। जब तक उनका पूजन होता रहेगा, राज्य में स्थिरता रहेगी। जिस सेना को मन्त्र बल से उत्पन्न किया है, वह राष्ट्र की सुरक्षा करेगी। 'हे गुरुदेव आप धन्य हैं', ऐसा कहते और आशीर्वाद पाकर सम्राट (अपनी राजधानी) लौट गए। महात्मा गोरखनाथ के नाम पर उन्होंने

सेना का नाम गोरखा रखा। सम्राट और सभी प्रजा प्रत्येक दिन नाथ पंथ का सम्मान करते हुए गोरखनाथ और मछिन्द्रनाथ की महिमा का गायन करते। सम्राट ने महात्मा गोरखनाथ की मूर्ति को मुद्रा में अंकित कराया। इस प्रकार कई दशक तक महात्मा की कृपा से बसंतदेव ने शासन किया। कुछ समय तक संत उस पर्वत पर रहे फिर महात्मा ने विश्व के अन्य स्थानों पर भ्रमण हेतु गमन किया। वह अरब देश के मक्का नगर पहुंचे।

था लक्ष्य दें गुह्य योग बोधन। थे विलक्षण उनके प्रवचन ।।
हुए अति प्रभावित प्रजावर। समझे साधक हैं दूत ईश्वर ।।(८२०)
सुनते ध्यानस्थ उनके वचन। थे विशेष बुभुत्सु चार जन ।।
दिए योग विद्या उन्हें महत। हुए अदृश्य एक दिन सकृत् ।।(८२१)
किया तब एक गिरि अधिवास। था यह दूर भयावह आवास ।।
लगे ढूंढने शिष्य गुरुवर। देखे आते तब उन्हें संतवर ।।(८२२)
हुए प्रकट समक्ष वह प्रछन्न। पूछे कहाँ जाते हो भूजन ।।
ढूंढने गुरु कहे शिष्यन। करें कहीं वह इस स्थल वसन ।।(८२३)
बोले वेष पथिक वह साधक। नहीं जाओ तुम उस स्थानक ।।
है भयावह पूर्ण पशु वन। यदि जाओ तो निश्चित मरन ।।(८२४)
बोले शिष्य है प्रकृति नियम। मरना एक दिन सभी भूजन ।।
नहीं भय हमें मरण पथिक। है लक्ष्य ढूंढें गुरु साधक ।।(८२५)

भावार्थ: (गोरखनाथ का) लक्ष्य था कि गुह्य योग विद्या प्रदान करें। उनके कथन अति विचित्र थे। सभी नागरिक अत्यंत प्रभावित हुए और उन्हें ईश्वर का दूत समझने लगे। उनके कथन को, विशेषकर चार जिज्ञासु, ध्यान पूर्वक सुनते। महात्मा ने उन्हें योग ज्ञान दिया। फिर एक दिन अचानक अदृश्य हो गए। उन्होंने दूर एक भयावह पर्वत पर अपना निवास बनाया। उनके यह (चार) शिष्य उन्हें ढूंढने लगे। जब संत ने उन्हें आते देखा तो छद्म वेष में उनसे पूछा कि वह कहाँ जा रहे हैं? शिष्य कहने लगे कि हम गुरु को ढूंढ रहे हैं जो यहीं इस स्थान पर वास कर रहे हैं। यात्री के वेष में तब साधक (गोरखनाथ) बोले, 'तुम उस स्थान पर नहीं जाओ। वह भयंकर वन पशुओं से परिपूर्ण है। यदि वहां जाओगे तो मरण निश्चित है।' तब शिष्य बोले, 'यह तो प्रकृति का नियम है कि एक दिन सभी को मरना है। हे पथिक, हमें मरने का भय नहीं है। हमारा लक्ष्य तो साधक गुरु को ढूंढना है।'

करते वसन हमारे गुरुवर । मध्य कहीं गिरि हे पथिकवर ।।
ढूंढें उन्हें अवश्य हम शिष्य । हेतु पाएं आशीर्वाद दिव्य ।।(८२६)
हुए गोरखनाथ अति प्रसन्न । देख श्रद्धा व् अनुगम वचन ।।
हुए प्रकट तब स्व-रूप महत । ले गए संग निवास गिरि स्वत ।।(८२७)
दिए उन्हें तंत्र मन्त्र बोधन । बने वह योगी अति बुद्धिवन ।।
हो प्रसन्न दिए आशीर्वचन । पाओ बाद मरण निर्मोचन ।।(८२८)

भावार्थ: 'हे पथिक, इस पर्वत के मध्य में कहीं हमारे गुरुदेव निवास करते हैं। दिव्य आशीर्वाद पाने के लिए हम शिष्य उनको अवश्य ढूंढेंगे।' उनकी श्रद्धा और आज्ञाकारिता देख गोरखनाथ अत्यंत प्रसन्न हुए। वह महात्मा अपने स्वरुप में प्रकट हुए और उन्हें (शिष्यों को) पर्वत पर अपने निवास पर ले गए। उन्हें तंत्र-मन्त्र का ज्ञान दिया जिससे वह योगी बुद्धिमान हो गए। प्रसन्न हो उन्हें आशीर्वाद दिया की मरण के पश्चात उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होगी।

कर वास वहां कुछ वर्ष महन । कर पूर्ण लक्ष्य हेतु भ्रमन ।।
लौटे गोरखनाथ तब भारत । किया वास गिरिनार पर्वत ।।(८२९)
रहे संग दत्रात्रेय भगवन । अनुरोध पर तब नाथ व्योमन ।।
करे पूर्ण समयोग संस्कार । हेतु हो कल्याण सर्व संसार ।।(८३०)
किए तब दत्तात्रेय से याचन । हो अदृष्ट करें हरि मनन ।।
दिए भगवन उन्हें तब अनुमत । कर रहे अतः तप हो अदृश्यत ।। ८३१)
जाए जो भी गिरिनार पर्वत । करे दर्श गोरखनाथ देवायत ।।
पाए रिद्धि सिद्धि वह भूजन । पश्चात मरण पाए निर्मोचन ।।(८३२)

भावार्थ: वहां कुछ वर्ष निवास कर एवं अपनी यात्रा के लक्ष्य को पूर्ण कर गोरखनाथ भारत लौट आए। वह गिरिनार पर्वत पर दत्तात्रेय भगवान् के साथ रहने लगे। स्वर्ग अधिपति (इंद्रदेव) के अनुरोध पर सर्व जन कल्याण के लिए उन्होंने समयोग यज्ञ पूर्ण किया। तब उन्होंने दत्तात्रेय भगवान से प्रार्थना की कि वह उन्हें अदृश्य हो भगवान् की साधना करने की अनुमति दें। भगवान् (दत्तात्रेय) की अनुमति पाकर वह अदृश्य हो कर वहां तप कर रहे हैं। जो भी गिरिनार पर्वत पर गोरखनाथ मंदिर के दर्शन करने जाता है, उस प्राणी को रिद्धि सिद्धि प्राप्त होती है और मरण पश्चात मोक्ष मिलता है।

श्री राम कथा संस्थान उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करता है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करता रहता है।

श्री राम कथा संस्थान
३५, मायना रिट्रीट, हिलरीज़, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
Web https://shriramkatha.org
Email: srkperth@outlook.com

कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा

एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधी विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

श्री राम कथा संस्थान पर्थ
३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

Web https://shriramkatha.org
Email: srkperth@outlook.com